

महतारी ममता क॰ मूर्ति



भोजपुरी काव्य



प्राध्यापक : अचल



अखिल भारतीय

अन्तर जनपदीय परिषद

उजियार (कोरंदाबीह), बलिया (उ० प्र०)

- समरपन -



ममता क मूरति अपना माई का सुधिय सुधियन का ए काव्य के
हाले में माया-मुक्त हो जाएवाली अपना परम प्रिय जीवन-संगिनी

श्रीमती रामा देवी के

सरेखि-सउँपि के अपना शोक-तवाइल मनके तीहा देतानी ।

का लेइ तुहें मनाई ? बोलऽ, टूट गइल दिल-दरपन,

महतारी ममता कऽमूरति भावे तुहें सरपन ।

‘मचल’



कवि : प्राध्यापक अचल

सर्वाधिकार : कवि

**प्रकाशक : अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद्
उजियार, बलिया (उत्तर प्रदेश)**

संस्करण : पहिला फरवरी १९६५

मूल्य : एकयावन रुपया

**वितरक—अचल साहित्य-सदन
हरिहरपुर, तिवारीपुर, गाजीपुर (उ० प्र०)**

**मुद्रक : विद्या प्रिंटिंग वर्क्स
महानगर पालिका कटरा
भदौनी, वाराणसी
© : ११२६६३**



भूमिका

जब कोई भाषा और उसका साहित्य विकास के प्रारंभिक चरण पाय कर लेता है तब उसमें विधा-वैविध्य और भाव-समृद्धि के लक्षण दिखलाई पड़ने लगते हैं। भोजपुरी भाषा और साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण प्रबन्ध काव्य-लेखन के अनेक प्रवर्तनों का दिखलाई पड़ना उसकी सर्जना का पीढ़ना की ओर बढ़ना है।

भोजपुरी में प्रबन्ध-लेखन की परम्परा धीरे-धीरे लगभग तीन दशक पुरानी हो चली है। श्री हरेन्द्र देव नारायण का 'कुंवर सिंह' १९५७ में प्रकाशित हुआ। इसे भोजपुरी का प्रथम महाकाव्य कहा गया है। इसमें तत्सम शब्दों का आधिक्य राम चरित मानस की अवधी में तुलसी द्वारा प्रयुक्त तत्समता के आदर्श पर अपनाया गया है, किन्तु बाद की प्रबन्ध कृतियों में भोजपुरी भाषा की सम्पूर्ण संभावनाओं को उजागर करने का प्रयत्न दिखलाई पड़ता है। ठीक एक दशक बाद १९६६ में 'कुंवर सिंह' नामक ही दूसरा महाकाव्य काशी के पं० चन्द्रशेखर मिश्र का प्रकाशित हुआ। मिश्र जी ने काशिका भोजपुरी के भाषिक सौन्दर्य को ब्रजभाषा और अवधी जैसी सिद्ध काव्य-भाषाओं की समकक्षता दे डाली है। यह इस कवि का भोजपुरी भाषा की सिद्धि और उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा का प्रमाण है। इसी कवि ने १९८२ में 'द्रौपदी' नामक प्रबन्ध काव्य प्रकाशित किया। यहाँ भोजपुरी की काव्य भाषा कवि-प्रतिभा का सबल पाकर ऊँचित होती है और परिस्थितियों के अनुसार प्रसाद, माधुर्य और ओज गुणों से समन्वित होकर प्रवाहित होती है। भोजपुरी के तीसरे समर्थ प्रबन्ध कवि हैं श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी। इन्होंने पर्याप्त शोध के उपरान्त विश्वामित्र पर 'कौशिकायन' (१९७३) नामक प्रबन्ध रचना की है जिसका एक मौलिक उद्देश है मिथिला की माटी से अवध की 'अग्नि' का सामरस्य अर्थात् भारतीय संस्कृति के दो अत्यन्त महिमावान् सांस्कृतिक केन्द्रों अयोध्या और जनकपुर को जोड़कर भारतीय संस्कृति का एक सबल आधार श्रुत करना। विद्यार्थी जी ने इस प्रबन्ध काव्य में 'क' से लेकर 'ह' तक के वर्णानुक्रम के आधार पर तैंतीस अध्यायों का

(क)

विधान किया है जो प्राचीन हिन्दी कविता की एक परम्परागत रुढ़ि रही है। आधुनिक युग में इस अनाहत काव्य-रूप का पुनः प्रवेश इसे प्रायोगिक नवीनता तो देता है, किन्तु इसमें सार्थकता का अभाव भी खटकता है। पृथ्वीराज रासो से कामायनी तक सर्गों के नामकरण की निरंतरता इस बात की द्योतक है कि प्रत्येक सर्ग का सार्थक नामकरण उस सर्ग के समझने में पाठक की सहायता करता हो है, वस्तु-संविधान को भी अर्थ-दीप्ति देता है। विद्यार्थी जी ने १९८४ में 'सेवकायन' नाम से द्विपत्र प्रबन्ध महाकाव्य के रूप में लिखा। यह २८ सर्गों का महाकाव्य राम से जुड़े हनुमान के सम्पूर्ण उदात्त कथावृत्त के मार्मिक स्थलों को गहनता के साथ अभिव्यक्त करता है। १९८० में प्रकाशित दडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती की रचना 'बज्रघायन' ४० हजार पक्तियों को समाहित करने वाले ३१ सर्गों का महाकाव्य है। इसमें गौतमबुद्ध के जीवन का चित्रांकन तो हुआ ही है तत्कालीन इतिहास, धर्म, दर्शन दार्शनिक विवादों, विदेशों में बौद्धधर्म-प्रचार, विश्व-यात्रियों के आवागमन का चित्रण इस महाकाव्य के फौलाद को ध्यानाकर्षक और महिमा-मण्डित कर देता है।

इस पीठिका पर जब हम प्राध्यापक 'अचल' के प्रबन्ध काव्य 'महत्तारी ममता कऽ मूरति' को लेते हैं तो भोजपुरी प्रबन्ध काव्यों की लघु परम्परा में कवि प्रकार की नवताएँ जोड़ता है। इसकी पहली नवता है मुक्तक-वस्तु लेकर प्रबन्ध-लेखन का सफल प्रयत्न। इस प्रबन्ध काव्य की विषय-वस्तु कोई कथा न होकर मातृ-वियोग के बाद कवि की मातृ-भक्ति का संस्मरणात्मक भावोद्वेल आलेखन है। मुक्तक काव्य की विषय-वस्तु पर प्रबन्ध लिखने की परम्परा भी प्राचीन है। कालिदास का मेघदूत, अपभ्रंश कवि अब्दुल रहमान का सन्देश रासक, राजस्थानी कवि कुशललाभ का ढोला मारूरा दूहा, सूर से लेकर रत्नाकर के उद्धव शतक और हरिऔध के प्रिय प्रवास तक का समूचा कृष्ण-काव्य मुक्तक की आत्मा अर्थात् एक विशिष्ट भाव-केन्द्र लेकर वियोगजन्य संस्मरणों की माला गूँथ कर उसे प्रबन्धत्व प्रदान कर देने की पुरानी परम्परा है। इसे मैंने एकाधिक स्थानों पर एकार्थ प्रबन्ध मुक्तक कहा है।*

* हिन्दी मुक्तक काव्य की पृष्ठभूमि, (पृष्ठ संख्या ४०, १९८१ ई०)
लेखक—डॉक्टर जितेन्द्रनाथ पाठक।

इस ग्रन्थ की दूसरी नवता है—आत्मकथात्मक काव्य के सांकेतिक लेखन का प्रयत्न। भक्तिकालीन साहित्य में यह प्रयत्न कई काव्यों में दिखलाई पड़ता है। रीतिकाल के स्वच्छन्द कवियों में से करीब-करीब सभी ने आत्मकथा अथवा अपने कवि-व्यक्तित्व की छोटकरी अनेक रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। भारतेन्दु-युग में भारतेन्दु तथा उनके युग के अन्य कवियों ने भी आत्मकथात्मक अंश कविताओं के माध्यम से बड़े मासिक ढंग से पेश किए हैं। छायावाद-युग में प्रेमचन्द ने हंस का एक आत्मकथा-विशेषांक ही निकाला। इसमें साहित्यिक रों की आत्मकथाएँ प्रकाशित हुईं। इसके लिये जब प्रेमचन्द ने प्रसाद से कविता माँगी तब उन्होंने 'मधुर गुन गुना कह कह जाना मौन कहानी अपनी' प्रथम पंक्ति वाली कविता में से निम्न पंक्तियाँ लिखीं :—

जीवन को उधेड़ कर देखोगे क्या मेरी कथा की ?

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?

क्या यह भच्छा न हों कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?

सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म कथा ।

अभी समय भी नहीं थकी सोई है मेरी मौन व्यथा ।

प्रसाद जी ने 'आँसू,' 'लहर' 'झरना' आदि में भी अनेक तरह से अपनी आत्म कथा रहस्यवादी आवरणों के भीतर बड़े ही सांकेतिक ढंग से कही सच कहा जाय तो आत्मविषयक कविता कवि की सांकेतिक आत्मकथा ही तो होती है। पत ने भी अपनी प्रेम-वियोग की—कविताओं में बहुत कुछ अपने जीवन सन्दर्भ ही रेखांकित किए हैं। निराला इसमें सर्वाधिक मुखर हैं क्योंकि उनका जीवन जितने संघर्षों के बीच से गुजरा है उतना किसी छायावादी कवि का नहीं। उनकी अभिव्यक्ति अनेक बार ठोस वस्तु जगत् की पीड़ा और क्लेश को बिना रहस्य वेष्टित किए निर्व्याज रूप से कह जाती है। सरोज स्मृति, वनवेला तथा कुछ अन्य कविताओं में निराला व्यंग्योक्तियों के माध्यम से सीधे-सीधे और राम की शक्ति-पूजा जैसी कविताओं में परोक्षतः आत्मकथात्मक संदर्भों को व्यक्त करते हैं। सरोज स्मृति की दहला देने वाली पीड़ा और क्षोभ को विस्तृत अभिव्यक्ति दे लेने के बाद निराला प्रसाद जी की ही तरह कहते हैं :—

दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही ।

(ग)

भोजपुरी में भी मुझे इस प्रकार का एक प्रयत्न मिलता है। भोजपुरी के समर्थ कवि अविनाश चन्द्र विद्यार्थी जी ने अपने 'कोशिकायन' नामक भोजपुरी प्रबन्ध काव्य के अन्त में दोहा-सोरठा-चोपाई छन्दों में 'आपन कथ' शीर्षक ले पूरी आत्मकथा लिख डाली है। यह 'आत्मकथ' नितान्त वर्णनात्मक बन गया है। इसमें कविता के लिए अवश्य संवेदनशीलता का अभाव है। 'आपन कथ' वस्तुतः कवि की काव्य-यात्रा की क्रम-बद्ध कथा है न कि लोक-यात्रा की। सम्बन्धों की आंतरिकता और पारस्परिक बात-प्रतिघात का चित्रण इसमें नहीं है। पूर्व की काव्य-परम्परा और समसामयिक रचना-संसार के कई दर्जन कवियों को श्रद्धापूर्वक स्मरण करना भी हमारी रागात्मक चेतना को एकदम स्पर्श नहीं करता। कवि की कतिपय पक्तियाँ :—

ठाढ़ होइ हम भूईं पर, ताकि ताकि आकास ।
चाहत बानी कुछ कहल, पाइ पाइ आभास ॥
* * *

हिन्दी भोजपुरी रहे, साधन बनल हमार ।
कविता गीत बनाइ के, परगट करीं बिचार ॥

'अचल' जी के पास इस तरह का कोई 'आपन कथ' नहीं है। वे अपनी माँ के देहावसान से अत्यन्त शोकवित्वल हैं। जब उस शोकावेग ले उबरते हैं तब माँ के स्मृति-कण्ठ में पहनाने के लिए उसके सस्मरणों की माला गूँथने लगते हैं। उस माला के भीतर जो सूत्र आद्योपान्त दमकता-झाँकता रहता है वह है 'महतारी ममता कऽ मूरति' की ममता और वात्सल्य का अमकदार सूत्र। मेरी जानकाई में मातृ-विनोग का इतना बड़ा काव्य हिन्दी-भोजपुरी में अब तक दूसरा नहीं लिखा गया।

आत्मकथात्मक कथिता की परम्परा के विवेचन से उसकी प्रकृति के दो रूप प्रकट होते हैं? एक सांकेतिक और नितान्त अन्तर्बृत्ति व्यञ्जक (सब्जेक्टिव) और दूसरा पूर्णतः व्यक्त, वर्णनात्मक और वस्तु व्यञ्जक (आब्जेक्टिव)। इन दोनों का प्रस्थान-बिन्दु एक ही है—गहन वेदना या कीड़ा का ज्वरवस्त आवेग जो इस प्रकार के काव्य-लेखन का प्रेरक बनता है। वस्तुतः कोरी आत्मकथा गद्य की एक बिधा तो बन सकती है (हे भी), कविता की बिधा नहीं बन सकती। 'अचल' जी का आत्म-

(४)

कथात्मक काव्य प्रगाढ़ राग-वन्ध से उद्धेलित है। यही कवि-पुत्र की गहन श्रद्धा और वियोग-व्यथा से ओत-प्रोत कवि के वात्सल्य-रस के भोवतुल्य के भीतर से फूटता अतम संस्मरणात्मक चित्रण कवित्व की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रबन्ध मुक्तक की तीसरी नवता है इसका शोकात्मक प्रबन्ध होना। अंग्रेजी में प्रभूत परिणाम में शोक-गीत (एलेजी) लिखे गए हैं। हिन्दी में शोकगीत लिखने की परम्परा लगभग नहीं के बराबर है। इसमें निराला जी का शोकगीत 'सरोज स्मृति' शोक-गीत के साथ-साथ एक जबर्दस्त आत्मकथात्मक जीवन लेख भी हैं। 'अचल' जी ने इस दृष्टि से शून्य पड़े भोजपुरी साहित्य में दो दो शोक गीतात्मक प्रबन्ध मुक्तकों का योगदान किया है। नौ सगं तो अपनी माँ पर और दसवां सगं अपनी प्रिया पर। यह ध्यातव्य है कि कवि ने प्रत्येक सगं को उसांसि की सजा दी है जो प्रत्येक सगं को गहरी वेदना के उच्छ्वास बना देता है।

इस प्रबन्ध की चौथी नवता है आत्मघटित की अभिव्यंजना। वात्सल्य-चित्रण की परम्परा के प्रबलतः शिरोमणि महाकवि सूरदास ने जिस वात्सल्य का चित्रण किया वह नन्दयशोदा का था अर्थात् पर-घटित था, किन्तु 'अचल' ने जिस वात्सल्य का चित्रण किया है वह उनका आत्म-घटित है। यह सही है कि सूर भक्त होने के कारण नन्द-यशोदा के बहाने अपनी ही वात्सल्य-भक्ति का कथन कर रहे थे। किन्तु 'अचल' जी आत्म-घटित का चित्रण करने के कारण मातृ-भक्ति का एक अत्यन्त समृद्ध भावकोष-साहित्य रसिकों को भेंट करते हैं।

'अचल' जी ने इस प्रकार मुक्तकोचित विषय-वस्तु को लेकर जिस प्रबन्ध भुक्तक काव्य का सृजन किया है उसकी बुनावट पर ध्यान देने पर पता लगता है कि 'महतारी ममता का मूरति' के दस सगों में कवि का कथ्य किस प्रकार प्रबन्ध का सावयविक विस्तार पाता है अर्थात् अश्रु की एक बूंद किस प्रकार आँसू की यमुना बन जाती है।

इस विस्तार को समझने के लिए दस अध्यायों की वस्तु का एक निदर्शन उपयोगी होगा। प्रत्येक सगं (उसांसि) का एक उपशीर्षक दिया गया है। यह उपशीर्षक ही वस्तुतः उस सगं की भाव-वस्तु को संकेतित करता है। 'पहिलि उसांसि' का उपशीर्षक 'जय शंकरा रेबती माई', 'दोसरि उसांसि'

का 'छने छने सुभिरौली माई हम तुहरा के' 'तोहरि उसाँसि' का 'मेह-सनलि माई कऽ मूरति', 'वउयी उमाँसि' का 'माई 'रहजी नेह-मसीहा,' 'पंचवीं उसाँसि' का 'माई चेत परेली, छठवीं उसाँसि का 'माई के ना कबहुँ बिसरल', 'सतवीं उसाँसि का 'जोहत रहली माई जेकर रहिया,' अठवीं उसाँसि का 'करलि तपेसा माई जी कऽ', नउवीं उसाँसि का 'महतारी ममता कऽ मूरति' और 'दसवीं उसाँसि का 'अँखियाँ रखलू कतना पानी' है। वस्तु-विश्लेषण की दृष्टि से प्रथम सर्ग में अपनी जन्मभूमि रेवती पुर पार्वती के एक नाम रेवती के नान पर बसने, उसके विस्तार, लोक-जीवन, विभिन्न ऋतुओं के पर्वो-त्योहारों, मेलों आदि का वर्णन है। यह इस प्रबन्ध मुक्तक की पूष्ठभूमि है। हमारे सर्ग में स्मृति-चित्रों के माध्यम से माँ के महत् अवदान का वर्णन करते हुए उल्लेखित ढंग से श्रद्धांजलि। तीसरे सर्ग में नौमी पूजन चित्रण के बहाने माँ की मृत्यु का उल्लेख और उसका रूपांकन। चौथे सर्ग में माँ के दूध पिलाने से लेकर जवान बनाने तक की अनेक मार्मिक स्थितियों का चित्रण। पाँचवें सर्ग में वर्ष के बारहों महीनों के पर्वो-त्योहारों, तरङ्ग-तरङ्ग के खाद्यो-फलों और इन तमाम अवसरों पर माँ के स्नेहानुशासन का विस्तृत चित्रण। छठे सर्ग में माँ का अपने मायके के संस्मरणों का कवि के शब्दों में बड़ा ही सम्पन्न चित्रण सातवें सर्ग में माँ के बहू की राह जोहने तथा कवि के विवाह होने का विस्तृत चित्रण। आठवें सर्ग में माँ के बहू के साथ जीवन संदर्भों का चित्रण। नौवें सर्ग में माँ के अंतिम समय की दार्शनिक प्रस्तुति एवं उसके द्वारा प्रदत्त अंतिम संदेश का चित्रण। दसवें सर्ग में प्रिया की मृत्यु के बाद उनके संस्मरणों का अत्यंत वेदना-सिक्त वाणी में चित्रण।

वस्तुतः इन सर्गों में तीसरे से लेकर आठवें सर्ग तक का काव्य और लोकतत्त्वों की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। पहले हम काव्य की दृष्टि से विचार करेंगे। यहाँ यह स्पष्ट कर लेना उचित होगा कि इस दृष्टि से यह काव्य किस रस के अन्तर्गत आयेगा। नवम सर्ग तक वास्तव्य रस का विकास हुआ है और दसवें सर्ग में शृङ्गार रस का। मोटे तौर पर इन्हें हम वियोग वास्तव्य एवं वियोग शृङ्गार भी कह सकते हैं। किन्तु यह मानने में शास्त्र की ओर से प्रबल बाधा है माँ और पत्नी की मृत्यु। मृत्यु के बाद यह केवल करुण रस हो सकता है। शास्त्र का कथन है कि मृत व्यक्ति जिसकी पुनः प्राप्ति उसी देह और उसी जन्म में न हो तो उसे करुण शृङ्गार न

मानकर कणरस मानना चाहिए। मेरी समझ में यहाँ रस-निर्णय की समस्या इतनी सरल नहीं है। जब एक ही साथ माँ और पत्नी के वियोग की विस्तृत अभिव्यजना हो तब दोनों को कणरस के अन्तर्गत मान कर उनकी पहचान या भाव-कोणों की भिन्नता को प्रकट कर सकते हैं। मेरी दृष्टि में शास्त्र नियमों के निर्माण के समय तात्त्विकता पर विशेष ध्यान देने के कारण अनेक व्यावहारिक स्थितियों की ओर ध्यान नहीं देता। मेरी दृष्टि में यहाँ शोक पर्यावसायी वियोग वात्सल्य और शोक पर्यावसायी वियोग श्रृङ्गार की स्थिति मान सकते हैं। इससे न तो शास्त्र मर्यादा भंग होगी और न तो प्रस्तुत काव्य की मौलिक सृजन-शीलता का रस दृष्टि से अपकथन होगा।

वात्सल्य-चित्रण की दृष्टि से कवि की माँ की मानसिकता का सुन्दर अंकन नौमी-पूजन के अवसर पर तीसरे सर्ग में मिलता है। किस प्रकार माताएँ अपने पुत्र के जवान होने पर, अपनी कीमती साड़ियाँ और बहुमूल्य आभूषण अपनी बहू के लिए सुरक्षित रखती हैं और पूजा-अनुष्ठान के समय उनका निरलकार सौन्दर्य किस तरह उद्दीप्त होता है :—

झांपी में बा खानि-खानि क बहतर धइल धराऊँ ।

सरिया-सरिया के समवावल बाटे समगरदाऊँ ॥

* * * *

मनसा बाटे ई धन लागी पतोहिया का हक्के ।

एही से ऊ पहिरल जाता कबहुं मोके झोंके ॥

* * * *

एँगुर-सेनुर-चूरी आगे सभ सिंगार झूठे बा ।

पतिबरता अहिवातिनि खातिर अउर सउख जूठे बा ॥

चाँथे सर्ग में कवि ने मातृत्व का उत्कृष्ट वर्णन किया है। भोजपुरी अंचल में-जहाँ आधुनिक शिक्षा का प्रभाव अभी अधिक व्याप्त नहीं हुआ है—माताएँ किस प्रकार अपने को गला-गला कर अपने पुत्रों की सेवा करती हैं, इसका सुन्दर चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में हुआ है :—

अपना तन कऽ खादि बना के ऊसर के उपजबली;

हमरा खातिर खून पछेना पानी मतिन बहवली ।

* * * *

जब-जब हमरा आष आ आं गइल गरवा ले लपटवली,

सिर सुहुरा के आँधु पोछि के घाव हिया कऽ भरली ।

(४)

हब कबहूँ ना जनली अपना खातिर का ऊ बहली;
जब माई कहि के गुहरवली गेना मतिन फुलइली ।

*

*

*

*

हमरा तन का माटी के ऊ फइली चमचम सोना;
हमरा खातिर भसम बनवली अपना तन कऽ सोना ।

बहुत: उक्त पक्तियाँ किसी सामान्य कवि की सामान्य भावुकता की देन नहीं हैं। एक प्रौढ़ कवि की उत्कृष्ट भावुकता की अनुभव-प्रसूत अभिव्यंजना हैं। इस कविता में साधारणीकरण की इतनी क्षमता है कि हम सब के सामने अपनी माताएँ इसी तरह पुत्र के लिए अपने को निछावर करती खड़ी हो जाती हैं।

पाँचवें सर्ग में कवि ने एक पूरे वर्ष की व्यापक पटभूमि पर माँ के वात्सल्य का चित्रण किया है। यह क्रम चैत्र मास में नौमी पूजन और नवान्न-ग्रहण से प्रारम्भ होता है। वैशाख में तिलक-विवाहों की भूम, माँ ^{संतुषान} ~~होराहा-हावुष~~ पर्व पर सतुवा खिलाने, श्रीफल का शरबत पिलाने आदि का चित्रण होता है। जेठ में माँ के द्वारा खरबूज-तरबूज खिलाने, आँखी और लू से बचाने, खरीफ की खेती की तैयारी, आम की बहार, भीमसेनी एकादशी आदि का वर्णन आता है। आषाढ़ में माँ का वृक्ष से चूवे आम को खिलाने तथा बहली बारिश में उड़ती माटी की सोंधी गन्ध का, सावन में नागपंचमी में माँ के द्वारा लंबोट बाँधने और अखाड़े में भेजने तथा रक्षाबन्धन पर बहन से माई को राखी बँधवाने आदि त्योहारों, टगुनि, सावां, कूकुड़ी की फसल का, भादों में माँ द्वारा चण्डमाष्टमी पर मन्दिर्गों में भेजने, कटहल के कोवों को खिलाने, क्वार में पितृपक्ष में गया जी के पण्डों के गांव पें आगमन और माँ द्वारा उनकी आवभगत तथा नवरात्र में जादू-टोना से बचाने, दशमी-रामलीला में नए कपड़े पहना कर मिठाई के लिए सपए देकर भेजने का, कार्तिक में दीपावली में माँ के सफाई अभियान में लगने और दीपक जलाने, गोबन कूटने, पूर्णमासी को आँखले के पेड़ के नीचे भोजन करने तथा माँ का बाँधले और पुरन के चटक अँचार खिलाने का, अगहन में मोठे अमरुद खिलाने बनबेला के फूल के समान जनेरा (उवार) के लावा को माँ द्वारा जेब में भरने, बाजरे के परमल खिलाने आदि का, पूस में ठंड से बचाने

(ज)

के लिए मां द्वारा गरम कपड़े पहनाने, सोंठ के लड्डू, महवा के हलवा-
छट्टां हल्दी के मगदल को खिलाने का, माघ में खिचड़ी का रंगीदार
और छत्र बवसर पर मां द्वारा बिउरा-तिलवा, सजाव दही, ची-खिचड़ी
खिलाने, शीत और ठिठरन, वसन्त बंचमी को 'नवान्न-ग्रहण और हवन के'
वाद मां के हाबुस खिलाने, ढोलक-डफ बजने का, और फागुन में शिवरात्रि
और होली में मां की वत्सल भूमिकाओं का विस्तृत वर्णन हुआ है। लोक
तत्त्वों की दृष्टि से यह सर्ग अत्यन्त समृद्ध है।

छठवें सर्ग में भी एक विचित्र किन्तु स्वाभाविक मातृत्व का कोष प्रिया
गया है मां द्वारा अपने मायके की बराबर स्मरण करने के रूप में :—

माई के ना कबहूँ बिसरन आपन प्रिय नइहरवा।

मां द्वारा अपने बाल रूप के खेलों, अपने घर के कमरों, दलानों,
ओसारी, घर के काष्ठोपकरणों, बाबूजी और मेया लोगों के जमावड़ों, दरबाजे
पर आने-जागे वाले तिवारी बाबा, जबर मियाँ बिरजू ग्वाला आदि का
अत्यन्त सजीव स्मरण तथा ग्रामजीवन के अविभाज्य अंग पशुओं—गइया,
बरधा, भुवरि भँइसिया, पड़रू, करिया कुकुर, मुक्का जइमे पक्षी आदि का
विस्तृत वर्णन हुआ है। सँझौनी से लेकर रात को 'बड़का छुटका' भाइयों
द्वारा रामायण-पाठ और बाबू द्वारा उसका सांकेतिक अर्थ लगाने का मार्मिक
वर्णन है। कवि की मां क्यों न स्मरण करें अपने मायके की जब उन्हें
आदर्श माँ-बाप और आदर्श भाई मिले हों। पिता का पुत्री के प्रति सोच :—

बेटा-बेटी में ना अन्तर बाबू जी के लउके;

जइले भइयन के ऊ.मानसु ओइसे जानसु हमके।

पुत्री को लेकर पिता की आकांक्षा :—

बाबू चाहत रहलन हमके फुलवा सेज सजावल;

जिनिगी भर हमरा तनवा के दुधवा में नहवावल।

इतना ही नहीं, इस सर्ग का सबसे उत्तम प्रकरण है कवि की माता
की माता का देहान्त हो जाने पर पिता का अपने बच्चों का मातृवत्
लालन-पालन :—

कबहूँ नाहीं कतो निहरलन आपन कुचता-धोती;

रौघट कुचइल नइल पहिरि के हो गइलन अलवाती।

वस्तुतः यह पूरा सर्ग माता के अपने मायके के संस्मरणों से अत्यन्त

मार्मिक बन गया है। यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि यह मुक्तकीय वस्तु क्रमशः माता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को लेकर चलने के कारण ही प्रबन्ध काव्य की वस्तु बन जाती है। पाँचवें सर्ग में पूरे वर्ष के प्रत्येक मास, प्रत्येक पर्वोत्सव, प्रत्येक दिन में फैले हुए माँ के मातृत्व और वात्सल्य की व्यापक बहुरंगी गार्हस्थिक छटा तथा छठें सर्ग माँ के मायके के संस्मरणों के माध्यम से एक विशिष्ट प्रकृति, एक भरा पूरा जीवन परिवेश, माता-पिता और भाई के गरिमाशाली चरित्र न केवल आज के युग की प्रासंगिकताओं को स्पर्श करते हैं वरन् प्रबन्धत्व के लिए आवश्यक कथाभाग की पूर्ति भी करते हैं। मैरी दृष्टि में इसकी बहुत बड़ी उपलब्धि एक महिमाययी माँ के व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा में कवि की सफलता के रूप में दिखलाई पड़ती है।

सातवें और आठवें सर्ग में माँ के व्यक्तित्व का एक और मार्मिक अंग सामने आता है—बहू को घर में लाने की उत्कट इच्छा और उसके आ जाने के बाद उसे घर का मलिकावँ सौंप कर उसके भावी मंगल की विन्ता में लगे रहना। बड़े मार्मिक ढंग से कवि कहता है 'जोहत रहली माई जेकर रहिया।' किन्तु विवाह काटने वालों से बचकर विवाह तिथि तय होती है और कवि का विवाह होता है। वैवाहिक 'संस्कार हमारे यहाँ और' संस्कारों से जटिल और विस्तृत हैं। उसमें इतने छोटे-बड़े अनुष्ठान हैं और उनके साथ जुड़े इतने मधुर गीत हैं कि उनका चित्रोपम वर्णन एक जीवंत काव्य का सृजन करने में अपने आप समर्थ है। मायके से कन्या के विदा का क्षण कितना दुःखद होता है और ससुराल में लड़की के आ जाने के बाद सब कुछ अनुकूल पा जाने पर कितना सुखद हो जाता है—यह प्रस्तुत काव्य में सुन्दर ढंग से व्यक्त हुआ है।

आठवें सर्ग में माँ की तपस्या फलीभूत होती है। अनुकूल होने पर ससुराल कितनी आत्मीय हो जाती है बहू के लिए इसका सुन्दर चित्रण।

उनुका बदे नियामति संचलि घर-घर कोना-अंतरां;

जान परे नइहरवा उठि के आइल बाटे ससुरां।

बहू अपने मायके जाती है उसे सासु अर्थात् कवि की माँ पत्र लिखती है। यह पत्र किंचित् उपदेशात्मक होने के बावजूद माँ के स्नेह-रस से अश्लावित होने के कारण मार्मिक बन पड़ा है :—

तूहीं घर कऽ आगम बाड़ू तूहीं सही पहचाना;

चाहे एके गुहथरि कइ दऽ चाहे सरग दुलखा।

(न)

चहवू घर के सरग बनइवू चहवू करवू गारत;

दुलहिनि, घर के सोगहग रखि हऽ सोगहग रखि हऽ भारत ।

इन पक्तियों में घर को सोगहग अर्थात् अखण्ड रखने के साथ भारत को भी अखण्ड रखने की बात कह कर कवि एक बड़ी बात कह जाता है । भारत की अखण्डता केवल सीमाओं के खतरे से ही अभिशप्त नहीं है, वह यहां के स्त्री-पुरुषों करोड़ों नागरिकों की असली-सही समझ और सही जीवन-पद्धति से भी बचने वाली है ।

नवें सर्ग में मां के अन्तिम समय का वर्णन है । यह सर्ग नितान्त दार्शनिक हो गया है—जीवन और मृत्यु की समस्याओं से जूझने वाला । इस सर्ग में मां का सन्देश अत्यन्त मामिक है :—

जुग-जुग जीयऽ जागऽ दुलहिनि रहि के तूं अहिवाती;
दूध-पूत से भरऽ बढ़ो ए कुल कऽ जन-जस थाती ।
जइसे साग्रि हमारि पुत्रवलू अइसे तुदरो पूजी;
भउजी काकी आजी कहिके गउवां तुहके पूजी ।
सभ तुदर गुन सुमिरि-समुझिके हुलसति बाटे छाती ।

खाली नाम काम कऽ होले ए दुनियां में चरचा;
नाहीं चाम, काम प्रिउ हउवे ई अनुभव ना बच्चा ।

अन्तिम अर्थात् दसवां अध्याय जैसा कि प्रारंभ में ही कहा जा चुका है, शोक-पर्यवसायी वियोग शृङ्गार की ही अभिव्यंजना है । जब कवि की यह कृति 'महतारी समता कऽ मूरति' प्रकाशनाधीन थी तभी उसकी पत्नी का निधन हो गया । वह इस दुर्घटना से इतना मथित और दुःखी हुआ कि उसने उस पर भी एक उसांसि लिखकर इस संग्रह में जोड़ना उचित समझा । उसके औचित्य का परीक्षण करने पर यह खटकता है कि मां केन्द्रित इस काव्य में पत्नी-वियोग की कविता को क्यों जोड़ा गया है । किन्तु हम जब दोनों को मिलाकर पढ़ते हैं तब पता लगता है कि मां के स्नेह छाया तले पत्नी पत्नी मां के दिवंगत होने के बाद किस प्रकार उसके अ देशों का निर्वाह करती है—यह लिखना इस पारिवारिक प्रबन्ध काव्य का एक सुन्दर उपसंहार बनता है । पढ़ने पर पता चलता है कि कवि की पत्नी का रोल भी पारिवारिक सन्दर्भों में मां की तरह का रहा है कवि के जीवन को

अधिक से अधिक सुचारु पथ पर ले चलने वाला। वैसे पत्नी और माँ के स्वरूप और सम्बन्धों की भिन्नता भी कम महत्वपूर्ण नहीं है :—

हम ना जनलीं अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी।
रहलू अपना माई बाबू का अँखिया कऽ पुतरी,
उनुकर छोह-मोड़ जेइ के तूँ भइलू हमरा बखरी,
कनियों बनि के भइलू भइलू हमरा मन क रानी।
माँझिकेद सुकुवार गोर तन करे प्रकास हिया कऽ
घर आँगन मनसायन लागे लहकति टेमि दिया कऽ,
तूँ समका अँखिया में बसलू वन रूपवा कऽ रानी,
भइल संग तब रहे लइकई इक संग चढ़लि जवानी,
दम्पति जीवन जिम्मेवारी लिहलीं दूनो परानी,
आइलि भारि कपारे हमरा हरिलिहलू हलकानी।

यह दाम्पत्य प्रेम—धर्मपत्नी की सृष्टि के बाद कवि की पीड़ा में बदल जाता है और उसका कृतज्ञ मन स्मरण करता है :—

हमरे तन के तनवाँ जनलू हमरे मन के मनवाँ
हमरा के सौभाग्य समझलू जनलू हई परनवाँ,
आपन खून पसेना कइलू हमरा खातिर पानी।

कवि को अपनी पत्नी से इतना गहन प्रेम है कि दोनों एक क्षण के लिवे भी एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते :—

जब हम गइलीं काशी पटना चाहे राजस्थनवाँ,
तब हमरा के पछिअबले जा तुहार बाउर मनवाँ,
छौंछियात तूँ घर में घूमऽजस मछरा बे पानी।

प्रियलभ में प्रियतमा के रूपका ध्यान सहज स्वाभाविक है :—

तू सदेह सुघराई रहलू दया मया क मूरति,
नारै रूप से रामा रहलू तू सेवा क सूरति।

मुवलो पर ना लउकल, उतरल तुहरा मुहँ कऽ पानी।

कवि का गहन प्रेम इन पक्तियों में भली भाँति व्यंजित होता है।

कवि के शोक-पर्यवसायी विप्रलभ शृङ्गार में शैलीनता और संयम दोनों का अंकुश स्पष्ट है। इन अङ्गुशों के अतिरिक्त पत्नी के दिवंगत हो जाने पर उसके वर्षों पूर्व बीत गए यौवनकालीन रुर-रस को बातें अपने आप

अप्रासंगिक हो जाती हैं। अब तो वह देवी के समान हैं और कवि उनके उपासक के समान। पंक्तियाँ देखें :—

का ले तुहें मनाई ? बोलऽ टूट गइल दिल-दरपन,
‘महतारी ममता कऽ मूरति’ भावे तुहें समरपन।
हे देवी तू माफो दीहऽ जो कइलीं नादानी।
अन्यत्र भी कवि कहता है :—

धन्य धर्म पत्नी तू रहलू परम पूज्य महतारी,
सती साध्वी सीता रहलू तू पतिवरता नारी।

निष्कर्षतः यह कहना चाहूंगा कि कोई क्रम-बद्ध कथा न होने और अछूत विषय के शुद्ध मुक्तकीय होने के बावजूद इस कृति में मार्मिक स्थलों की कमी नहीं है। मातृत्व और मातृ-स्नेह (वात्सल्य) का जैसा चित्रण इस काव्य में हुआ है अभी तक वैसा काव्य मुझे भोजपुरी और हिन्दी में नहीं दिखलाई पड़ा।

इस कृति का महत्त्व इस काव्य में लोक-संस्कृति के चित्रण को लेकर भी है। भोजपुरी की लोक-संस्कृति का जैसा समृद्ध सर्वाङ्गीण रूप इस प्रबन्ध में प्राप्त होता है वैसा भोजपुरी के किसी अन्य प्रबन्ध में नहीं मिलता। इसमें पर्वों, त्यौहारों, अनुष्ठानों का वर्णन तो है ही लोक-विश्वासों, अवधारणाओं, अन्यविश्वासों का भी निस्तृत चित्रण है। प्रत्येक अवसर के लोक गीतों को जिस का तस प्रयुक्त करना लोक-संस्कृति के चित्रण में महत्त्वपूर्ण योगदान करना है। इस प्रकार ‘महतारी ममता कऽ मूरति’ में एक विशद समन्वय मिलता है मुक्त और प्रबन्ध का, परम्परा और प्रयोग का, वात्सल्य-वियोग और विप्रलम्भ शृङ्गार का कविता और लोकगीतों का, पारिवारिक संस्कारों और लोक-संस्कृति का। भावुकता और सहृदयता का जो गहन समावेश प्रबन्ध कवि में होना चाहिए वह भी कवि में पूरी तरह विद्यमान है। सारी रचना इस तरह रस-प्लावित है कि पाठक को निर्बाध रूप से रसास्वाद होता चलता है। मैं इन सुन्दर कृति के प्रकाशन पर प्राध्यापक ‘अचल’ को बधाई देता हूँ और उनसे निवेदन करता हूँ कि वे भोजपुरी और हिन्दी के उत्तमोत्तम ग्रन्थों से साहित्य रसिकों के प्रीतिभाजन बनें।

बाणी-प्रतिष्ठान
रबीन्द्रपुरी, गाजीपुर

(डाँ.) जितेन्द्रनाथ पाठक

चरन-कमल में माथा

'महतारी ममता कऽ मूरति' हमरा माई क करतब ह । जहवाँ हमारि माई परिवार क पेट भरे आ सुन्नी बनावे बदे अपना सोना मतिन देहि के माटी कइ गलली तहवाँ ऊ अपना जाँगर आ नेह से माटी के छूई के सोना बना दिहली । ऊ हमरा के बिआइ-पिआइ के चाँड़ मरद बनावे, लिखावे-पढ़ावे, हमरा जिनिगी के बनावे-चोनावे आ हावा-बतास से आड़ छाहँ करे बदे जान पर खेलि जासु । ऊ हमरा सुख आ दुख में एक तरे ठाढ़ रहसु । उनुकरि साघि रहे कि हम पढ़ीं, लिखीं, कमाई आ कुल-पलिवार क नाव बढ़ाई । उनुकरि मूखि रहे कि उनुकर बंस-बरखा पलुहि के फूलत-फरत चलत जाउ । अपना चलते माई केहू क रोवाँ ना टूटे दिहली जेवना से कि केहू क कलपल उनुकरा संतान पर परो । बाँभन-बिसुन, गाइ-बछिया, आन्हर-भेंभर, औषढ़-साधु, भीखमंगा आ अवनी-पवनी जे आसरा लगाइ के उनुकरा दुआरि पर आइल, ओकरा के भाव-भगति से दुइ दाना देई के लवटे दिहली । उनुकरा रहते हमारि बिआइ-सादी हो गइलि आ हम दुइ-तीन बरिस नोकरियो कइ लिहलीं । माई हमरा पहिलकी लइकी के पाँच छव बरिस खेला लिहली आ पतोहि का संगे दसन बरिस रहि लिहली । जब हम बहराँ ले छुट्टी में आई आ किछु कमाइन-धमाइल रुपया-पइसा उनुकरा के देवे लागीं त ऊ अपने ना लेइ के बाबू का गोड़ पर हमरा से धरवाई के अघा जासु । ऊ बराबर हमरा के दिल खोलि के असीससु—भइया । बढ़ऽ, फूऽ, फरऽ । ऊ पचास लागत-लागत पलिवार-पाले क व्रत निवाहत आपन चोला बदलि दिहली ।

हमार अभाग, कि माई क मटी ना छू पवलीं, एकरा बदे मन अजुओ कचोटे ला । ओधरी हम माई का इच्छे से कलवा कोस राजस्थान में जयपुर राज्य का शेखावाटी का रेगिस्तान में बालू का टीलन पर टगाँइल रहलीं । माई का मुअला क खबरि डाँक से ढेर देरी से मिललि । घर चोहँपल बेकाश बुझाइल । मन के एतना डीढ़ रखलीं कि एगो-दूगो संगिन के छोड़ि अउरी केहू ना जानल । बाकी राति का निचलावाँ एकस्ता परला पर मन क डोढ़ई भागि ठाढ़ भइलि । हम हचक-हचक रीवते रहि गइलीं; नीनी ना आवे । माई क सुधि राति भर बिहबल करति रहि गइलि । दिन-राति

बितति गइलि। डढ़-दुइ महीना बीत गइल। हम गमी का छुट्टी में घरे चोहँपि गइलीं। माई बिना घर झन-झन करत रहे, काटे दउरे आ माई क चेत परते हउल फूँकि दे। समय बीतत गइल, माई क सुधि एक दम गायब ? ना; रहि-रहि ए हियरा के बँधति गइलि आ रहि-रहि हमार मन उकसत छनगत गइल माई अपना जिनिगी में हमरा के जेवन नेह देत गइली ओही क बल पाइ के उनुकरि सुधि 'महतारी ममता कऽ मूरति' का रूप में परगट हो गइलि ह। एही से हम ई कहे बदे लाचार बानी कि ई कृति हमरा कवि का प्रतिभा, अभ्यास आ लगन क फल ना ह, बलुक हमरा गंगा-लाभ-कइलि माई क कृति ह।

ई कृति ए शताब्दी का नउवां दसक का सुरु में बनि-ठनि के तइयास हो गइलि; बाकी प्रकाशन क जोगाड़ ना बइठला से गुा-चुप कोना अंतरा लागलि रहि गइलि। एही का मारे पहिले एके सगंबद्ध रचना करे क न मन रहे आ ना त सामान। खाली एगो छोटि-मोटि कविते क ललकि रहे। कविता जोर मारि के मजे क बड़हनि हो गइलि आ हमरा के जोड़ा लगावे बदे लाचार कइ दिहलसि जेवना से कि एगो छोटि-मोटि किताबि बनि जा। दूसरो कविता बनि गइलि बाकी मन के तीहा ना भँटाइल। हिन्दी भोजपुरी क नामी-गरामी साहित्य-सेवी डा० आंजनेय जी के दूनो कविता सुनवलीं। ऊ मुनि के भाव-गदगद भइलन आ सरहलन। एकरा साथे ए काम के अउरी आगे बढ़ावे बदे उकसवलन। हम आगे बढ़त गइलीं आ माई का सुधि क परसाद चखन नेह न मूरति भारतीय माता क पुरहर जीवन के उरेहे क छत जोग हो गइल। उहे उतजोग ई 'महतारी ममता कऽ मूरति' ह।

ई कृति नबही में प्रेस क मुहँ देखलसि। जो प्रेस बतछोड़ई गलदोदई, ढीलवाई आ ढीठाई ना कइले रहित न नबही-एकानवेर में लोक का सोझां आ गइलि रहिति। प्रेस का ए वेलप्रा दीहला क नर्त जाई भइलह कि माई का सुधि का सगे उनुकरा प्रिउ पतोहू क सुधि ए कृति में जोरे क नउबति आ गइलि ह। हमार माई अपना पतोहि के दुइ-चार-पांच थान गहना-गीठो जेवन किछु देखे होखसु बाकी एकरा ले बड़ि के परम्परागत भाव-बिचारन क अनमोल थोक थाती सउँपली जेवना के ई अपना हिरदया में जो गाइ के छइले रहि भइली ह आ बड़ा तकबिहान से अपना जिनिगी के ओही का बल पर चलावत गइली ह। जब हम आजु ओ^{दनी} जानी का एह ~~हूये~~

लोक में मा रहला पर उनुकरा जीवन पर विचार करतानी ह ऊ दूनो जरि से एके बुझाति बाड़ी; भलहिन डाढ़ि-पात से किछु अन्तर होखे । एसे जब हमरा धर्मपत्नी क शरीर सन् १९९४ में पूस का अँजोर पक्ष का ऐकादसी के रात्रि में दस बजे छूटि गइल तब एक-दुई दिन का बाद किछु अहधिर भइला पर 'महतारी ममता कऽ मूरति' उनुकरे के सउँपे क किछु-किछु इच्छा होखे लागलि । जइसे ई माई का अउरीं थाती क हकदार हो गइलि रहली ओइसहीं एह क हकदार बुझइली । एही बीच में आंजनेय जी पुछार करे बदे चौहपि गइलन आ हमरा इच्छा के विना जानल-सुनल अपनहीं ओकर पक्ष लेइ के एक से एक तर्क दिहलन । हम अपना आ उनुकरा मन-मोत विक ए कृति के अपना धर्मपत्नी, स्वर्ग बासिनी श्रीमती रामा देवी के सउँल तथ कइ लिहलीं । ओही सूह भा झटका में अपना पचास-छप्पन वरिस का सगिनी का जीवन क अलम्भ लेइ के एगो भारतीय नारी का पत्नीत्व आ मातृत्व क रूप एगो लमहराहे कविता में उरेहा गइल । ओ कविता के एह काव्य में जोरि दिहल समीचीन बुझाइल ह तरे ई ए काव्य में दसवाँ सर्ग होइ के जुटि गइल ह । दस सर्गवाली माई का ए कृति के उनुकरा पतोहि के सउँचे में हमरा के तीहा मिलल ह । काहें कि ई उनुकरा पथे पर चलत पलिवार के सुखी बनावे बदे आपन जांगर धुनत उनुकरा लोक के उनुकरा लग्गीं चलि गइली ह । ई अपना पति-पुत्र-पुत्रिन क जेवन सेवा कइ दिहली ह ऊ अब ए जुग में ना मिली ।

ई सुधि-काव्य केतना रसगर, सुधर आ सिद्ध उतरल बा एके सहृदय लोग बतइइन । हमरा माई, मेहरारू आ हमरा बदे त ई नीके बा—निज कवित्त केहि लाग न नीका, सरस होइ अथवा अति फोका ।

ए काव्य-जातरा में प्राचार्य डा० 'आंजनेय' प्राचार्य डा० अवध बिहारी राय आ डा० अवधेश प्रधान, प्राध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से जेवन उत्साह-मदति मिलति गइलि बा ऊ सराहे जीग संबल साबित भइलि ह । ए काव्य के प्रेस का जेहल से बाहर करे में डा० आंजनेय क हमरा के उद्वेगल आ हमरा चिरंजीवी पुत्र डा० अचलानन्द राय शर्मा क मुद्रक महोदय का माथा पर चढ़ल रहल कामे भाइल ह । एसे ए काव्य के प्रकाश-दर्शन करावे का श्रेय एही लोग का माथे बा । हम त अपना ए कृति के आर्गि-भरोसे छोड़ि देले रहलीं हँ आ मुद्रक जी का 'बाबूजी' सम्बोधन पर

(त)

फिदा रहलीं हँ। हम हिन्दी भोजपुरी का ओ सभ विद्वानन क रिनी बानी
जे ए काव्य के देखे, सुने, गुने, परखे आ आपन विचार परगट करे क कृपा
कइले वा।

अन्त में ए कृति के भोजपुरी काव्य-प्रेमी लोक-मानस का सेवा में ओकरा
उदारता पर भरोसा कइके उपस्थित कइ देतानी आ मातृदेवी भव, मातृ देवी
भव कहत-सुनत-गुगत अपना पावै-पूज माता जी स्वर्गवासिनी श्रीमती
रामकुवैरि देई का चरन-कमल में माथा टेहतवानी—

हम, हमार ई करतब हउवे
माँ ! तुहरे परसाद;
धइलीं चरन-कमल में माथा
जाँ ! दऽ आसिरबाद।

—‘अचल’

दीपावली, सम्बत् २०५०
अचल-साहित्य-सदन
हरिहरपुर-तिवारीपुर, गाजीपुर

अपने ढंग का अकेला कालजयी

प्रबन्ध काव्य

भोजपुरी प्रबन्ध काव्य 'महतारी समता कऽ मूरति' अपने ढंग का अकेला और चालू भोजपुरी काव्य की लीक से हटकर है। इसका शिल्प इस बात के लिये आवश्यक करता है कि इस नव विकसित भाषा के काव्य में हर्ष-गद्गद् आसुओं सहित रोमांचित कर देने की शक्ति आ गयी है। इस काव्य के यशस्वी कृतिकार विद्याचल राय 'अचल' ने ग्राम वासिनी मां भारतीय मां के सांस्कृतिक सन्दर्भों को उसकी सम्पूर्णता में उठाया है और वर्णन-विस्तार में न जाकर तथा भावात्मक चित्र-विम्बों में सामाजिक कसाव देकर सन्तति के शशव से लेकर मां की स्नेहिल छांह में एक से इक्कीस होने की स्थितियों को बहुत ही प्रवाह पूर्ण परिदृष्टिगत भोजपुरी में प्रस्तुत किया है। बहुत ही मंगलाशापूर्ण उदात्त भाव-तरंगों को उठाने के साथ ही अन्त में सम्पूर्ण परिवार के योग-अंश को वहन करती मां के अवसान के समय कवि याठकों को गम्भीर विरागों में डुबो देता है। ये विचार आस्था और पूज्य स्तवन जैसे जीवन-मूल्यों से जुड़े होते हैं। पूरी कृति मूल्य सापेक्ष होने के कारण बहुत मूल्यवान् है। केन्द्रवर्ती मां के चतुर्दिक परिधि पर बहुत मोहक ग्राम संस्कृति है जिसके सजीव चित्रों को पूरी रसवत्ता के साथ प्रस्तुत करने में 'अचल' जी को पूरी सफलता मिली है। ऐसे मौलिक, मानक और कालजयी काव्य की सृष्टि करने के लिये 'अचल' जी को बधाई।

—डा० विवेकी राय



कविवर 'अचल' जी ने पिछले कई दशकों की अपनी सुदीर्घ काव्य-यात्रा में हिन्दी-काव्य-जगत् की महती सेवा की है जिसका प्रमाण युग-प्रदीप, सौभद्र, गंगेय आदि काव्य रचनाएँ हैं। इसी क्रम में इन्होंने 'भोजपुरी भाषा में 'महतारी ममता कऽमूरति' प्रबन्ध काव्य का प्रणयन किया है। महतारी की अतुलनीय ममता को मूर्तिमत्ता प्रदान करने वाला यह भोजपुरी का प्रबन्ध काव्यभाव, भाषा और कला की दृष्टि से अद्भुत मर्म स्पर्शी बन गया है। इसमें गीत-तत्त्वों का प्रचुर समावेश परिलक्षित होता है। इसमें भावों की अनुगूँज और आवेगों की सहजता तथा ताजगी है। कवि इस काव्य में इतना सहज और साधारण हो गया है कि इसमें गीत की अंतरंगता छलक उठी है। इन सबके प्रभाव से यह काव्य सहृदय-सुधी जन का प्रिय-आत्मीय बन जाता है। इस सहज आत्मीयता के सृजन और अभिव्यंजन में कवि द्वारा प्रयुक्त सहज, सरल, शुद्ध तथा सरस भोजपुरी शब्दों ने कमाल दिखाया है। कवि की यह काव्य-कला वन्दनीय है। कवि ने इस काव्य के प्रथम सर्ग में जगदम्बा की वन्दना में मातृ-शक्ति के प्रति श्रद्धा-विश्वास निवेदित करते हुए भारतीय माता के हृदय की समतामयी कोमल भावनाओं को इंगित कर दिया है और फिर तो आगे के सर्गों में एक भारतीय माता के सांगोपांग जीवन को चित्रित करने में पूरी सफलता प्राप्त की है। मातृ-जीवन विषयक 'अचल' जी का यह प्रबन्ध काव्य, भोजपुरी काव्य-जगत् को एक अनूठा अवहान है। भोजपुरी साहित्य में तो यह अब तक अपने विषय का एक ही सशक्त एवं प्रशस्त प्रबन्ध काव्य है।

माता की महत्ता विश्व-विदित है। स्वर्गीय श्री रघुपति सहाय 'फिराक' ने अनेक बार अपने वक्तव्यों में कहा है कि 'जब कभी मुझे माता के गोद की तलब होती है तब मैं रामचरित-मानस उठाकर पढ़ लेता हूँ।

एक रचनाकार तुलसीदास के सन्दर्भ में कहता है—

रख दिया है राम को शब्दों में तुमने ढाल कर,
जिस तरह माता जवाँ करती है बेटा पालकर।

(घ)

रामभक्त हनुमान् अपनी माता अंजनी के प्रण की रक्षा के लिये स्वयं अपने स्वामी भगवान् राम के बिरुद्ध लड़ने को खड़े हो जाते हैं, माँ की समता में डूब कर बालक-चाणक्य अपने दाँतों को तोड़ डालता है और विश्व-विजयी सिकन्दर अपनी माँ के एक बूँद आँसू को मूसकान में बदल देने के लिये अपनी सारी राजाज्ञाओं को पलट देता है। महापुरुषों की मातृ भक्ति मानवता के उत्कर्ष के लिये श्लाघ्य सोपान है। कृतज्ञ मानव की मान्यता है कि माता की कृपा से सभी संकटों का निवारण संभव है। इसी से वह सब प्राणियों में मातृरूप से संस्थित दिव्य शक्ति के प्रति नतमस्तक होता है—‘या देवि सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तये, नमस्तये, नमस्तये, नमो नमः।’ इसी भावना से जुड़े हुए कवि ‘अचल’ ने श्रद्धा-भक्तिपूर्वक जिस प्रकार से माता की स्मरण किया है, वह सचमुच स्तुत्य है।

माता का स्थान मानव-समाज में सर्वोपरि है। राम की माता कौशल्या अपने पुत्र राम को वन जाने से इसलिये नहीं रोक पाती कि पिता दशरथ के साथ माता कैंकयी का भी आदेश है और इसके फलस्वरूप उनको विश्वास है कि राम वन में भी अवध से सौगुना सुखी रहेंगे—‘जो पितु मातु कहेउ वन जाना, तो कानन सत अवध समाना।’ ‘अचल’ जी ने मानवता की सर्वोच्च छोटी माता के स्नेहिल जीवन को इस काव्य में अभिव्यक्ति देकर मानव-समाज का जो उपकार किया है वह सदा स्मरणीय रहेगा। इसमें माता के जीवन-पर्यन्त की स्नेह की सारी मनः स्थितियों का मार्मिक चित्रण हुआ है। मानवीय श्रुतियों की प्रकाशिका इस दिव्य कृति, ‘महतारी समता कऽ मूरति’ के प्रति नतमस्तक होते हुए शुभ कामना करता हूँ कि इस भोजपुरी साहित्यिक कृति से मानवता का पथ-द्रशस्त कर, भोजपुरी के अन्य सृजन-कर्ताओं को प्रेरणा देते हुए ‘अचल’ जी ऐसी ही और रचनाओं द्वारा भोजपुरी साहित्य की वृद्धि करने में सफल होते चले जायें।

विजयादशमी, १९६४

भोलानाथ गहमरी, अध्यक्ष
अखिल भारतीय भोजपुरी,
साहित्य सम्मेलन

(न)

एक सराहनीय काव्य

अपने पुराने साथी 'अचल' जी को अब तक मैं भोजपुरी गद्य साहित्य का एक मजा हुआ लिख लेखक ही जानता था। मेरे मन में अबतक उनकी यही छाप थी। उनके अनेक लेखों तथा कहानियों का मैं प्रशंसक रहा हूँ। जब भी भोजपुरी लेखन सम्बन्धी गोष्ठियाँ हुईं और उनमें बोलने का अवसर मिला मैंने सदैव शीर्षस्थ भोजपुरी लेखकों तथा कहानीकारों में एक नाम भाई 'अचल' जी भी लिया है किन्तु जब 'महतारी ममता कऽ मूरति' नामक उनके काव्य को देखने का अवसर मिला तो मैं सच कहता हूँ, निहाल हो गया। मात्र इस एक काव्य को पढ़कर मैं बड़े गर्व से कहना चाहता हूँ कि भोजपुरी के पास 'अचल' जी जैसा रस-सिद्ध कवि है, वह कोई कंगाल भाषा नहीं है।

मैं न कोई समीक्षक हूँ और न भोजपुरी साहित्य का विद्वान् ही। हाँ थोड़ा बहुत काव्य क्षेत्र में हाथ-पंर मारता रहता हूँ, इसलिए इस सच्चाई को जानता हूँ कि सरस कविता लिखना कोई आसान काम नहीं है। उसी कसौटी के आधार यह कहूँगा कि 'महतारी ममता कऽ मूरति' एक सफल काव्य है। सबसे बड़ी बात तो यह है काव्य को अपनी कोई कथा नहीं है। स्वर्गीया माँ के प्रति पुत्र की भक्ति, उससे संबद्ध संस्मरण ने ही बड़ी सहजता से काव्य का रू ले लिया है।

कविवर 'हरिऔध' जी का 'प्रिय प्रवास' भी तो ऐसा ही है जिसमें ब्रजवासियों ने कृष्णवियोग के पश्चात् अपने-अपने संस्मरणों को कहा है। उसे ही कवि ने कविता में बदल दिया है। इसे हम 'अचल' जी की काव्य क्षमता ही मानेंगे। इन संस्मरणों को कवि ने ऐसी कला के साथ कविताओं में पिरोया है कि वे सब मिलकर कथात्मक हो जाते हैं। प्रेमी-प्रेमिका के

वियोग में तो सारे संसार में अनेक काव्य लिख गये हैं किन्तु अपनी माता के बिछुड़ने के बाद उस पर १० सर्गों का काव्य मैंने इसके पहले तो कभी नहीं देखा था। काव्य किस कोटि का है? किस रस का है? इसका निर्णय करने का अधिकार मेरे पास नहीं है। मैं तो मात्र रचना धर्मिता पर ही मुग्ध हूँ। और उसी आधार पर कविधर 'अचल' जी को बधाई दूंगा साथ ही उन्हें प्रणाम भी करता हूँ। साहित्य जगत में इस काव्य का आदर सुनिश्चित है।

चन्द्रशेखर मिश्र
(१ मकर संक्रान्ति ६५)

(फ)

पहिली उसाँसि

जय शंकरा रेवती माई

गंगा माई का रेती पर इहे गावँ रजधानी;
जहवाँ राजेली महरानी जगदंबिका भवानी ।

आदि-शक्ति अठभुजा अजेया कऽ हउवे ई नगरी;
इहे रेवती ऊँच करेली एकरि बड़की पगरी ।
इहे इष्ट देवी जन-जन कऽ नित्त कल्याण करेली;
जब आवेले भीरि कपारें इहे गाढ़ हरेली ।

ई अनादि हउई अनंत हऽ इनिकर अगिनित नउवाँ;
साँझि सवेरे जपत रहेला रोजे सज्जे गउवाँ ।
गउवाँ बीचे सिद्धधाम हऽ देवी कऽ असथनवाँ;
जेपर खित्ताभर कऽ लागल हउवे अडिग धियनवाँ ।

देवी-देवल का कुरुसी कऽ पाया जमल पताले;
कुरुसी का सिर कऽ सरकसई गिरिवर सिर के साले ।
पत्थल कऽ चौकोर चउतरा हऽ परबत कऽ छाती;
जेपर चढ़ति जाँघि थराले लागे बल कऽ थाती ।

ऊँच चउतरा पर चौकोना चमचम वा देवी घर;
जइसे वा कौलाश-शिखर पर चानी कऽ गिरिजा-घर ।

मंदिर-मध्ये फटिक-सिला कऽ ऊँचासन झलकेला;
जहवाँ ले दुख-साँसति पर माँ कऽ फरमान चलेला ।

भगतन कऽ ई देवी माई महाशक्ति महतारी;
करति रहेली ए गउवाँ कऽ आफित में रखवारी ।
देवी-घर का परिकरमा कऽ हवे चौमुखी खम्हिया;
जेमे कथा-पुरान बँचाला देवी कऽ असतुतिया ।

महतारी ममता कऽ मूरति

मन्दिलवा में चारि दुवारी सुघर सदर दरवाजा;
जहवाँ डड-प्रनाम करेलन पंडित साधु राजा ।
देवल का उत्तर में हउवे सुरहुर सुघर सिवाला;
जेमे सिव पलिवार रहेला सभ दरसन के जाला ।

हवन-कुण्ड कऽ मंडप ओले पूरुब हउवे तनिके;
जेमे “स्वाहा-स्वाहा” होला देवी कऽ जप जमके ।
समिधा जरे हुनाला सकला भसम-भभूति बनेले;
जेसे तपे रेवतीपुर तन जगमग जोति जगेले ।

देवी - दुवराँ बासुदेवजी हावा में हहरा के;
“हर हर-हर हर” कहत रहेलन वदरन में अँगिरा के ।
फाग-दिने गउवाँ बटुराला दुखगा जी का धामे;
जानेला सभ आवेली माँ विकट भीरि में कामे ।

चरनन में माथा टेकेला बिनती कइ अगराला;
सिधबाहिनी गुन-कीर्तन में सभ केहू सुरियाला—

“पड़्यौ रउरी परों भवानी
रउरा दुआरे उँच चउतरा,
चढ़त होति हयरानी । पड़्यौ रउरी परों भवानी ॥

रउरा दुआरे हरियर पीपर,
लाल धुजा लासानी । पड़्यौ रउरी परों भवानी ॥
सिध चढ़लि देवी गरजति आव,
बोलति जय जय बानी । पड़्यौ रउरी परों भवानी ॥

देवी-देवल का पूरुब में ओ पीपर - तरु-तरवाँ;
महाबीर बजरंग बली जी बाँटेलन बरदनवाँ
गउवाँ भर कऽ माल-मलइती हउवे उनकरि दायो;
जवना से जवान पावेलन जब्बरि बज्जरि काया ।

ऊ देलन हियाव हियरा के तन के तागति-फुस्ती;
जवना से जग में गउवाँ कऽ लउके कूवति-कुशती ।
उगरह गउवाँ देवी जी कऽ हवे अन्नन पुजारी;
रहि अन्नन दहके-चमके ले जिनिगी कऽ चितिगारी ।

चाहे धूरिहा मरदा होखे नेता भा पढ़वइया;
 चाहे कारोबारी होखे, होखे संत गवइया।
 देवी जी का छोह - मोह कऽ सभका हउवे असरा;
 ऊ नासेली कल से छन में महाकाल कऽ खतरा।

दुसगा जी कऽ दमके-घमके बादर मतिन नगारा;
 टनकेला घहराला घंटा गूँजे नभले नारा—
 जय जय देवी जय जय दुसगा जय जय हे जगदम्मा;
 परम जयन्ती मात रेवती जग-कल्यानी भीमा।

वाहिमाम् माँ ! पाहिमाम् माँ ! हम सभ रउरी पइयाँ;
 माई राउरि लमहरि बहियाँ चाही ओकरि छहियाँ।”
 आप रूप होई दरसन दिहली माँ रेवती भवानी;
 महावीर बाबा पूरनमल थपलन अमर निसानी।

रेती में रेवती - छोह से पसरे लागलि बसती;
 भारत का कोनन ले चहुँपलि एकरि सत्ता-सवत्ती।
 जे जहवाँ बा ते तहवाँ ले वोल्त बा—“महारानी;
 जय जय दुसगा देवी माई जय-जय शक्ति शिवानी।”

गंगा माई का रेती पर इहे गावँ रजश्रानी;
 जहवाँ राजेली महरानी जगदंबिका भवानी॥

जम्बूदीपे भारतवर्षे काशीखण्डे गउवाँ;
 गाजीपुर जनपद में एकरि हस्ती बा जम कउवाँ।
 जब कुवार कऽ दिन उजराला पाक-पवतिर होला;
 तब देवी जी कऽ गुन-कीरतन नवरातर गावेला।

डाँड़-डहरि कऽ गावँ-गली कऽ कनई-खाँच झुराला;
 सूँझ - चान - नखत - तरइन कऽ दीया तेज बराला
 गउवाँ का पच्छिवाँ लागेला बारह दिन रमलीला
 कवनो सालि परल ना गउवाँ एमे तनि को ढीला।

महतारी ममता कऽ मूरति

रमलीला मेला देखेलन मरदा आ मिहरारू;
हिन्दू - मुसलमान - ईसाई सभ होला मेलहरू।
भरत - मिलाप विजय दसमी के मेला बहुत जमेला;
राति अँजुरिया झरे फुलझरी होला खूब उजेला।

छूटे बान लूक जस लागे चमके छनिक छँड़ारी;
उड़े गुबारा नभ के लांघे नाही पावे आरी।
मेला में असबाव गँजाला दुनियां भर कऽ आके;
गहँकी मालि महँग कइ देलन उमराहे बटुरा के।

कतो बिकेले फूल - फलहरी साग-पात तरकारी;
कतो बिकेले लोटा - कलछुलि - खोरा - थारा - थारी।
कतो फार-फरसा-पहँसुलिया - हँसुवा - खुरपा - खुस्पी;
टंगा-टांगी खूब बिचालन कीनेलन ना हिप्पी।

मनिहारिनि कतहँ चूरी कऽ दर-दुकानि साजेली;
एँगुर - सेनुर - टिकुली - धाना पटहेरिनि बेचेली।
कतो सनूखि बिके दरवाजा चउकी आ आलमारी;
कतो बिचाला खुबहिन बकसा छुटका - बड़का भारी।

देखऽ देखऽ ऊ माटी कऽ मूरति जइसे बोली;
देखऽ बइठल धाकड़ बबुवा हँसि-हँसि अबहिन खेली।
अहा ! हूबहू सही सदेहे राम किसुन-सिव दुख्खा;
हऊ साढ़ हऽ हऊ गाइ हऽ ऊ कसबी आ मउगा।

उ हऽ मूस कबूतर हऽ ऊ देखऽ राधा रानी;
राम-लच्छुमन सँगवां देखऽ ऊ सीता महारानी।
खेलवनन का मय दुकानि पर देखऽ लइका - लइकी;
हकनहाक मूरति किनिहन सऽ ऊ ललचाइल सनकी।

कतो बिकाला रंग - रंग कऽ एक - एक ल छापा;
तकतिहान से देखेलन सऽ लइका खा गलगप्पा।
ब्रह्मा - बिसुन - महेश - सुरसुती लछिमी काली माई;
इहँ सभे का करतन होले इहवां नीकि कमाई।

रामदूत हनुमान लला कऽ देखऽ ऊ प्रभुताई;
 लिहले हाथ तिरंगा झंडा हऊ हुई भारत माई ।
 लिहले भाला हउवन राना ल तखवारि सिवा जी;
 देखऽ माला फेरत लउकत हउवन गुरु नानक जी ।

ऊ तुलसी रइदास भगत जी रामदास गुरु मीरा;
 देखऽ देखऽ चादरि बीनत हउवन संत कबीरा ।
 देखि वहादुरसाह जफर के कुर्वै सिंह के देखऽ;
 मंगल पांडे क्रान्ति पेशवा नाना साहब देखऽ ।

घोड़ा के सरपट्ट भगावति ऊ झांसी कऽ रानी;
 देखऽ देखऽ तात्या टोप समरधीर सेनानी ।
 सामी दयानन्द के देखऽ हउवन आर्य - पताका;
 विवेकानन्द भारत भुई कऽ हउवन माथा - टीका ।

देखऽ ऊ गोखले - तिलक के हऊ महात्मा गान्धी;
 इनिका करतन उड़ल फिरंगी आइलि अइसनि आन्ही ।
 भगत सिंह आजाद बीर कऽ मोछि कि हवे कटारी;
 दुसुभन का छाती पर दागे ऊ पिसतउलि करारी ।

महामना पटेल सावरकर गुरु गुलवरकर देखाऽ;
 महावीर गौतम के देखऽ जग गुरु शंकर देखऽ ।
 देखऽ नेता जी सुभाष के सहजानन सामी के;
 देखऽ लइकन कऽ जे चाचा ते नेहरू नामी के ।

लागल बा दुनियां कऽ मेला सभे बनल बा सउदा;
 कबो देवता कबहुँ नेता कबो बिकाला मउगा ।
 स्वारथ में आन्हर जे बनियां जेवन चाही बेंची;
 आपनि भूखि मेटावे खातिर सभके खाई नौंची ।

कतो बिकाला पोथी - पतरा कजरी - मेला घुमनी;
 सारंगा आ सदाविरिछ सँग तोता - मैना कहनी ।
 बिके बिहुलवा बिके भरथरी आल्हा बिके बिदेसिया;
 बहुत बिकेलन लाल बुझककड़ लइकन कऽ मनबसिया ।

महतारी मसता कऽ मूरति

५

सभका ले बड़ि ऊढ़ी मारे तब हनुमान - चालिसा;
निम्न सउदा बनल विकाला दुहगा मां कऽ खीसा ।
मर-मिट्ठा कऽ एक-एक ले लउके सजल दुकनियां;
बेंचत-बेंचत अगुता जालन थाकेलन सभ वयियां ।

मोहनभोग इमिस्ती - लड्डुवा - लवंगलता - रसगुल्ला;
पपड़ी - पेड़ा - पेठा - बरफी कऽ लउकेला गल्ला ।

गुल जामुनियां - खसता - खाझा ताजा बनलि अकवरी;
बिके रेवतीपुर कऽ कोंवड़ी सुन्हकी - सुन्हकी टिकरी ।
कतो बिकेले चरखा - चाकी कतो कहँतरी हांडी;
कतो बिकेला पनिहां - पलरा तरजुई कऽ डांडी ।

कतो हवाई चप्पल चमके कतो प्लास्टिक पनहीं;
अब तऽ कालापानी पवलन खरपा कठिन कठनहीं ।
गिरहत्त सभ चीझु विकाले कीनलेन जोगाड़ी;
ई गिरहत्त करेलन घर कऽ सभ बनवस्त अगाड़ी ।

मेला का बिक्री में अबले पान बनल बा राजा;
धूमति चाह गरम पटरानी सभवा एकरि परजा ।
कतहीं कुश्ती - दंगल होला दुपहरिये फुटबलवा;
रतिया में नाटक-ओटक कऽ होला हलवल-गलवा ।

जब धरमुहँ सउदागर होलन पतराला जब मेला;
ऊ विद्या कऽ वैभव सभ के लम्मे ले लउके ला ।
बरम बवा कऽ धाम एनिँ संस्कृत विद्यालय बा;
नेहरू विद्यापीठ एनिँ कन्या शिक्षालय बा ।

कतो विकास-भवन सोहत बा कतो पुलिस कऽ चउकी;
सावन में झूमरि कऽ होले एन्ने छउका-छउकी ।
ई गउवां खेले बरगत्ता सावन में झूमरिया;
झूमरि में एकरा सोझां ना केहू काछे जँघिया ।

एन्ने खुलल महाविद्यालय असपताल नर-पशु कऽ;
 एन्ने हलचल - हल्ला होला जीप-कार-ट्रक-बस कऽ ।
 चाह-पान-फल-फूल बिकेला टिकरी-सरबत-लस्सी;
 एन्ने रँगवरिसेला अइसे जइसे लहुरी कासी ।

जोगीवीर बवा कऽ वनवाँ गउवाँ का उत्तर में;
 जेकरि लकड़ी काटि लगावल कथो न केहू घर में ।
 चिलबिल - डेला - मकर तेनवाँ - पीपर-पाकड़ि-आछी;
 अकवन-बँडहर-गूलरि-सीसो-सिरफल-सइजन गाँछी ।

कतो कदम्ब बबूर बइरिया कतो बाँस बऽ कोठी;
 जइसे वन-जीवन खातिर ई प्रकृति वनबलसि कोठी ।
 भडँसा-साँढ़ रहसु वनवाँ में हुंकड़ि उखाढ़ सु माटी;
 कतने भारी-भरकम दिग्गज कतने नाटा-खूँटी ।

फूँका - फूँकी खेदा - खेदी होखे अड़िके बजनी;
 दलके धरती ढरके पानी छिटिके लागे अगिनी ।
 कतो लेहँडे घुई रमावसु साधू बड़ बैरागी;
 दहकति घुई दूर ले लागे पाजावा कऽ आगी ।

जटाजूट ऊ बान्हसु मथवाँ भसम रमावसु तनवाँ;
 लागसु ऊ सिवसंकर बावा बस में कइले मनवाँ ।
 बाबा सामदास कऽ नउवाँ अवले वनल कहानी;
 उनुकरि कुटिया ओ साधुन कऽ अवले ठाढ़ि निसानी ।

ए कुटिया पर धनुष - जग्य कऽ कहियो लागे मेला;
 जरे मसाल गवा रामायज होखे बहुत उगेला ।
 बुढ़ऊ महादेव कुटिया ले किछुए पच्छिवाँ सोहें;
 ऊ अड़भंगी अवडरदानी सगरो जगके मोहें ।

कुटिया ले किछु लम्मा पूखव हउई काली माई;
 असुरन के ई करत रहेली रन में राई छाई ।
 लघु भध्यम विद्यालय हउवे ए कुटिया का सटले;
 ए जेदार में ई शिक्षालय महटर हउवे भरले ।

महतारी समता कऽ मूरति

७

गउवां का पूख में पूर्वी प्रारंभिक पाठसाला;
ओने गउवां भर कऽ सम्मत साली-सालि फुंकाला ।
आवेला फागुनवां गउवां - माथे नाचे फगुवा;
नाहीं अउरी काम सिराला कुसिह गिरहत्ती घलुवा ।

बरिसे रंग फाग गावे कऽ सभका लेले बाई;
जइसे साम रंग में बूड़लि बेसुध मीराबाई ।
ढोलक - डफला धुङ्के - गरजे झनके झांझ - मजीरा;
होरो - चहका जमे जुगीड़ा हो हो होई कबीरा ।

रंगवा से रंगि जाले वखरी-दुवरा-रहिया-खोरी;
रंगि के तन - मन झूमें - नाचें गावें गुइयां - गोरी ।
सम्मत फूँके का तिथि के सभ रतिया में बटुराला;
संग-संग गाइ-वजाइ बरिस के वितवेला मँगुराला ।

साइत पर सम्मत गोसाईं लेलन अगिनी - सेज्जा;
टोल - गोल बटुराला नभूले गूँजे ला सुर-वाजा---
बारह मास कऽ सम्मत साईं पँवलनि आपनि पूजा;
उपधिया संकल्प करवलन दिहलन अगिनी-सेज्जा ।

फुल भभूका लवरि अकासैं चिता भइलि जरि राखी;
गइलन एक बरिस जिनिगी कऽ पंडित जन सभ साखी ।
सम्मत साईं खुद जरिमरि के जगके दिहलन जीए;
रचि - रचि के पूवा-सोहारी दिहलन पकवे खाए ।”

पहर-पहर कइ दिन बीतत बा बीतत मास - महीना;
बरिस जात जुग-जुग बीतत बाई गति रुकति कबो ना ।
बीत रहल बा बरिस पुरनका नवका अभ्यागत बा;
केहू कऽ बाहोति बिदाई केहू कऽ स्वागत बा ।

रितु-बरिस का पहिला दिनवां होला धूम-वड़ाका;
उड़े अबीरि फुलझरी छूटे फारे कान पड़ाका ।
गावेलन सभ गोल-गवइया जालन देवी द्वारे;
परम भगवती का दरसन से लागी नाइ किनारे ।

पूख दक्खिन का कोना पर ह संस्कृत-पाठसाला;
 जे ब्रह्मर्षि महाविद्यालय मानल-जानल जाला ।
 सत्य-ज्ञानातन धरम-करम का जहवां होले चरचा;
 जहवां सन्ध्या - वन्दन होला असम-भूति कऽ खरचा ।

गउवां का दक्खिन में हउवे मलहोरी कऽ बारी;
 दक्खिन पच्छिवैं का कोना पर हउवे ठाकुरबारी ।
 ए ठाकुरबारी का लग्गी हऽ तिजिया कऽ पुखरा;
 तीजि परब कऽ वड़ नहान हऽ ए जलनिधि का बखरा ।

गउवां का ए चउहददी में कवो रहे गउलछनो;
 जग - प्रवाह कऽ होति रहेली हरदम अइसन करनी ।
 गंगा माई का रेली पर इहे गावँ रजधानी;
 जहवः राजेली महरानी, जगदंबिका भवानी ॥

ई हऽ दंगल गावँ कि एकर गूँजे नभ ले बानी;
 एकर माथ - हाथ राखेली जग - जननी महरानी ।
 सांचो कऽ भारत उहवें हऽ जहवां हउवन गउवां;
 गउवैन में सरनामी हउवे ई रेवतीपुर गउवाँ ।

जहवां भारत तहवां वाड़ी एकर पोढ़ परानी;
 राष्ट्र - धर्म का संखनाद कऽ राखेली ऊ पानी ।
 चाहे हो कश्मीर कि दिल्ली हो पंजाब हिमाचल;
 हो बिहार बंगाल उड़ीसा असम आंध्र अरुणाचल ।

चाहे हो उत्तर प्रदेश भा नागादेश मिजोरम;
 हरियाणा गुजरात राज हो चाहे होखे सिक्कम ।
 मध्यदेश भा महाराष्ट्र हो केरल भा करनाटक;
 अंदमान भा पांडिचेरी कऽ जन - जीवन - नाटक ।

गावँ रेवतीपुर कऽ हउवे ए सभका से नाता;
 गउवां बोलैला-जय दुरुगा, जय-जय भारत-माता ।
 महादेश भारत में गउवां सिवंगर - दबगर हउवे;
 लोकतंत्र का महाजग्य कऽ मनगर होता हउवे ।

महतारी ममता कऽ मूरति

६

साढ़े पांच लाख गावँन में बोले एकर तूती;
गवँई संस्कृति फलकति जाले हरदम ऐकरा होती ।
ओनइस सइ इकानवे सन में गउवां कऽ आवादी;
साठि हजार ले ऊपर बढ़िके बन्हलसि आपनि गादी ।

गिरहत्तन कऽ ई गउवां हऽ एहिजां खेती-बारी;
हिप्पी रहनि-सहनि से नाहीं कइलसि गावँ इयारी ।

एकर खान-पान हऽ निश्चनन गोरस-गंगा पानी;
फल हऽ आम मिठाई टिकरी कुल देवी महारानी ।
कुस्ता-धोती गमछा-पनहीं अउरी में हऽ सदरी;
ए सादा पहिनावा पर हऽ समगरहाऊँ पगरी ।

एजा रोजे-रोज बँचाला तुलसी कृत रामायन;
एक-एक ले बानी होले लागेला मनसायन ।
महानिरक्षर - साक्षर एके खुबहिन सभज्ञे - बूझे;
सभ के अपना धरम-करम कऽ रहता एमे सूझे ।

एजाँ जे अग्रे ले आई पाई मिठ्ठा - पानी;
ए करतब में चूकि भइलि ना ई करनी खनदानी ।
ई हऽ ऊ पलिवार कि जेमे केहू अतिथि समाला;
आव-भगति कइ दिल-दिमाग से ओके पूजल जाला ।

एकर हऽ पलिवार कि जेमे बहिनी-भउजी-भइया;
काका - काकी आज्ञा - आजी बेटा - बाबू - मइया ।
नाती - नतनी भाय - भयबहु कऽ अउरी कतने नाता;
गउवाँ का मनवाँ में अबले ई पलिवार समाता ।

पलिवारे पलिवार गँथाइल हऽ गउवां आपुस में;
एक साथ सभ सामिल होला-भोज-भात हाबुस में ।
उपरोहित-जजमान-व्यास-गुह-पवनी-मालिक - मुखिया;
सभ सभका से सटि रचले ह आपनि आपनि कुटिया ।

पट्टी - पट्टी कइ बटुराला एक पाँति में गउवाँ;
 सभ सभका से मिलि-सटि जाला जइसे बालक जउवाँ ।
 गावँन कऽ सरताज सुरेसन रेवतीपुर हऽ भारी;
 लाख ललित जीवन-फूलन कऽ गहकलि हऽ फुलवारी ।

फइलत बा रस-गंध हवा में सभकर हिय हरियर बा;
 इहवाँ पर्यावरन - व्याधि कऽ अबले ना नइहर बा ।
 बाबा पूरनमल का कुल कऽ ई हउवे करदानी;
 लम्मा ले थकियाइलि पसरलि उनुकरि रक्त-निसानी ।

गावँ रेवतीपुर कऽ लरि-जरि लम्मा ले पसरलिबा;
 कतने गावँन के जनमे के जेसे सोरि मिललि बा ।
 गांव शेरपुर साधोपुर हऽ ए गउवाँ कऽ कंछी;
 गावँ अठहठाँ उधरनपुर ना तनिको भिन्ने पंछी ।

हसनपुरा हरिहरपुर हउवे ए गउवाँ कऽ अंगे;
 इनिकर साँसि-परान जलेला ए गउवाँ का संगे ।
 बसुका - सुहवेल-गउराँ-पकड़ीं पजरें हऽ डेढ़गावाँ;
 कमसारो ना लम्मा बाटे पजरें नगसर-तिलवाँ ।

दक्खिन में पहाड़ का जरि ले फइलल हउवन गोतिया;
 सभ गावेली संगे - संगे कुल देवी कऽ गीतिया ।
 रन-वन में खरिखान खेत में जीयत-मूवत खानी;
 सभ सुमिरेला-“जय मां दुर्गा जय जय हो शिवरानी ।”

साँकरवार भुइँहार ब्राम्हनन कऽ ई गउवाँ गढ़ हऽ;
 विश्व-शक्ति मंगला भैरवी का भगतन कऽ मठ हऽ ।
 कबो पचीस हजार बोलि के जय-भोज जमकेला;
 जइसे महाकुम्भ कऽ मेला संगम पर ठकचेला ।

एक पाँति में सभ बइठेला भोजन - छाजन एके;
 एकतरे कऽ पुरवा - पत्तल होला आसन एके ।
 एक साथ खाए - पीए कऽ साथ रहे कऽ रपटा;
 एक साथ सोचे समझे कऽ एमे लागे लपटा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

११

एमे मानवता का समथल कऽ रस-गंध सुहाला;
 सभ का सँग सभ चले-फिरेला नाहीं तनिक बसाला ।
 गावँ रेवतीपुर का पूरुव राखत बाटे दूरी,
 सँकराडीह करहिया गियरांबा गहमर का ओरी ।

सांकृत गोत्री भुइँहारन कऽ ई हऽ डीह पुरनका,
 मउजा पथरा का सिवान में रगरा के बा छुटका ।
 गहमर का ओरीतर परिके होत जात बा दूहा,
 कादों दूहा मुहँ पर जग-जुग बान्ही कइसन हूहा ।

अब बा ओंजा अन्हरा कूआं रोवत पीपर ठूठा,
 फूटल ईटा-खपड़ा बिलखत सइ ना एजाँ सईठा ।
 ई हऽ गावँ-नगर कऽ जीवन ईहऽ महल अँटारी,
 रोजे वनत रहत बिगरत बा बिरवा-बगिया-बारी ।

जग-प्रवाह ले दूरकाल का सिर पर दुसगा माई,
 जग में नित्त बिहार करेली ई सभ बूझत जाई ।
 डिहवा का पजरां माई कऽ मन्दिर अवले हउवे,
 जान परत बा मां कऽ रहतब सत्य सनातन हउवे ।

काम-धाम जी मिसिर-बन्धु का सँग चलली ई माई,
 कुल-देवी ना पलखत परली उनुकरि करत भलाई ।
 फतुहावाद फतहपुर वासी चललन खोजे अड्डा,
 मिसिर-बन्धु आ एजे डललन आपन डेरा-डंडा ।

परमशंकरा कुल देवी के पहिले आसन देके,
 तब ऊ नाया डीह बसवलन छप्पर - छाजन छाके ।

कुल देवी का नउवां पर ई सँकरा डीह कहाला,
 पसरल कुल-खनदान गने में सभकर सिर चकराला ।

पवले रहल मिसिर-बन्धु ऊ अइसन लच्छन एजां,
 एको रोवां टूटी नाहीं चाहे कालो भिड़िजा ।
 'देखऽ देखऽ हऊ तऽ देखाऽ मुसवा डपटत बाटे,
 कहवां ले आइल बा बिलरा ओसे दबकत बाटे ।

हकनहाक हो बड़ा दाव बा ए घरती का कन में,
इहवां जेही लोटी - पोटी ऊ हारी ना रन में ।”
दूनों भाई बसलन इहवां चालू धूरहा - चाकी,
सभ सामान गँजाए लागल रहल न एको बाकी ।

किछु दिन बाद तीर्थयात्रा पर गइलन धाम मिसिर जी,
आइलि नउवति उनिए बसलन जनलन दुशगा-मरजी ।
खाली काम-मिसिर कऽ कुल-तऽ इहवां लागल पलुहे,
अइसन जिउ कइलसि वरगद-तर सभ के लागल धाहे ।

ए डिहवा कऽ सांक्रुत गोत्री वाम्हन हुउवन बघवा,
जिनिकरि झारि-मारि ना सहलसि रन में कवो मरदवा ।
काम मिसिर का कुल में जमलन पूरनमल जी राजा,
गावँ रेवतीपुर में कइलन निज वखरी-दरवाजा ।

इहवां ऊ नभ में फहरवलन आपन विजयी झंडा,
गुहरवलन—“शंकरा रेवती जय हो मां चामुंडा ।
जइसे सँकराडीह बनि गइल कुलदेवी से नाभी,
तइसे मात रेवती से बा ई गउवां सरनामी ।

जवन हई शंकरा भवानी तवन रेवती माई,
एक शक्ति बा रमति सभत्तर का केहू विलगाई ।
तवहूँ दुनियां का लकमि बा ई किछु कहती जाई,
अपना सर-सक्ती भर समझी अउरी के समुझाई ।

लगते पाँच बरिस हमरा के गइल उतारल बरवा,
इकरा बदे करहियां गइलीं थाकल बहुत सरीरवा ।
ओजां का देवी कऽ दरसन कइलीं पहिली तोरा,
माई समझवली हमरा के लेके अगना कोरां ।

“हमनी कऽ कुल देवी माई हउई वड़की जानी,
भइया, गावँ रेवतीपुर कऽ हउई छुटकी जानी ।
बचवा, कहे बदे के दुइ बा हउई एके जानी,
इतिकरि सिरजलि हऽ ई दुनियां हम सभ बेकति प्रानी ।

इहे शक्ति हउई सभका में सभ इतिकरि असवारी,
 ई बघवा पर चढ़ि गरजेली ले तरवारि दुधारी ।
 सभकर जनमल जीयल - मूवल ए देवी का हाथें,
 झूठे में हम-हम हँकड़त बा हम्रा - सुमा का माथें ।

ईतऽ कहत-सुनत सभ आइल हउवे बाति पुरानो,
 आगे अउर कहल का जाई कहिहन आगमजानी ।"
 हमरा से कबहूँ ना विसरे माई कऽ ई बानी,
 जेसे देवी कऽ गुन - गीता कहत-सुनत हम बा ।

धनि हऽ गावँ रेवतीपुर ई धनि हउई महरानी,
 जेमे बुढ़की मारे गउवां धनि ऊ गंगापानी ।
 धनि हउवन आकास पिता ऊ धनि धरती महतारी,
 जेसे जामति बढ़ति फरति बा जीवन-खेत-कियारी ।

जे जानत हऽ ए गउवां कऽ सभले बढि के पानी,
 धनि हउई ओकरि महतारी धनि हऽ जनम-जबानी ।
 गंगामाई का 'रेती पर इहे गावँ रजधानी,
 जहवां राजेली महरानी जगदम्बिका भवानी ॥



दोसरि उसाँसि

छने-छने सुमिरीलाँ हम माई ! तुम्हरा के

माई हाथ ध के हमके चलवले हई,
माई दुनियाँ में हमके बसवले हई,
माई रचले हऽ के जग बुझवले हई,
जग कऽ रंग-ढंग हमके सुझवले हई ।

उनकरि करनी ए हियरा में हवे लिखलि,
कबो विसरेले ना उनुकरि सेवा -टहलि,
जब बचपन याद तब ऊ आवेली याद,
वहि जा नेह-धारि मिले इमिरित कऽ स्वाद ।

ई सोना जवानी तब कउड़ी कऽ तीन,
जब बाजे ना माई कऽ वानो कऽ बीन,
पत्रलीं जीवन-जगत तबो हम हई बीन,
वेकलाइल मन जइसे बे पानी मीन,

हमरा बयसु वने वदे कइली ऊ खूब,
हमरा मउर चढ़े वदे कइली ऊ खूब,
दुलहिनी का अवते ऊ हो गइली दून,
जइसे कँगला का घर बरिसत गइल हून ।

माई हमरा के मुँछिगर बनवली हई,
माई दुलहिनि के गिहिथिनि बनवले हई,
माई हमनी कऽ दुनियाँ बसवले हई,
कुल्हि आग - पाछ हमके बतवले हई ।

माई मुवली जियरा कऽ लइकाई गइलि,
खेले - खाये कऽ कुल्हि मनुसाई गइलि,
माई सरग गइली हम हो गइली बूढ़,
हमारि उपटलि जवानी बुझति बा रूढ़ ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१५

माई गइजी हमार जीउ टूअर भइल,
जगती जंजाल में जीयल दुभर भइल,
जीवन चलत रही सभका जाए के बा,
जगत - धारा में सभका बिलाए के बा ।

ई छनभंगुर जगत ह संग छटवे करी,
ई कचवा हऽ रंग छन - छन उड़वे करी,
कहियो पिंजरा कऽ पंक्षी परइवे करी,
कहियो तनवां कऽ पिंजरा हिरइवे करी ।

माई दुखवा में तीहा धरवले हई,
पुरुषारथ कऽ पपीहा बनवले हई,
माई पुरुषन कऽ कहनी सुनवले हई,
इयाद में उनुका हमके जगवले हई ।

छने - छने सुमिरीलां हम माई तुहरा के,
देइ के जनमवां ई तनवां सँवरले हऊ,
ए मन तुरंग - सँग बड़ा दूर धवले हऊ,
दिहलू बिचार हम पूजीं माई तुहरा के ।
छने-छने सुमिरीलां हम माई तुहरा के ॥

राखेलू आंचरतर बेटा आ बिटिया के,
सेवेलू जान देइ खांटी आ घटिहा के,
सभ संतति एक भाव लागेले तुहरा के ।
छने - छने सुमिरीलां हम माई तुहरा के ॥

माथा टेके सभ केहू तोहरा चरनियां पर,
दांत तरे अँगुरी धरे तुहरा करनियां पर,
बारम्बार बिनइलां हम माई तुहरा के ।
छने - छने सुमिरीलां हम माई तुहरा के ॥



तीसरि उसाँसि

नेह-सनलि माई कऽ सूरति

रहि - रहि चेत परेले ऊ तिथि
कबहूँ ना भूलाये;
नेह - सनलि माई कऽ सूरति
सुस्ता पर छा जाले ।

जब आवेला मास खइतवा पक्ख अंजोर मधुरतिया;
रस-भीनलि मद-मातलि गमकति रस-रस बहे बयरिया ।
अमवाँ कऽ मउराइलि डढ़िया माथ झोरि के झूमे;
बन-बगिया में उमकलि कोइलि पिहिका-पिहिका घूमे ।

बाग-बगइचा बहुत मदाला कोंचेला जब महुवा;
भिन्सहरें जाला कटिया पर जब बनिहार घुर हुवा ।
मार ठहाका हँसत तरइन कऽ जब लागे मेला;
अँखियन कऽ असमानी दरपन बनि जाला अलबेला ।

भुइयाँ का लालन के डमिरित बाँटेनन जब मामा;
कनमनाइ जालन भुइँ कोखीं अँखवा छाहाँ-घामा ।
तब रंगी मन के थिराइ दे रमनउमी कऽ पूजा;
उधियाला फगुवइला कऽ रंग होला जप कऽ समुजा ।

बढ़त-बढ़त एकमिले बढ़ि के आवेले तिथि अटिमी;
रचि के लीपि-पोति आपन घर चमन करेलन अदिमी ।
नवतुन ठिल्ला-ठिल्ली-कुन्डा कोर-कोर बासनवाँ;
सुभ सुसतिक टँकाइ पावेलन आपन सुभ आसनवाँ ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१७

तवँल-तमतमाइल तन उनुकर तेज तरासल होल;
 पोढ़ अगहरिनि-जांगर-जल से सभे अवांसल जाला ।
 संझा माई के मलिकाइनि सँझवति देखावेली;
 अइसे जोति जगावत जग में लछिमी जी पइठेली ।

दुवरां - दुवरां घर - आंगन में उत्सव - दीप बराला;
 अपने धिचल अमनियां जल से कलसा-कोर भराला ।
 अँखियन का पुवरिन में लागे खाली लक दरसन के;
 सरधा-सुमन सँजोवल जाला सत-सुर सधे भजन कऽ ।

डेराली डाँटे डपटेली कसि के बड़की माई—
 "लला ! रंथ में परि जम जइव^{जा} अइहन बुढ़िया दाई ।
 हटि जा जा दुवारि छोड़ जा जनि छेकऽ जा रहिया;
 माई के पावँड़ा विछावति आवति राति अँजुरिया ।

मति अनोढ़ अनवादि करऽ जा नात कुफन मिलि जाई;
 माई कऽ जिउवा डहका कै के कल से रहि जाई ?
 मति मगहर रहऽ जा भइया ! माँ कऽ गुन गावऽ जा;
 उनुकरि जोति उगलि वउतरफा रहिया पर आवऽ जा ।

जग - माई का पूजा खातिर होले बड़तइयारी;
 कबहूँ गावेली सभ सगे कबहूँ पारा-पारी ।
 फरिच खदोनी में गमकेले मलहोरी कऽ माला;
 ललछहुवां पल्लो कऽ गुच्छा होला पुलुई वाला ।

बनल-बनावल गंध-धूप आ जव-रहिला कऽ दियरी;
 फौचि-फौचि के रंगलि-चपोतहिल सोहेदवनी-पियरी ।
 अउरठवा के घोनि-धारि के थप्पा मारल जाला;
 कइई दलपूरी सवाद के सोन्ह बनावल जाला ।

राति-राति भर जागि-जागि जव मिहराह गावेली;
 तब हमार हरहा मन कऽ गति सुहुताए लागेली ।
 फिरतऽ हमरा माई जी कऽ साफ रूप लउके ला;
 ऊ माता दाई कऽ गुनवां झूमि - झूमि गावेली ।

कतनी भूलवावल चाहीली
 ऊ छवि ना भूलावे;
 छोह-मोह-ममता कऽ मूरति
 सुस्ता पर चढ़ि जाले ।
 रहि-रहि चेत परेले ऊ तिथि
 कबहूँ ना भूलावे;
 नेह-सनलि माई कऽ मूरति
 सुस्ता पर छा जाले ।

नापल-तुलल मँझोला कद वा हियरा में गहराई;
 भीरि कपारे होवत बाड़ी गोहं-रंग गोराई ।
 छोटी-मोटी गँठि गरि बाहिन में बहुते पुरुसारथ बा;
 साधि-साधि दम धींचि रहल बा पस्त न मन कऽ रथ बा ।

अहोरात अहिवात अगोरति हथवां ललकी वूरी;
 ओहू ले अधिका सिवँगर बा मथवां रंग सिन्दूरी ।
 ए दधीच का हाड़-हाड़ में जव्वर जोर जवाही;
 दुरित - दलीदर - दुख-दानवता ए दज्जर कऽ घानी ।

चाकर-चुकर लिलार पटरिया किछु किछु झुरिया इलि बा;
 तनकऽ तुचा-वियाधि-आधि से किछु-किछु मरवाइलि बा ।
 विड़रि बरीनी आंखि-पुतरिया धुंधुवाइलि बाड़ी सऽ;
 नकिया में छुँछिया आ नथुनी पुरनाइलि बाड़ी सऽ ।

बाकस में सँचि-रचि के गहना-गीठो राखल बाटे;
 भागे - जोगे सादी - ब्याह पहिरल भावत बाटे ।
 बाजू - बँगुरी बिछुवा-पछुवा-हयकल हँसुली सिकरी;
 मनोहरी - मथटीका - अड़िया - ककनी - नथुनी-मुनरी ।

पायजेय बा फेरा-फुफुनी नकवेसरि करधनियां;
 कड़ा-छड़ा छागत झुमुका बा होखे खातिर कनियां ।
 मोनी में रचि-सँचि राखल बा कंठा-मोहर माला;
 ताग-पाट अबले बाँचल बा सभ पर बाटे ताला ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१६

झांपी में बा खानि-खानि कऽ बहतर धइल धराऊँ;
सरिया-सरिया के समवावल बाटे समगरदाऊँ।
भाव बनल बा ई तन-भूखन भोजन कबो जुटाई;
काम परी तऽ बन्हकी बनिके कुल कऽ लाजि बचाई।

मनसा बाटे ई धन लागी पतोहिया का हक्के;
एही से ऊ पहिरल जाता कबहूँ मोके-झोके।
लइकपने में गुदवा दिहलसि काकी एगो गुदना;
दाढ़ी बीचे सोहत बाटे नइहरवा कऽ सपना।

रंग जमावत बा बहियाँ पर ऊ चटकार गुदनवाँ;
हलरलि बा हरीहरी जइसे गहकल खूब सिवनवाँ।
बार-बार ई बार बन्हाता बान्हल जाला जूरा;
पूजत - पूजत माता दाई उजराता तम - घूरा।

मथवा मध्ये मांगि मँजलि हऽ बा सेनुर चटकारे;
कादों भोर-सूख कड लाली लहसति किछु उजियारे।
लिलराँ ललका एँगुर-टीका मंगल अईकल जाता;
दुपहरिया उड़हुल कऽ फुलवा पत्रराँ नाहीं जाता।

एसे तब बतियावति रहली बहियाँ खनकति चूरी;
ए सभ में अपनइती हउवे नाहीं हउवे दूरी।
एँगुर - सेनुर - चूरी आगे सभ सिंगार झूठे बा;
पति बरता अहिवाती खातिर अउर सउख जूठे बा।

ठकुराइनि तिहवार - परब पर पावन के रँगि जाली;
चधुराइनि से बन्हनू खोंची ए संतिर ले जाली।
लुंगा पहिरे जानसु माई करसु न पाढ़ि गुलामी;
मुल्ला पहिरे जानसु माई सहता हो भा दामी।

माई आँचर खूब संभारसु माथ ढकसु सारी से;
दबकल पावँ चलत ऊ निकलसु दुवरा-ओसारी से।
जब जब ओ तिथि के आवेली घर में माता दाई;
उनुकरि गीति सुनावेली ऊ मोरि सोझिया माई—

“निबिया का डाढ़ि मइया लावेली झुलुववा,

ऊ झूली - झूली नऽ,

खूब गावेली गीत,

ऊ झूली-झूली नऽ ।

झूलत - झूलत मइया का लागलि पीअसिया,

ऊ चलि हो भइली नऽ

मलहोरिया अवसवा, ऊ चलि हो गइली नऽ—

भोतराँ तूँ बाड़ू कि बहराँ हो मालिनियाँ !

तूँ एकाद बूने नऽ,

मोहीं पनियाँ पियाव, तूँ एकाब बून नऽ ।’

‘कइसे के पनियाँ पीयाई सौतलि मइया !

ई मोरे गोदे नऽ,

बानऽ बालक तोहार, ई मोरे गोदे नऽ ।’

‘बालक सुताउ मालिनि ! सोने का खटोलवा,

तूँ एकाद बून नऽ,

मोहीं पनिया पियाव, तूँ एकाद बून नऽ ।’

‘सोने कऽ खटोलवा मइया ! टूटि - फाटि जइहें,

ई बालक राउर नऽ

भुईँ लोटि-पाटि जइहें, ई बालक राउर नऽ ।’

एक हाथ लिहली मालनिजसइ गड़ववा,

ऊ दहिने हाथे नऽ,

सिधासने बइठवली, ऊ दहिने हाथे नऽ ।

‘जइसे के मालिनि हमरा के जुड़ववलू तूँ

ओइसे-ओइसे नऽ,

तुहारि धियवा जुड़ाउ, ओइसे ओइसे नऽ;

तुहारि पतोहि जुड़ाउ, ओइसे ओइसे नऽ ।’

‘धियवा - पतोहिया मइया ! घरवाँ बइठइबो,

हम अपने देहीं नऽ,

नगरे फेरा डलबों, हम, अपने देहीं नऽ ’

शिव-संरूप नीवि-कंछा पर जग-जननी कऽ झुलुवा;
झूलति बाड़ी माता दाई कसि के मारि पटैगवा ।
पिहिकि-पिहिकि के बान्हि-बान्हि सुर गावति बाड़ी गाना;
उनुकर ना आपन घर-आंगन ना केहू बेगाना ।

ऊ जग-जगनी सगरो भग-जग उनुकर वालक हउवे;
चाहे बड़का - छूटका होखो उनुकर पाइक हउवे ।
बाकी जग - झूला जे झूली ते थाकी - सहुताई;
रोजे खाई तबो भुखाई टिसुना नाही जाई ।

भूखि-पिमासि तपावे तन के चाहे मरद बधेला;
पौही - खाई जे तन पाई चाहे देव मथेला ।
झूलत-झूलत जग-जननी का आगलि तिकखरि तिरिखा;
हकसल-प्यासल जाइ पुकरली कइके किरिपा-बरखा—

“गावै-नगर कऽ सुमन सहेजत मालिनि ! कहवाँ बाड़ू;
सूखत गला गड़त बा काँटा बछिया हाली काढ़ू ।”
“भइया ! माफ करीं कोरा में बा जनमतुहा सुगना;
ऊँघत बा चिहुँकत-सपटत बा ई आगम-सुख-सपना ।”

“सोना कऽ खनहनि खटिया लऽ सुमन-सेज साजलि बा;
लाल सुतावऽ ए खटिया पर छोह-छान्हि छावलि बा ।”
“ई देखाऊ नरम खटोरा कतो टूट जो जाई;
लोटी लाल तोहार भुइवाँ धूरि चाटि रहि जाई ।

ए लालच का आसनवाँ पर माई मति ऊँचे दऽ;
सेत मेंत कऽ फूल बिछोना कबहूँ जनि सूँघे दऽ ।
भइया कऽ अरहवल-फुरमावल हरदम हमरा भार्ये;
ई ललना ई भइया बाटे देवी, रउरा हार्ये ।”

एक हाथ से झंझड़ निम्नत मालिनि तुरते लिहली;
सरधा-सहित सुआसन उनुके खइना हार्ये दिहली ।
माता दाई के सरेखली ऊ आपन हिय हीरा;
गइली भरिले अइली झंझड़ दिहली सजल कटोरा ।

पानी पीके माता दाई हो निहाल हुलसइली;
 कइ तोर गद गद गरवा से आसीसत न अवइली—
 “मालिनि ! तुहरा धीय-पूत कऽ भागि बनो सुखदाई;
 जइसे बा ई जिया जुड़ाइल उनुकरहिया जुड़ ई ।”

“माताहाई जीयत - जिनिगी हम न खटाइव उनुके;
 मिसि-दूध निजी बलबूते नित्त पियाइव उनुके ।
 मइया हमरा के तागत दऽ हम उनुके प्रतिपाली;
 अपना बचवा-बचियन के हम तन-मन-धन दे गाली ।”

जीयसु-जागसु ई प्रिउ सुगना भोगसु पुन कमाई;
 कबो परायन धन-वडलति से करसु न अग्रम सगाई ।”

खलत चलत चलि आवेले तिथि

कवहूँ ना भूलावे;

हमरा सुधि का आसमान में

बादरि बनि छा जाले ।

रहि रहि चेत परेले ऊ तिथि

कवहूँ ना भूलावे;

नेह - सनलि माई कऽ सूरति

सुखता पर छा जाले ॥

आके महारिनि डगा बजावसु आवसु मातादाई;

स्वागत में बोलाए लागे—“जय-जय माता दाई ।”

अगवानी में गाँवे लागसु माई गुन-गन-गाना;

गँजे लागे घरवा - आंगन औसारा मरदाना—

जय जय देवी जय जय माता आवऽ हमरा मन में;

आधि-व्याधि दुख-दुरित-दइतर मारेलू सँ रन में ।

आदि-अनादि संहामाया तूँ ई जग राउरि माया;

रचल-खियावल हरल-खिलावल कुलिह हऽ राउरि दाया ।

अहतारी समता कऽ सूरति

२३

तुहरे सोचत मातर सगरो दुनियां कऽ रंगरेली;
 होते कुरुख कतो ना केहू कवनो खेला - खेली ।
 हे जग जननी आवऽ आवऽ राजऽ तूँ आसनवाँ;
 हम बउरहिया नेम न जनलीं धइलीं कवैल-चलवाँ ।

सुर-मुनि मोहनि विश्व-विमोहनि हउऊ मातादाई;
 आनंद-सत-चित ब्रह्म रूप तूँ हउऊ माता दाई !
 सत्य-सनातन-सुन्दर-शिव-अज हउऊ तूँ अविनासी;
 जाति-पाँति बड़-छोट न जनलू तूँ सभके सुखरासी ।

तुहरा खातिर सभ समान हऽ संतति-संपति देलू;
 सभके भोग-जोग वाँटेलू सभके सन्मति देलू ।
 पूत कपूत न जानेलू तूँ मानेलू सभका के;
 आपन छोह-मोह बाँटेलू छुटका के बड़का के -

मदति सुसुखा में प्राणिन का माँ तइपार रहेलू;
 अपना कान्हा पर दुनियां कऽ माई ! भार सहेलू ।
 जहवाँ चहबू फूल उगइबू जहवाँ चहबू काँटा;
 जहवाँ चहबू प्राण बसइबू नातऽ मउवति चाँटा ।

चहबू उकठलि बेइलिया में गहगह फूल उगइबू;
 चहबू उजरल खँड़हरवा में दीवाली मनवइबू ।
 चहबू उगी अँजुरिया टह-टह नभ-धरती खिल जाई;
 चहबू ऊ अन्हार बढ़ियाई ई दुनियां ढमिलाई ।

जेके चहबू जन-धन देबू मइया, कइके दाया;
 जहवाँ चहबू तहवें जूरी गावँ-नगर कऽ माया ।”
 बारहो बरीसवा कऽ उकठलि बेइलिया;
 बेइलिया तरवाँ नऽ,
 मइया लीहली बसेरा हो, बेइलिया तरवाँ नऽ ।

‘कोंहरा कऽ पूतवा ! गरबवा से मातल,
 कलसा काहें ना ले अउवे, वेइलिया तरवां नऽ ?’
 ‘आजु का राति छिमा करिहऽ सीवलि मइया ।
 होत भिनुसार, मइया !

कलसा हमहीं लेके आइव, वेइलिया तरवां नऽ ।’
 ‘मलिया कऽ पूतवा गरबवा कऽ मातल,
 माला काहें ना ले अउवे, वेइलिया तरवां नऽ ?’
 ‘आजु का राति छिमा करिहऽ सीतलि मइया ।
 होत भिनुसार, मइया,
 माला हलहीं लेके आइव वेइलिया तरवां नऽ ।

जग जननी-गुन-कीर्तन माई बड़ा बेर ले कइली;
 उनुकर चरन-कँवल-सुमिरन-रस ऊँ छकि-छकि के पियली

कतनो हम भुलवावल चाहौं
 ऊ सुधि ना भूलाले;
 माता जी कऽ भगति-पुजइया
 सुखता पर चढ़ि जाले ।
 रहि-रहि चेव परेले ऊ तिथि
 कवहूँ ना भूलाले;
 नेह - सनलि माई कऽ सूरति
 सुखता पर छा जाले ॥

मिठका दियवा बारसु माई पाप पराए लागे;
 कोर-कलस जलभरि के थापसु भितिया थप्पा लागे ।
 दुखगा माँ कऽ रूप-सिरजना दवनी-पियरी सोहे;
 गंध-धूप वा भभकत फुलवा सभका मन के मोहे ।

गूर-मिलल भेंवल रहिला से खुइँछा भरसु सदाई;
 ए सुभ कमवाँ में ना चूकसु माई कवनो दाई ।
 गउवाँ कऽ ई सुच्चा किसमिस बान्हे रंग अंगूरी;
 एकर अपरमपार महातिम जानेली दलपूरी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

२५

तिहवारन-समहुत-उत्सव पर इतिकरि पूछि रहेलै;
 संत-चना का सरसंगति कऽ इतिपर छापि परेले ।
 सभ पूजा-विधि का लसेदमें रतिया भर गावल जा;
 दुरुगाजी कऽ महिमा-करतव मन में बइसावल जा ।

टहक अँजोरिया से पोतलि ऊ वखरी चहके लागे;
 जोगनि-मउगिन का रतिया भर जागल सपरे लागे ।
 अनगुताह लागें मनसायन सुरुगा बोले लागे;
 मस्त महकि धरती का कोखी बिचरे गमके लागे ।

तब माता माई का सोझाँ माई बइठसु नइके;
 अपने से तमाम पूजा ऊ सँवरावसु दुख सहिके ।
 गरम-गरम नी जोड़ा पूरी भोग लगावलु माई;
 मन-माफिक रूख-गंध-भोग के पावसु मातामाई

माई बड़ा बेरले नइके ओ असूझ चरनन में;
 जगदम्मा से करसु चिरउरी मन लगाई कीर्तन में—
 “हमरा घर का अगवरवाँ जा मइया ! जय जय बोलीं;
 हमरा घर का पिछवरवाँ जा मइया ! जय जय बोलीं ।

आजु महल में पइठीं मइया ! जय जय जय जय बोलीं;
 बाबू जी का पागरिया कऽ मइया ! जय जय बोलीं ।
 माताजी का आँचरवा कऽ मइया ! जय जय बोलीं;
 मोर भसुर जी का पागरिया मइया ! जय जय बोलीं ।

देवर का पगरी कऽ बोलीं देवरानि आँचर कऽ;
 जय जय बोलीं जय जय बोलीं जेठानी आँचर कऽ ।
 मोरा मालिक का पागरिया मइया ! जय जय बोलीं;
 ए वउरहिया का आँचर कऽ मइया ! जय जय बोलीं ।

पुतवन-धियवन-पतोहियन कऽ माई ! जय जय बोलीं;
 हमरा पसु-पलिवार-परानी कऽ माँ ! जय जय बोलीं ।
 जय जय बोलत अँगना घूमीं जय जय बोलत घर में;
 जय जय बोलत दुवराँ घूमीं घूमीं घरा-अघर में ।

पास-पड़ोस-राष्ट्र कऽ जय जय जग कऽ जय जय बोलीं;
 सभका पाछे हे जग माई ! हमरो जय जय बोलीं ।
 राउर पउवाँ धइले बानीं मोरि सीतला मइया !
 आपन हथवा मोरा मथवाँ धइ दऽ बड़की मइया !

हे माता ! जग-जननी ! ई जग तुहरा के पूजत बा;
 माँ ! जग का घर-घर में तुहरे जय-गनवाँ गूँजत बा ।
 मइया ! तुहार आदि-अन्ततऽ नाहीं पावल केहू;
 रिसि-मुनि-वेद-पुरान-मुरसुतो खोजल कवहूँ केहू ।

छन में भगतन खातिर माई ! नाना रूप धरेलू;
 माई ! महाशक्ति दुहगा बनि दुखियन खातिर अइलू ।
 ब्रम्हा-विसुन-महेश मनावसु मइया ! पूजसु तुहके;
 छोटलू-कटलू पीरि-भीरि तूँ हरि लेलू सकदम के ।

बेपतवार डाँड़ कऽ नइया घूमति बा मझधारां;
 ओमे बइठलि ई बउरहिया बूड़ति सरति अन्हारां ।
 नइया के तूँ पार लगावऽवानी बड़ा अथाहाँ;
 माई कवन नबनि जा निकसीं पहुँचत नइखीं याहाँ ।

हमरा कुल-जन-धन के राखऽ माँ ! हथवाँ का छाहीं;
 ना त, बे माझी कऽ नइया परलि रही मझधारां ।
 आधि-व्याधि हरि के वचपन के जीवन-दान करऽ तूँ;
 नाहि-नाहि हे माता दाई ! कुल-कल्यान करऽ तूँ ।”

ओरें महरिनि डगा बजावसु तम महिषासुर जूझे;
 हो अँजोर माता दाई कऽ पुरहरि पूजा पूजे ।
 चहचहाइ के चटक चिरइया चइता लागसु गावे;
 नवरातर कऽ पाठ पूजावे पाडे लागसु धावे ।

कूदि-फानि के खाए लागसु लइका छनुई पूरी;
 पवनी-पँजहर लेवे धावसु खाएक-रूप मजूरी ।
 देवी माई का मन्दिर पर लागे जमके मेला;
 माता दाई का दरसन के टूटे जन कऽ रेला ।

महतारी ममता कऽ मूरति

२७

बैठे इकन्नी बैठे दुअन्नी पइसा बैठे अघेला;
 बैठे चवन्नी बैठे अठन्नी ऊ बुटवलियां डेला ।
 रुपया-पइसा नोट बँटा जा देखे खातिर मेला;
 अदिमिन कऽ सागर लहरा जा होखे ठेलम-ठेला ।

माई देसु ठनठना के जब नगदे एगो रुपया;
 हम तऽ बड़ाघघाके लेई ऊ चानी कऽ रुपया ।

जब-जब आजु लगेला मेला
 ऊ सुधि जा भूललि;
 माई का सुधिया कऽबुनियाँ
 अँखिया में छा जाले ।
 रहि-रहि चेत परेलेऊ अतिथि
 कबहूँ ना भूलाले;
 नेह-सनलि माई कऽ सूरति
 सुसता पर छा जाले ।



चउथी उझाँसि

माई रहली नेह-मसीहा

सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ।

अपना नेह-उदर में ढोके
जनमवली महतारी;
हमरा 'किहीं-किहीं' कइली पर
अगरइली महतारी ।

उनुकर हियरा कुढ़ियाइल जब
बजलि फूल कऽ थारी;
उनुकरि पालगगी घर-घर में
चहुँपवलम घरबारी ।

सऊरी क कुल्हि तल-तवालति
बिसरवली हुलसइली;
गतर-गतर होके निहाल ऊ
फूलइली दुनिअइली ।

सोहरि रोज गवाइलि घटन—
घंटन हँकड़ि-हँकड़ि के;
अवनी-पवनी के मुँह-मागल
नेग दियाइन हँसिके ।

बाम्हन-बिसुन पूजली माई
भारी भोज करवली;
ऊ भयवद-खातिरदारी में
नाहीं ओज करवली ।

हमरा जोग-छेम में हरदम दान-पुन्न ऊ कइली ।
सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ॥

महतारी ममता कऽ मूरति

२६

बचवा कहली बुचिया कहली
 भइया बाबू कहली;
 लाल-लाल कहि-कहि हमरा के
 गरबा से लपिटवली ।

मलवा-मुतवा बोइ-घाई के
 अबटन-भाँवट कहली;
 मीसि-मीड़ि के तेल लगा के
 बल-सुघरावट दिहली ।

हमके देखि बकइयी घींचल
 मुसकइली बोलवली;
 हाथ पकड़िके चले सिखवली
 कोरवाँ ले दुलारवली ।

कोरा में ले देखावसु ऊ
 नभ में चाना मामा;
 बाड़ा में ऊ कबो घुमावसु
 हमके घामा-घामा ।

हम ना पीहीं मुँह बिजुकाई
 अरियाई छतिया के;
 तब ऊ मामा के गुहरावसु
 झुड़ये ले बतिया के—

“चाना मामा आरे आवऽ
 पारे आवऽ थावऽ;
 नदिया का तीरे हे मामा !
 हाली-हाली आवऽ ।

दुध-भात से भरल कटोरा
 सोना कऽ ले आवऽ;
 बचवा के तू खूब खियावऽ
 हमरा दुवरी आवऽ ।

महतारी मसता कऽ मूरति

आना मामा ले अइलन ई
 थानेतर कऽ दुधवा;
 होवऽ मरदभितरड बहादुर
 पीके ई इमिरितवा ।

घुटुर-घुटुर पीयऽ तूं बढवा
 थानेतर कऽ दुधवा;
 तूहीं छउके लगवाऽ बचवा !
 छउके जइसे बछवा ।

जब सिरकमभर दूध पीहीं हम
 माई पावसु तौहा ;
 हमरा के बर साफ बुझाता
 रहली नेह-मसीहा ।

पीके दूध कबो चुहुराई
 माई कऽ हम मुहवा;
 झूमत चाटत सूँघत हमके
 ब्यावसु कबो दुवरवा ।

ऊ देखावसु भाकत बछर
 चीगोऊत अँगनइया;
 ऊ देखावसु पागुर मारति
 ठाढ़ि चरनि पर गइया ।

हिकभर दूध पियावल चहली
 हमरा के ऊ माई;
 महेँटियाइ के बहेँटियाइ के
 हम कतनो कतराई ।

कबहूँ लोमे गूर मिलावसु
 कबहूँ मिसिरी चीनी;
 हमके कबो छोहाइ बोलावसु
 कहि कहि मुन्ना-मुन्नी ।

अहतारी समता कऽ मूरति

३१

भागी दउरीं कबो लुकाई
पछियावसु हमरा के;
झपटि दुबुकि के कोरा में ले
पुसिलावसु हमरा के—

“ना पियबऽ ई दूध तऽ होबऽ
मरकट जइसन भइया !
ना तुहरा के कबो बझइहन
बाबा बाबू भइया ।

टोलाभर का सभ लइकन में
तूहीं अब्बर होबऽ ;
बनिके जब्बर बघवा तुहके
सभ दे मारी, रोबऽ ।

जब कबहूँ परलन हमरा के
गोरसवा कऽ टाना;
तब माई का ना घोंटाइल
मुदबिद एको दाना ।
मोकाँ-मोकाँ माई हमके
हित कऽ बाति बुझवलीं;
खानि-खानि कऽ खेलवनन के
देके खूब बझवली ।

कतनो हम सनुके उबिअवली, ऊ नाहीं अउँजइली ।
सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ॥

घर कऽ काज-अकाज सँभारत
रहसु बझावति हमके;
कतनो काम करसु ना अव हे
रहसु निहावति हकके ।
बाबू का मोटा सोटा कऽ
हमके दिहली घोड़ा;
नीकहन तुबतुबवलीं ओके
मारि-मारि के कोड़ा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

नरिया - पटरी जोरि - जारि के
 बनववली ऊ गाड़ी;
 ओपर माटी दोबलन इहे
 गाड़ोवान अनाड़ी ।

बहुते मान - मनवती देवी—
 देव पुजइया कइली;
 झरवा फुँफवा के हमरा के
 जंतरिया बनववली ।

अपना तन कऽ खादि बना के
 ऊसर के उपजवली;
 हमरा खातिर खून - पसेना
 पानी मतिन बहवली ।

हिस्ट - पुस्ट देखत हमरा के
 उनुकर जिया जुड़ा जा;
 उनुकर मुट्ठी भर कऽ तनवां
 सइ मुट्ठी कऽ होजा ।

अपना मुट्ठी भर हड्डिन पर
 कुल - पलिवार सँभरली;
 अगिया धुआँ - धुकुन में जरली
 लोहा - पत्थल सहली ।

ऊ तऽ सउख सिंगार न कइली
 करतब खूब सजवली;
 अपना जांगर का थाती पर
 बचवा के बइठवली ।

गाढ़ समे निगिचां बइठा के
 भाग - पाछ समुझवली;
 परल अथाहां, बूड़त हमके
 ऊ थाहां चहुँपवली ।

महतारी ममता कऽ मूरति

अपना दुख के दुख ना जनली
हमरे दुख के जनली;
टेकवे बदे हमार पलंजर
दुबरइली झँवरइली ।

कबहूँ सरग बदे ना सँवली
घरम - पुन्न कऽ थाती;
हमरा बढ़ती में जब लागलि
उमगलि उनुकरि छाती ।

जग कऽ तीत - मीत सभ सहिके
माई हमके वलली;
अपने हवा - बतास झेलि के
हमके नित्त बचवली ।

जब - जब हमरा आस आ गइलि
गरवा ले लपिटवली;
सिर सुहरा के आंसु पोछि के
घाव हिया कऽ भरली ।

संतति संतिर सभ से जुझली
बाघिनी बनि के माई;
संतति संतिर लोहालिहली
दुरुगा बनि के माई ।

संतति संतिर सरबस फुँकली
ना कइली कुलवारी;
संतति संतिर पइया भइली
बेचारी महतारी ।

जरब • उरेब माथ पर हमरा
नाहीं आवे दिहली;
लोके बदे कपारे अपना
अगिया - पानी लँघली ।

भवरिलत कबहूँ हमरा तन पर
जो भाइलि हलकानी;
महावीर बनि कवनसंजीवन
ले भइली, का जानी ?

हरदम उनुकरि साधि रहे हम
फूलीं फरीं कमाई;
उनुकरि कोखि उजागरि कइ के
कुल - मरजाद बढ़ाई ।

हम कबहूँ ना जनलीं अपना
खातिर का ऊ चहली:
जब माई कहि के गुहरवलीं
गेना मलिन फुलइली ।

वहरांले जब आके मां का
पावें माथ झुकवलीं
तब-तब उनुकर जिबरा जनलसि
सरग - खजाना पवलीं ।

जब तन थाकल मन कदराइल
मथवां हथवा घइलीं,
अँगना का खाटी पर बूड़
उतिराए हम लगलीं ।

तब आके माथा सुहरवली
मन के ढाढ़त दिहली,
हमरा तन पर हाथ फेरि के
ऊ आहस हरिलिहली ।

कहली—“उटठु, बइठु देखिले
दुनियां हऽ अड़भंगी,
एँजग केकर के बा, भइया !
सभ स्वारथ कऽ संगी ।

कम खा परल रहऽ गम खाके
 कहियो तऽ दिन लवटी,
 जे शिक्षिकारत दुतकारत वा
 ते पूजे के झपटी ।

होके मरद भीरि परला पर
 जो अइसे कदरइबऽ,
 बीर - भोग प्रिउ बसुन्धरा-सुख
 बेटा, कइसे पइबऽ ?
 मन मति कांच करऽ तू अइसे
 तनी हियाव दिखावऽ,
 कुस - कांटा - रुख काटि-कूट के
 बन में मांगुर गावऽ ।

ई पलिवार - पलंजर तुहरे
 खातिर ढोवत बानी,
 खर जीउतिया ब्रत रबि-मंगर
 तुहके भूखत बानी ।”
 देके मजिगर भोजन माई
 तब मन के पोल्हवली,
 दे - देके परतोख जलावन
 पोरुख - आगि जगबली ।

हँसी - खुसी हमरा दुखवा के बरियाई बँटववली ।
 सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ॥

छेलि - खालि के कूदि छानि के
 सांझि अबेरा आई,
 दालि - भात रोटी - तरकारी
 बनल - बनावल पाई ।

ठाढ़ि बारि कऽ गहिर फुलहिया
 यारी में हम जेई,
 छोंक लगवलि खूब बघारलि
 सोन्ह दालि हम लेई ।

कबो खियवली हमरा के ऊ
 धिकलि - धिकलि हथरोटी,
 कबो सोन्ह मनफेर बनवली
 मकुनी भउरी लिट्टी ।

ऊ चोखा चटकार बनवली
 मुहवां ले ना छूटे,
 जे जे-चीखल ऊ गँठियावल
 अपना मन का खूँटे ।

लीपलि-पोतलि ठहरि अभनियां
 दिहली पीढ़ा - पानी,
 ऊ ठेठा के जांगर कइली
 का का ना करदानी !

हमरा खातिर माटी कइली
 आपन सोना - चानी,
 हमरे खातिर आपन खुनवां
 ऊ कइ दिहली पानी ।

दर - दर उज्जर सोन्ह बनावसु
 घीउ भईसि कऽ माई,
 जाड़ा में घी - गूर खियावसु
 कइ - कइ के बरियाई ।

ऊ भरपूर पियासु हमके
 अवंटल ललका दुधवा,
 खाई रोटी संग दही आ
 रविया चाहे गुरवा ।

बाबू दुहसु भईसि तब पीहीं
 हम झुकि - झुकि के चोंका,
 माई महसु दही हम खाई
 लयनू कऽ बड़ ढोका ।

महतारी ममता कऽ मूरति

३७

हमरा के ना खाए दिहली
 ऊ फुटहा बरतन में,
 हमरा के ना चहली छनभर
 ऊ देखल असगुन में ।

जवना खातिर मन ललचवलीं ऊ जीनिस जुटववली ।
 सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ॥

दउरि - धूपि के काटि - छपटि के
 कइके बेवत रोजे,
 खाए - पहिरे कऽ सुतार ऊ
 रखली हमके सज्जे ।

जब हम कबो कुनवनां गइलीं
 ना सकेर आ पवलीं,
 माई कऽ मन चिन्ता - मुसवा
 मुसलसि अवते सुनलीं ।
 विना सवांचल माई से जब
 कबहूँ गइलीं बहरां,
 धेनु गाई घर में अफनाइलि
 लैरू माके दुवरां ।

हमरा तन का माटी के ऊ
 कइली चमचम सोना ।
 हमरा खातिर भसम बनवली
 आपन तन कऽ सोना ।

सँचि-सँचि घइ के टोला भर कऽ
 बायन दिहली हमके,
 अपना मुहँ पर ताला दिहली
 ढांकन मन पर दे के ।
 जब - जब हम परदेसे रहलीं
 नाहीं रहलीं गउवां,
 माँ के ना मनसायन लागल
 घर - बाहर चउफलवां ।

जब ना देखसु ऊ हमरा के
 उनुकर हियरा हहरे,
 हउल फूँकि दे तुरत उनुकरा
 कमवां नाहीं सपरे ।

बरिस दिनन कऽ दिनवां सुस्ता
 आइल ऊ मसवइली,
 रोकि न पवली गर भर आइल
 अँखियन से लोरइली ।

वचवां का नेवरतीं धइली
 सँचि - सँचि सभ सामनवां,
 देसावर में कहवां पइहन
 भइया सभ पकवनवां ।

दूर देसले समे बिता के
 बहुरल उनुकर बकुवा,
 ऊ परोसली दलपूरी आ
 ठकुआ - रोट - मरदुवा ।

मुचवा घी कऽ बनलि सुहारी
 पूवा गुदगर गमके,
 देखत - देखत लरवा टपके
 लागे तोहर सभके ।

कबो बनवली लडुवा - लकठा
 खाझा - पेड़ा - टिकरी,
 कबो बनलि मोंछी - परेहिया
 बारा - बरी फुलवरी ।

जरा जरा के दूध बनवली
 जाउरि जइसे खोवा,
 कबो बनवली नुनहां पांपर
 गुरहा जइसे पूवा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

३६

कबो खियबली मीट अमावट
 ऊ विछुवा आमन कऽ,
 कबो खियबली ऊ महुवरिया
 अंगुरी महुवन कऽ ।
 बचवा के ऊ खिया-पिया के
 आपन हिया जुड़वली,
 बचवा का तन चढ़लिरोधनी
 देखि रोसनी पवली ।

बचवे कऽ मुहें देखत रहली छन भर ना सुहतइली ।
 सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरली ॥

रहे लइकपन लगीं सुता के
 काथा - कहनी कहली,
 हमरा के ऊ हँसा - हँसाके
 दिल कऽ कांटा कढ़ली ।

कबो गनबली माई कुल का
 पुरुखन कऽ सुभ नउवां,
 कबो बतबली आस - पास कऽ
 पूरा - पाटी - गउवां ।
 कबो बतवली केकर बेटा
 केकर पोता नाती,
 कबो बतबली केकर भयने
 हउत हो मोरि याती !
 के हऽ तुहार नाना - नानी
 के हऽ मामा - मामी,
 के हऽ बाजा - बाजी - बाबू
 के हऽ काका नामी ।
 के हऽ तुहार मउसा मउसी
 के हऽ फुआ - फुफ्फा,
 के बा प्रीति-प्रतीति निबाहत
 के बा फुलि के कुप्पा ।

के हऽ तुहार भाई - भयवद
 के हऽ तुहार हड़हा,
 के हऽ गंगा जी कऽ धारा
 के मइला कऽ गढ़हा ।
 टोल महल्ला कऽ इतिहसवा
 ऊ भरपूर उधरली,
 कहवां कइमे सभकरि जरिहऽ
 कइसे डाढ़ि बतवली ।

कादों ऊ जाने - अनजाने का का पाठ पढ़वली ।
 सपनों में हमरा के माई कवहूँना विसरवली ॥

माई हमरा बदे हजारन
 गो उछापन कइली,
 जाड़ा में ऊ खूब दनाउर
 ओढ़न - डासन दिहली ।
 जाड़ा में ऊ चिउरा - चिउरी
 कूटसु हुम्मा हुम्मी,
 बान्है में ऊ ढूँढ़ा - ढूँढ़ी
 रहली अजब महरमी ।
 दाना - दूनी तिलवा - तिलई
 राखसु जुगा - जुगा के,
 खेले कूदे जाए लागीं
 झोरी भरसु बुलाके ।
 गरमी का दिन में ऊ राखसु
 बड़का सोन्ह बतासा,
 बुड़ा - बुड़ा पानी में खाईं
 भगे भूखि आ तिरिसा ।
 छूँछे गरे कबो ना पानी
 हमके पीए दिहली,
 खर - सेवर कऽ चेत परा के
 मुहै में डाले दिहली ।

महतारी ममता कऽ मूरति

हमरा गुसवारी में लागलि आपनि देहि गलवली ।
सपनों में हमरा के माई कबहूँ ना बिसरवली ॥

सातो समुन्दर थाहल जाता अकासो में रथ चलावल जाता ।
देस-विदेस आ भूत आ आगम पास में लाके बसावल जाता ।
तबहूँ महतारी सनेह कऽ धुज सभका सिर पर फहरावल जाता ।
बा ई जगल बहुते बदलत तबो माई कऽ गुन ना बिसारल जाता ।
नेह कऽ नेम निबाह करें सभ माई का ऊढ़ी के केहूना मारल ।
धूई लगाइ तपाइ सरीर के माई का धूई के केहूना धाइल ।
खींचलि हऽ गुसवारी कऽ गांगि ई केहू बहादुर लांघिना पावल ।
ए जग में महतारी कऽ मोल न लागि सकल सभ लगाइ के थाकल ।



नरिया-पटरी जोरि-जोरि के
 बनववली ऊ गाही;
 ओगर माटी दोवलन इहे
 गाड़ीवान अनाड़ी ।
 बहुते मान-मनवली देवी—
 देव पुजइया कइली;
 झरवा फुँकवा के हमरा के
 जैतरिया बनववली ।
 अपना तन कऽ खादि बना के
 ऊसर के उजवली;
 हमरा खातिर खून-पसेना
 पानी मतिव बहवली ।
 हिस्ट-पुस्ट देखत हमरा के
 उनुकर जिया जुड़ा जा;
 उनुकर मुट्ठी भ' कऽ तनवा
 सइ मुट्ठा कऽ होजा ।
 अपना मुट्ठी पर हड्डिन पर
 कुल - परिवार सँभरली;
 अगिया धुआँ-धुकुन में जरली
 लोहा - पत्थल सहली ।
 ऊ तऽ सउख सिगार न कइली
 करतव खूब सजवली;
 अपना जाँगर का थाती पर
 बचवा के बइठवली ।
 गाढ़ समे निगिचा बइठा के
 आग - पाछ समुझवली;
 परल अथाहाँ, बूझत हमके
 ऊ थाहां चहुँपवली ।



पचवीं उसाँसि

माई चेत परेली

कवनो मास-महीना माँ हमरा से ना बिसरेली ।

चइत मास में सोन्ह-होरहा

भुंजवावसु माई जी;

मरिचा-नून लेइ के खाई

निकियावसु माई जी ।

अमराई में बड़ सरीसई

महुवावारी गमके;

गावें गावें मधुरे सुर में

चइता घाँटो जमके ।

चइत मास नउमी सुभ दिनवाँ

हउवे राम जनमवाँ;

रामा हो रामा कहि होला

रामजनम कऽ गनवाँ ।

नवरातर भर हमरा खातिर

पाठ करावसु माई;

पूजा-पाठ करे में लागे

पाँडे कऽ पढ़िताई ।

दुहगा-थाने लागे जमके

रमनउमी कऽ मेला;

खाई गरम जलेबी देखीं

खानि-खानि कऽ खेला ।

जब आवे, बइसाख बनावसु

माँ सिरफर कऽ सरबत,

लेत सवाद सयारे सोखीं

तिरपित हो मन पीयत ।

खुलल लगनि कऽ सुभ दुबारि ऊ
तिलक बियाह दिखवली;
हमरा के चनमुनिया दुलहा
बना बना सुख पवली ।

जब आइल सतुवानि परब ऊ
सतुवा ढेर जुटवली;
भिखमंगन में ऊ गुर-सातू
आ सतुवा बंटववली ।

माईजी कऽ ऊ गुर-सातू
हमके घेवर लागे;
उनुकर सतुवा-चटनी, मेवा
मतिन सबदगर लागे ।

जब आवे सतुवानि परब तब माई चेत परेली ।
कवनो मास-महीना मां हमरा से ना बिसरेली ॥

हिगुवाना पहलेज जेठ में
किनवावसु हमरा के;
फट-फट फारि-फारि के फारी
थम्हावसु हमरा के ।

रोहनियां अमवां जब सभले
पहिले चूवे सिप्पी;
घरवां आवे सभले अगते
हमहीं चाभी गोपी ।

अन्नपूरना धरती मां के
पूजै सभे किसनवां;
परिहथ-हरिसि-जुआठि सहेजे
खुंटहर अउर पसनवां

साइति पूछि करसु खेती कऽ
समहुत बाबू बाबा;
कबो कबो समहुत कऽ, पहिरीं
हमहूँ आबा - काबा

महतारी ममता कऽ भूरति

४४

माई हमरा कन्हिया राखसु
ऊ समहुतही गोजी;
देखतखिल के फुलवा होखसु
ऊ हमार सुख-खोजी ।

बरिसे लागे लूह, पियावसु
माई कवहूँ पन्ना;
होखे गरम, पसेना चूवे
हमके हाँकसु वेना ।

जब निचलावाँ दुपहरिया में
नाचे खर खड़खड़िया;
माई हमके घर में रोकसु
कइके बन्न किछड़िया ।

बिकठ भीमसेनी इकादसी
भूखसु बाबू माई;
हमरा के ना भूखे दिहलो
माई कइ बरियाई ।

आवे पाकल आम घमाइल
बीछसु भेवसु माई;
घोके देसु उमेरे हमके
ना करसु कोतहाई ।

होखे आम उमेर बनावसु
मोट समावट माई;
पूवो ले ऊ बढि के राखे
सुखद स्वाद सुघराई ।

भरभर भदभद चूवसु अमवाँ
जब असाहू अदरा कऽ;
गरदा गरे गगन हावा कऽ
मूवे धूरि घरा कऽ ।

४५

महतारी ममता कऽ मूरति

तव माई जी ढेर लगावसु
 ए बेटा का अमवां;
 बीछि-वरा के एक-एक ले
 सावित-सावित अमवां ।

मिठका बड़का आ करवइना
 लोढियवा मिसिरियवा;
 सेन्हुरिया बीजू आमन के
 देखत चूवे लरवा ।

बोड़ फेड़ आमन कऽ रहलन
 जइसे एगो वारी;
 एगो चूवे रासि लगे तव
 पुरुसा भर कऽ भारी ।

पानी खा के हरियराइ के
 पलुहस तखर - झाड़ी;
 आम खाइके लाल होइके
 मरदा मारसु ताड़ी ।

तव वजना-वजनी-बरगत्ता
 झूमरि होखे लागे;
 भीमसेन बजरंग बली कऽ
 ताड़ी गूँजे लागे ।

सुअरा कोना में जब भूअरि
 गझिनि बादरि लउके;
 पानी का सँग पसरे लागे
 हावा का सँग छउके ।

माई बरजसु-“जा जनि बहुरां
 आवत बाटे बरखा;
 अलअलाइ जलगिरी भूँपर
 सभकर भेटी तिरिखा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

६६

जानऽ जानऽ झूमरि वादरि
बरसावे ले पानी;
करिया वादरि डरवावेले
राखे ले ना पानी ।

बहति हवा भंडार कोन कऽ
आढ़कभर जल ढाही;
गावँ - गिरावँ जलेजल होई
पाई राह न राही ।”

जब बरसाति झूमरिके होखे
उमके गड़हा - गड़ही;
माई नाहीं खेवे दिहली
हमके नाइ कगदही

जब देखीलां नाइ कगदही माई चेत परेली ।
कवनो मास - महीना मां हमरा से ना बिसरेली ॥

जब उखमंजी जीउ घासि सँग
छेंकसु सुघरि डहरिया;
लावा - दूध छिरिकि नेवाधसु
मउगी नाग - पुजइया ।

तब सावन कऽ नाग पचइयाँ
मरद मनावसु झुटिके;
बरगत्ता वजनी झूमरि कऽ
दंगल होखे जमि के ।

लाल निंगोट छींट कऽ जँधिया
जो माई से मँगली;
लाल निंगोट सियवली दिहली
पलभर ना पछतइली ।

जय बजरंग वली कहिके जब
देहीं धूरि लगाई;
माई खूब ठहाका मारसु
हम बाजे के धाई ।

हँसिके बोलसु—का, रे वचवा !

अब तूँ होवे पाजी;

का अपना माई से केहू

बेटा कबहूँ बाजी ?

आवे पन्नढकउवा बहिनी

बान्हे हमरा राखी;

ओ छन माई कऽ दुख-चिन्ना

जरिके होखे राखी ।

सावन में सावाँ कऽ भक्का

टांगुनियां कऽ लाई;

भादों में कुकुड़ी कऽ उम्मी

खूब खियावसु माई ।

भादों में भरपेट भकोसीं

ऊ कटहर कऽ कोवा;

जइसे मिसिरी चासल पीयर

रंग चढ़ावल खोवा ।

जन्म अष्टिमी पर ऊ सँचली

हमरा के पंजीरी;

आवे तीजि जुटावसु रसगर

सभ पकवान अमोरी ।

देखत पंजीरी पकवनवां माई चेत परेली ।

कवनो मास-महीना मां हमरा से ना विसरेली ॥

चढ़े कुवार पितरपख आवे

पितर पावस पिण्डा;

चिन्हावसु तब माई हमके

गाथा जी कऽ पन्हा ।

नवरातर में टोना - जादू

जोग - जोम - भय लागे;

टुनहिनि कऽ जिउ-माख अँखिया

तुरत फुंकाये लागे ।

महतारी समता कऽ मूरति

४८

अँखिया फूँकि सरापसु-बोलसु
 गउवां कऽ सभ मउगी;--
 "एकर फूँकों दीदा-जांगर
 पुतवा - भतरा संगी ।

उफरि परो टुनहिनियां राखे
 ई मानुस से कानी;
 रहला पर डहकावति जाई
 ई तऽ अन्हरो - कानी ।"

माई ए कज्जाक नजरि से
 हमरा के बरकवली;
 टोना - जोग - साज-सजगरले
 लम्मा कई सुख पवली ।

मवरातर में लागे-लागे
 यउवां में रमलीला;
 मय जलखिला बनावसु माई
 जेय देखीं मेला ।

केरा खाई डमरु बजाई
 पिपिहिरिया पिहिकाई;
 बिजया दसमी के सरनामी
 नीकि मिठाई खाई ।

उतरा में खँडरिचि देखावसु
 मोरि सगुनही भाई;
 बिजयादसमी के देखावसु
 नीलकंठ सुख दाई ।

कातिक चढ़ते देवारी कऽ
 आवे भीरि कपारे;
 वेदरंग माटी कऽ बखरी
 सभ लागे सईहारे ।

छोपि छापिके लीपि पोति के
 सभ बखरी चमकावे;
 आपनि बखरी का चमकावे ?
 गउवां के चहकावे ।

महतारी ममता कऽ मूरति

सभ घर-कोना-अंतरा झारे
 अँगनइया ओसारी,
 गउसरिया दुवार के झारे
 ओरवनियाँ दुवारी ।

घर कऽ सुधधी मन कऽ सुधधी
 होखे सभ कर सुधधी,
 गउवाँ भर मे जोति जगावे
 खातिर होखे बुधधी

सज्जे सलिया कऽ पुरनाइल
 मिठका दियवा बोले—
 'बढ़ऽ जोति कऽ झंडा लेके
 तम पर धावा बोले ।

प्रभु, 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अब
 भागे दुरित - दलीदर,
 घरे-घरे सम्मति हो, बइठऽ
 दुअरा पर परमेसर ।"

अकसर अगतें आगे बढ़ि के
 ऊ फारे तम - हीया,
 तम - घूरा के ढाहे भिड़ि के
 उहे अमर जम - दीया ।

जगमग - जगमग नेह - जोति से
 गावँ देस सभ जागे
 नेह - जोति से तब अन्हार कऽ
 महा दलीदर भागे ।

सरबदई ले नेह - जोति ई
 हउई लछिमी माई,
 फिश् उनुका चरनन पर ई जग
 काहें ना झुकि जाई ?

महतारी ममता कऽ मूरति

५०

जब आवे देवारी, बारीं
हम माई सग दीया,
उपराजीं जगजाति-जोति कऽ
बढ़े बमकि के बीया,

बीया-बेंग रहे ना तम में
लागे कतो पराये;
महा-जोति कऽ बज्जर ओपर
आइ आइ घहराये ।

विचरे लागे दिव्य लोक में
माई जी कऽ हीया,
ऊ देवी - देवन नेवरती
बारसु घिवहा दीया ।

ऊ आंचर पसारि के माँगतु
कुसल - क्षेम घर भर के,
ऊ तऽ सुफल - बढ़न्ती माँगतु
हमरा जी - जांगर के ।

डगा बजा खेदाइ दलीदर
बहुते अन्हमुन्हारे,
'दइत-दलीदर निकरसु निकरसु'
कहि - कहि सभ ललकारे ।

सभ चाहे पइसार ईस कऽ
सदा भवन - मन भीतर,
जेसे रहो अँजुरिया मछ्छे
मानबता कऽ अन्तर ।

मिलि - जुलि जोति जगावे, खेदे
दइत - दलीदर फूँके,
गोधन पूजे में घर - गउवां
ताहीं रचिको चूके ।

घोर अमावस का अन्हार के
 पछियावे धकियावे,
 धरती माता का छाती ले
 पाप पहाड़ हटावे ।

गऊ - रूप धरती माई का
 सेवा पर सभ लूझे,
 सभ जाने उन्करि चरवाही
 भगवानो के सूझे ।

गऊ-बढ़न्ती जे ना चाहे
 ते हतियार कसाई,
 ओ घांखड़ा हिया में हउवे
 खुबहिन खोंटि - बुराई ।

मिहरारु खरकटलि भइलिया
 रगरि छड़ावसु मन ले,
 गरियावसु बहुतरे सरायसु
 खाली ऊपर मनले ।

आपन कुल-पलिबार-परानी
 कऽ अवगुन - कुस - छांटा,
 गोधन का सोझा कूटे सभ
 दे नूतर कऽ चांटा ।

मानुस ना मानुस-मलेछई
 पर मिलि के सभ थूँके,
 घर कऽ धन-असबाब-माल ना
 कूड़ा - करकट फूँके ।

भल मानुस का भलमंसी के
 सभ मिलि खुब असीसे—
 जोति जगा के सभे जगावसु
 जीयसु लाख बरीसे ।

महतारी नमता कऽ मूरति

५२

जग कऽ चलनि चालि देखसु मां
गरियावसु हमरा के.
एहू तरे सोन्हुला आगम
हथियावसु हमरा के ।

माई कऽ गारी - सराय ऊ
ऊ चीनी कऽ धरिया,
अबले चखत चलत हम बानी
ऊ इमिरित कऽ थरिया ।

जब आवे बड़की इकादसी
उसिनसु सुथनी - कन्ना,
छोलि-फोरि सिरवाइ खियावसु
ऊ कहि वचवा मुन्ना .

नेवरवा उखिया कऽ दिहली
अगते हमके गुल्ला;
कतनो के हू दाव लगावल
हम ना भइलीं उल्ला ।

कातिक का पूरनवांसी के
जब बाम्हन जेवसु जा;
माई जानसु अँवरातर ऊ
रिसि मुनिऐ आवसु जा ।

आग्यां पावल लइका लइकी
मचा देसु हउँजरवा;
जब मन चले भुखि जब लागे
लागे बहुते तरवा ।

होखे विजय परोससु माई
गमकति खीरि - सुहारी
लइका - लइकी सँगवां जेवसु
होखे ना दिकदारी ।

५३

महतारी ममता कऽ मूरति

एह भोज में माई का संग
हमहूँ दउरीं — धूपीं;
गगाजल हम झपटि चलाई
नाहीं झिझिकीं — झेपीं ।

भागे - जोगे पहुँचत मातर
फेहू आग्याँ पावे,
अवँरातर कऽ सुफल पाइ के
जीवन सफल बनावे ।

माई जी अवँरा - सूरन कऽ
डालसु चटक अँचरवा;
रोटी - भात दालि संग खाई
ले चटकार सबदवा ।

जब जब चटक-मटक खाईलां माई चेत परेली ।
कवनो मास-महीना माँ हमरा से ना बिसरेली ॥

अगहन में गवना - करनी कऽ
आवसु बायन फतने;
माई कउवा के चिखाइ के
देसु घधाके हमके ।

कबहूँ अमरुत भरि ओँड़चर्वा
लिहले आवे कुँजड़ा;
माई अमरुतवा किनवावसु
देइ जनेरा वजड़ा ।

टह टह गहकल बन-वेला कऽ
फूल जनेरा - लावा;
झोरी में मुहँ - फार भरसु माँ
खाई ले गुर नावा ।

भाती उसिनि सोन्ह भुँजवावसु
चुरमुर परमल माई;
रहीं भकोसत कई खलीती
होखे ना भरपाई

महतारी ममता कऽ मूरति

५५

जब आवे खरवास पूस में
 परे उमकि के ठाला;
 गाव - सरेहि सभे थरा जा
 होफे जाड़ा - पाला ।

हाड - फोड़ जाड़ा में माई
 देसु सोंठि कऽ लड़वा,
 कबो बनावसु ऊ महुवा कऽ
 लट पट लट्टा हलुवा ।

भूजि - खानि के ऊ हरदो कऽ
 मगदल सोन्ह बनावसु;
 हमके लागे बड़ा सवदगर
 बहुतीतरे खियावसु ।

कबो माँगीं कबो चोराई
 कवहूँ हम छरियाई;
 कबो - कबो अँचरा में लुकि-ढुकि
 माई के फुसिलाई ।

जब लउकेला पीयर मगदल माई चेत परेली ।
 कवनो मास-महीना मा हमरा से ना बिसरेली ॥

पूस - माघ में ठारे परिजा
 ठिठुरे गउवां - नगरी;
 तब चाउर - चिउरा कऽ लागे
 दउरे दउरा - दउरी ।

ओ सुनहट मे बिचड़ी रानी
 डालसु आपन डैरा;
 होखे सदाबरत चालू सभ
 पावें चाउर - चिउरा ।

‘जं जजमान’ बोलि ले बिचरसु
 बांभन - बिसुन - परानी;
 ओ रुरो में लउकसु कतने
 घर - घर अवहुर दानी ।

दही सजाव - गूर चिउरा कऽ
 भोज सराई होखे;
 जन - जन कऽ काया जुड़ाइजा
 मनवाँ अहथिर होखे ।

खिचड़ी के नहवावसु माई
 गंगा जी हमरा के;
 देहि पौछि के लुगा-फाटा
 पहिरावसु हमरा के ।

चिउरा - तिलवा कऽ लटकावसु
 ए गरवा में झोरी;
 संगी - साथिन में फँकियाई ।
 नाहीं कवनो चोरी ।

सफका चिउरा कऽ फाँका ले
 चर - चर कूँचि चवाई;
 कट कट काटि कुटुर कइ-कइके
 तिलवा के चुभुलाई ।

कतों घमघमा दुपहरिया में
 चाभीं चिउरा - दहिया;
 रतिया में धिउ-खिचड़ हमके
 खूब खियावसु मइया ।

हमके होत बहाल देखि के
 ऊ इनरासन पवली;
 परे न पावें भूईं पर पलभर
 ऊपर - ऊपर घबली ।

हमके सरग - तरइया आने
 झपटसु ऊपर भाई;
 कबहूँ ना तनिको गम कइली
 की बज्जर घहराई ।

अहतारी ममता कऽ मूरति

५५

माघ - मेघ का चले इयारी
 होवे बूना - बूनी;
 हम माई संग बइठि चूहानी
 खाई दाना - दूनी ।

आसमान में घुहसल बादर
 जब फाटे उड़िया जा;
 सगरो दुनियाँ थर - थर काँपे
 जब हावा सुरिया जा ।

हाथ - गोड़ ठिठुरे आ फूटे
 सानुष मारसु बुक्की;
 मरदा - मउगा - मउगी तापसु
 कउड़ बोरसी वड़की ।

माई घुट्ठी - बोरि दनाउरि
 गांती हमरा बान्हसु;
 पाला भइल हाथ - पउवाँ के
 सुहुरा के गरमात्रमु ।

परत ओहाँस - ओस - ठार में
 बरजसु बढ़ते हमके,
 जो देखसु कुहेल में हरकसु
 हाथ मारि के हमके ।

माई कबो अभाटाँ - खालाँ
 डग डाले ना दिहली;
 परल दुमार घासि दूसन में
 हेले नाहीं दिहली ।

बीते लागे माघ, बसन्ती
 झंडा जब फहरा जा;
 पठसलवाँ बिद्दा माई कऽ
 पूजा - पाठ ठना जा ।

५६

महतारी ममता कऽ मूरति

साइत - पूछि चले सभ संगे
 टूंगे जब कऽ बलिया;
 एक - एक मट्ठा घर आने
 कचलोहरि जब बलिया ।

बहुत हूब से दुष्प्रा जब कऽ
 हाबुस हविस भुंजा जा;
 वैश्वानर का हवन - कुम्ड में
 नावा अन्न हुना जा;

कइ नेवान घरे - घर घूमसु
 घर कऽ सभ परानी,
 आपुस में अँकवार - भेंट हो
 मरे दुसमनी - कानी ।

पालगमी - चीरंजी होखे
 हा हा - ही ही - हाँसी;
 सभ सभका से हँसिके बोले
 ना महुराइल गाँसी

हमरा के नेवान करे कऽ
 माई ढंग बतबली;
 हमरा के परनाम करे कऽ
 माई रपटा डलली ।

थपकि गरगरा जा ढोलक - डफ
 झनके झाँझ मजीरा;
 ओही दिन से समहुत होके
 जमके फाग [कबीरा ।

फरफरात फगुवासल फागुन
 फरीं मारत फउके
 चुल बुलात चिरई-चउवा-चित्त
 चारु ओरा—चहके ।

महतारी समता कऽ मूरति

भइसा - साई किरनु मंभुराइल
 बरि के फर ना फुनुगी;
 मउराइल हरिना ना हरिनी
 टोवनु टूंगनु टुनुगी ।

कावा काटि, काटि कइ-कइ के
 कुटिल काइया कउवा;
 कबिली का खेतन में—बाभे
 हरियर हरियर—लडुवा ।

सुगा कउवा उड़ि के जावनु
 फोकट मालि उड़ावे;
 अउरी का गादा - सूदी पर
 आपन भोज करावे ।

माई कबिली का खेमिन के
 निकियावसु तबराहे;
 डाली - डगरा के गादा से
 उमकावसु उमराहे ।

तावा भाइहर गादा लेके
 झौकि वनावसु घुवुरी;
 तब हम खाई कचरस पीहीं
 ना चाहीं किछु अउरी ।

महामहिम सिवराति परब पर
 टटका रंगल- सिवाला;
 जहवां होखे धरम - करम कऽ
 खुसबूदार मसाला ।

तहवां फहरे छाल भगीरा
 बड़ इकरंगा मंडा;
 बोमे लामलि कमहरि लग्गी
 नम कऽ नपुहा बंझा ।

अहतारी नवता कऽ मूरति

दरस - परस - असनान - पान करि
 षंगाजल कऽ गउवाँ;
 बोलि बोलि गंगा माँ कऽ जय
 जपत चले सिव नउवाँ ।

किरिनि फूटते सिव - मन्दिर पर
 'हर - हर बम - बम' गूँजे;
 अछत - गडगजल - फूल घतूरा
 बइरि चढ़ा सभ पूजे ।

धूप-धुवाँ का महकि - गमकि से
 गम-गम करे सिवाला;
 टनन - टनन टन - घन्टा बाजे
 हो कलिकाल दिवाला ।

साँझि सभे मन्दिर पर जमके
 सिव - बिनती हर - होरी;
 हिलि - मिलि गउवाँ साथे गावे
 खुले भाव कऽ झोरी—

“हे अड़बंगी अवढ़र दानी
 बमभोले हितकारी;
 दरसन दे दऽ दरसन दे दऽ
 बाबा जाटाघारी ।

का ले सेवा करीं बताव ?
 प्रभु तुहके का चाही;
 ए दुनियाँ कऽ किछू नियामति
 ना तुहारि मनचाही ।

घोड़ा हाथी रथ पालकी
 चाहत सभ घरबारी;
 बाकी नंदी बुढ़वा बरघा
 हऽ तुहारि असवारी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

छेना - खोवा कऽ ना चाहो
 तुहके सरस मिठाई;
 जे दुनियाँ के भाँग घतूरा
 तुहके उहे मलई ।

सचमुच नंग - घड़ंग जगत कऽ
 तूहीं हउबऽ नेता;
 तुहके पूजे ले ई दुनियाँ
 दे बयरि - बेल - पत्ता ॥”

“सिव मठ पर सोहे लाल धुजा ।
 कवना सिखर पर गउरी बिराजे,
 केवना सिखर पर बम भोला ।
 सिव मठ पर सोहे लाल धुजा ॥
 उत्तर सिखर पर गउरी बिराजे,
 दक्खिन सिखरें सोहें भोला ।
 सिव मठ पर सोहे लाल धुजा ॥
 गउरी का हाथे हरियर चुरियाँ
 सिवजी का हाथे भँग - गोला
 सिव मठ पर सोहे लाल धुजा ॥”

गरके ढोलक झनके झन - झन
 झाँझ झालि कऽ जोड़ी;
 साथे गावें गजब गवइया
 झोरि - झोरि तन - मूँडी ।

होखे तब आरती - गान सिव
 विश्वनाथ शकर कऽ,
 होते संखनाद भागे सभ
 दुख बलाइ घर - घर कऽ ।

घमकि उठे घौसा मन्दिर कऽ
 कलिजुग घौस बिगारे;
 बड़े धरम - बल करम-खेत में
 पाप - सैन्य संघारे.

महतारी ममता कऽ मूरति

६१

सिव रतिया के माई का संग
हमहूँ सिव के परिछीं;
ओही दिन ले बइरि पिउनियां
कीनी खाईं परिछीं ।

सिवरतिये ले लइकन का संग
हमहूँ गाईं चहका;
माई कऽ किमवावलि टमकी
बजा - बजा वे खटका ।

फगुवा कऽ गरहूँ सुर गूजे
लागे चारु ओरां;
तब हम कहियो गवले हउईं
चढ़ि माई का कोरां

उड़े अबीरि - गुलाल प्रेम कऽ
गउवां सगरो रंगि जा;
तब उगि के मन चान अँजोरिया
पुरहरि राति पसरि जा ।

कतने ढोलक - डफला बाजें
झाँझ बजें कइ - कइ गो;
बालक बूढ़ जवान बजावें
झालि बजें सइ - सइगो ।

फागुन का मलमस्त मास में
बूढ़ लगसु देवरवा;
गुगुयाँ गोरी कऽ फिचुकारी
रहली रंग बदरवा ।

चहका आ चउताल जमावें
जब रंगछट गवइया;
तब होरी कऽ राग कड़ावें
परपाटी चलवइया ।

चले न राग उठे सुर नाही
नवहा बनसु भवइया;
परल चकोही नाइ न निकले
धूनसु सिर खेवइया।

बदाबदी कइ गोल बत्ताके
होखे गजब गवनई;
प्रेम - प्रीति पर कबो चढ़े ना
हारि - जीति कऽ कलई।

जब यधुआइल किछु नवहन का
गला - फार सुर सूझे;
तब पुरान - दल खेलि खेलि जा
नक्की सुर में जूझे;

राति - राति भर जोर लगा के
गावसु मनगरा मरदा;
मुंह-फट रहि-रहि कबो उड़ावसु
फुहरकम कऽ गरदा।

उठे बसन्ती बर - बतास जब
गन्हाइल उधिया जा;
सलिया भर कऽ सभ मनहूँसी
बातिन में उड़िया जा।

रहे न कास - कुहेस कसाइल
नभ निरदंद निखारि जा;
उज्जर - उज्जर दिनवा लागे
जोति कऽ राति संवरिजा।

तन-मन-मइला - कीटि - कूट - कुल-
गउवा कऽ बटुश जा;
पूरनवांसी के ई सगरो
सम्मत - सालि फुंका जा।

बहुतारी ममता कऽ मूरति

६३

माई हमरा तन - मन ऊपर
 अबटम - नेह लगा के
 मीसि - माँड़ि के मइलि छुड़ाके
 झलकावसु हमरो के ।

अरे मइलि सम्मत अगिबा में
 हम हो जाई बंगा;
 म माई पोड़ बनावत गइली
 ए जास्या कऽ अना ।

सम्मत फूँके का असवनवा
 सभे खपरि बकिया जा;
 सभगरदाऊँ पगरी बहूले
 गाथे के छतिया जा ।

गोल बाण्हि के जोर लगा के
 जमे कबीर - जुगीया;
 हुम्मा - हुम्मी हो हरि - होरा
 भिड़े गोल कऽ जोड़ा ।

प्रेम - प्रीति का जोति - तेज है
 कलह - झगहार परा जा;
 बड़े हवा जब फुलनहुटी कऽ
 सेग - ब्याधि भहराजा ।

अस्ति सम्मत जतन - मनन हो
 पचना बलि कराही;
 पके मालबुवा बनदारि
 सब पर रीझें राही ।

माइ - भईसि का सुनवा जी कऽ
 सरलि कराही गम के;
 वाक कश्य का तेजी खातिर
 केहू जतने - पटके ।

होत बिहान गुलाबी रंग कऽ
 होखे लागे बरखा;
 मानुस का दिल से सुहाइ ना
 तनिको करिखी - करिखा ।

समकर तन - मन - चहुके - बमके
 हो किलोल - किलकारी;
 मरदो - मउगी हँसि-हँसि मारें
 रंग भरलि फिचुकारी ।

उड़े अबोरि कि नभ - धरती कऽ
 रंगि जा कुस्ता - सारी;
 मलें गुलाल लाल गालन पर
 राधा आ बनवारी ।

देवर - ननदी - भउजी बिचवा
 होखे गूढ़ मनोरा;
 जेहो हारे जिभिया चाटे
 घसके कवनो ओरी ।

दुअरी - दुअरी घूमि मरद - दल
 गावें हो - हो होरी,
 सदा अनन्द रहे ए दुअरी
 मोहन खेलें होरी—

“सदा अनन्द रहे इहि द्वारे, मोहन खेलें होरी ।

खेलत बान्ह के कस्तन कहइया,

खेलति राधा गोरी;

खेलति राधा गोरी, सबैलिया, मोहन खेलें होरी ।

केकर भीजत जोरा-जामा,

केकरि भीजति चोली ?

केकरि भीजति चोली, सबैलिया, मोहन खेलें होरी ।

अहताही ममता कऽ मूरति

६५

कृष्ण कऽ भीजे जोरा - जामा,
 भीजे राधा-चोली, सर्वेलिया, मोहन खेले होरी ।^{१२}
 धरजन पर चढ़ि के रंग ढाहें,
 सभ साँवरिया - गोरी;
 बूड़सु लोग - लुगाई सगरो
 भित्तिपा - रहता - खोरी ।

नावा उज्जर घोती कुस्ता
 नावा कुस्ता - सारी;
 सराबोर हों, रंग अबीरी
 बरसें जब फिचुकारी ।

माई हमरा के जुटवावसु
 नावा कुस्ता - घोती;
 ओ उज्जर बहतर में साजसु
 हमरा तन कऽ मोती ।

किनवावसु अबीर - फिचुकारी
 खूब चम्पावसु पूवा;
 हमरा खुसहाली में माई
 समझसु आपन फगुवा

जब-जब फागुन कऽ रंग बरिसे माई चेत परेली ।
 कबनो मास - महीना माँ हमरा से ना बिसरेली ।^{१३}

सूरज - चम्तर - गरहन कबहूँ
 कबनो मासे लागे;
 गंगा - तीरे तब नहान कऽ
 भारी मेला लागे ।

केहूँ गरहन में नहाइ लें
 केहूँ उगरह चाहे;
 गरहन - उगरह हुनो लम्भा
 केहूँ लीहल चाहे ।

भोम्हा - सिद्ध तेज कइ डालसु
 गरहन में मंतरिया;
 भूत - परेत - पिशाच - रोग के
 खेदसु दे जतरिया ।

होखे जोग - टोटका कसने
 देखत जिउवा भिरुखे;
 माई लइकइयां ना दिहली
 हमके छूवे - देखे ।

जोग - टोट कऽ चूरी - बउखा
 सेनुर - घुघुना - घुंडी;
 कम्मे ले दिखलावे लुगा
 सभ के ललकी झंडी ।

जान - सूरज कऽ संकठ टरि जा
 भागे राहु कसाई;
 बहिषारी पर विजय - पताका
 फहरा दे उजराई ।

हुंसी - खुसी का दान - पुष्प कऽ
 सदबद होखे लागे;
 नरकटई के सभ विधिकारे
 बदबद बोले लागे ।

"जन - जन सोना दान करऽ हो
 बाबू राजा रनिया;
 दऽ गरहन कऽ दान" बोलिके
 धूमसु डोम - डुमनिया ।

माई हमरा के नहवावसु
 पूजे सनकरि मनसा;
 हमरा हाथे दान करावसु
 बहतर - अनजा - पइसा ।

"दऽ गरहन कऽ दान" सुनीली माई चेत परेली ।
 कवनो मास - महीना मां हमरा से ना बिसरेली ॥



महाराजी नमस्ता कऽ मूरति

छठवीं उसाँसि

माई के ना कबहूँ विसरल

माई के ना कबहूँ विसरल आपन प्रिउ नइहरबा;
ससुरे बइठलि देखे लागसु बाबूजी लऽ घरबा ।

माटी कऽ हऽ भीति बराबरि
लीपलि - पोतलि रचिके;
गढ़लि निगइतन कऽ कतारि हऽ
ओपरि बइठलि जमि के ।

तारनि - तिरबन्नी कहले हऽ
कँहूँ माहिर थवई;
ठाट - बाट से ठाट भइल हऽ
निसध हउई कोरई ।

नरिया - पटरी से चउतरफा
छावलि बोड़ि हवेली;
जहवाँ अँगनइया में आवसु
खेले सखी सहेली ।

पूरब मुहँ कऽ सदर दुअरिया
पर लटकलि हऽ दारही;
जेमे सुइताले सबराहे
सुअज किरनिषाँ राही ।

जाड़ा में लागेला ओमे
तब लइकन कऽ मेला;
एक-एक से बड़ि के होला
अजमुत खेल समेला ।

गाँती बहने हाथ जोड़ि के
बालक करतु चेरडरी—
'दइव ! जाइ से तन कठुआता
करऽ घाम तू बउरी ।

दबइ ! दबइ ! ए सुगनन के दऽ
नीक निठोहर घमवाँ;
ई सभ सुगना बार-बार प्रभु
बिनवत करत सलमवाँ ।

केहू छीके केहू भाखे—
'ठाकुरजी ठाकुरज' ;
तारू सुहरा भाजी बोलसु—
'बचवा ! बोलु सतन जी ।'

खात घमनियाँ भाजी झारलु
बान्हसु कसि - कसि चोटी;
तब नन्हका आँसू ढरकावे
भा पावे जब गोटी ।

खा - पीके सभ हूँदा - हूँदी
चिउरा - गूर - बतासा;
आगे का चउकलवा में तब
जमके खेल - तमासा ।

जब लइका सतघरवा खेलसु
लइकी खेलसु गोटी;
कबो - कबो खेलत अपनन में
होखे झोटा - झोटी ।

कबहूँ होखे ओका - बोका,
होखे चिउँटा - चिउँटी;
कबहूँ जमके आँखि-मुदवलि
हो जा झोटा - मोटी ।

सहतारी समता कऽ मूरति

६६

कबो गेन - पीटापटि होखे
 कबहूँ 'आमछू आमछू'
 खबहूँ केहू भागे - खेदे
 केहू के केहू छ ।

कबहूँ अतला - तूल जमकि जा
 कबहूँ घोघारानी—
 "घोघारानी घोघारानी
 तब त एतना पानी ।"

फुदुर - फुदुर कइ लइका भागसु
 नाहीं आवसु गोदी;
 जान परे खुसफइन फर्स पर
 फुदुकैऽ सऽ फुरगुदी ।

जोर लगाके भागसु घुसरसु
 चउकी खटिया तरबा;
 कबो लुकासु किवाड़ी - कवरौ
 जासु न अपना घरवा ।

ए अबूझ बचन के नाहीं
 लागे दुनियाँ बयबी;
 ई बावन भगवान भूईं कऽ
 हउवन जन - धन दइवी ।

दुअरा पर कऽ ऊँचे दलनियाँ
 ओपर हऽ ओसारी;
 ओमे सहतर - पहतार होला
 मसला बीहड़ भारी ।

सोसो का सारिल कऽ खम्हा
 अजरायल हउवन सऽ;
 टोड़न कऽ कटाव बिसकरमो
 के कायल कइलन सऽ ।

एमे खनहनि खटिबा चिक्कनि
 बउकी फइलि पलंगरी;
 बाबू भइयन कऽ सोहले
 समगरदाऊ पगरी ।

मरदाना हऽ इहे बइठका
 साझि - सबेरा खानी;
 जहवां भयवद - हीत - मीत कऽ
 होला हुक्का - पानी ।

जांघि - जांघि भर कऽ जाड़ा में
 लागे कऊड़ भारी;
 जइसे सम्मत फूँके कऽ हऽ
 ऊ कवनो तइयारी ।

बड़का भइया कऽ गुड़गुड़िया
 खूब रहेले चालू;
 एमे उनुकर पलरा दबगर
 सभ केहू हऽ घालू ।

मांझिल कद कऽ सांवर तन कऽ
 पोढ़ मरद सबखीना;
 फरहर का ? ऊ बिजुली हुवन
 बज्जर उनुकर सीना ।

मुहें फट खर्रां रुखर हुवन
 बोलेलन ऊ आगी;
 केकरा सिरे सिधिया जामलि
 जे उनुका से लागी ।

उनुका गोजी अगिया वरिसे
 दुइगा कऽ बल बाटे;
 मारेलन जब गोजी बादी
 काई जइवन फाटे ।

महतारी मयता कऽ मूरति

७१

उनुका से ना गांगि बहारल
 कवहूँ केहू नबहा;
 घड़के घँटा झकझोरेलन
 फरकसु कतनो फरहा ।

अन्हे उनुके भेजो केहू
 डामल काला - पानी;
 उनुका सोझां परते होला
 छन में पानी - पानी ।

अइया पियसु तमाखू उनुके
 ओकर परल न ठाला;
 चिलमि चढ़ा हरदम सुनुगावसु
 बूढ़ऊ बिरजू ग्वाला ।

ऊ चनोल मथवा पर बान्हसु
 समगरदाऊँ पगरी;
 गावसु बिरहा बहुत ठहाका
 कनवाँ में दे अँगुरी—

“छोटी - मोटी रहलीं,
 हम बछरू चरवलौ
 तब पियलीं बकेनवाँ कऽ दूध ।
 हरे रामा, पियलीं बकेनवाँ कऽ दूध ॥
 आजमगढ़वा में लगली लड़इया
 कि छटकल बकेनवाँ कऽ दूध ।
 हरे रामा, छटकल बकेनवाँ कऽ दूध ॥”

घुनलि चई कऽ दबल पहल हऽ
 ओसारी में पुअरा;
 कंगालन खातिर दूनो हऽ
 कामिल लेवा - कमरा

ओपर बइठि तिवारी बाबा
 कइ - कइ हाँसी - ठट्ठा;
 सभका दिल पर डलले रहलन
 बात सहे कऽ घट्ठा ।

ऊ अपना मथवा पर बाहसु
 मुट्ठा भर कऽ चिस्का;
 तोन रहे कुन्डा कऽ बपवा
 गलवा बड़का भस्का ।

जे आवे ते हाथ जोरि के
 ले गहिराहे चिटुकी;
 उहो आसीरबाद देत कऽ
 मारसु मारख मटकी ।

जब जब गहन-गहन मसला पर होखे बूढ़ बिचरवा;
 तब दरखोलि बइठि के बाबू घर से लेसु सलहवा ।”
 भाई के ना कबहूँ बिसरल आपन प्रिय नइहरवा;
 ससुरे बइठलि देखे लागसु बाबू जी कऽ घरवा ॥

“बिगुल बजावे जब भिन्सहरें
 जबरमियाँ कऽ मुद्गा;
 बाबू तबे जागि के बद्रुसु
 सुमिरसु माता दुरगा ।

बड़ा झलझलाहे भइयन के
 ऊ लागसु ललकारे—
 ‘उठठ जागि बढ़ऽ जीवन में
 कतनो भीरि कवारे ।

साहस आ संघर्ष चले दऽ
 ए जिनिगी का दमले;
 करतब आ करतूति चले दऽ
 भुइयाँ परत कदम ले ।’

सहतारी ममता कऽ मूरति

बाबू का दुभरा कऽ शोभा
 रहलन गइया - बरघा;
 हरदम बाजत रहलन घुल्ला
 चालू पैना - नाघा ।

बाबू रोज गरुमाता कऽ
 करसु सबेरे दरसन;
 कवहूँ नाहीं पलखत परलन
 ऊ काढ़सु अगरासन ।

खाए बढ़े चरनि पर गोह
 जासु लगावल रोजे;
 खिया - पिया के सांझि - सबेरे
 जासु खटावलु रोजे ।

इहे गुलामन कऽ जीवन हऽ
 नकिया में हऽ नथिया;
 जहवाँ चाहऽ तहवाँ बान्हऽ
 गरबा डालि पगहिया ।

इनिकर सभ विकास कऽ मारग
 चउतरफा रुन्हल हऽ
 इनिकर मउर लगा के मुहरी
 खूँटा में बान्हल हऽ ।

भुअरि भँइसिया लागति रहली
 पीयत रहलन पड़रु;
 गइया का थनवाँ ले हठि के
 छउकत रहलन बछरु ।

गाइ-भँइसिया लोचरवन पर
 ढाढ़सु नेह - गगरियाँ;
 पजराँ अवते अनगइयाँ के
 फूंकत बनि मरखहिया ।

महतारी ममता कऽ मूरति

मैन - महोर बरध कऽ जोड़ी
 माथ भिड़ावति रहली;
 चमलियवा - चतरा कऽ जोड़ी
 चरनि उखाढ़ति रहली ।

भोकस करिया कुकुर सिकरिया
 सभ से खाले कीरा;
 सभका सतिर पहरा देऊ
 करे बराबर दोरा ।

चिरई - चुंग जाइ खोता में
 जब मुलुकावसु अँखिया;
 लुकवावसु गुलाब मुखड़ा के
 झट से सझा मइया ।

तब काकी सँझवति देखावसु
 जोति रमे घर - घर में—
 “लऽ घर-बात लच्छिमी मइया
 बोलसु मद्धिम सुर में ।”

काकी कातिक भर चतरा पर
 बारसु धिवहा दियवा;
 तुलसी माई से ऊ मांगसु—
 “सुखी रहो पलिवरवा ।”

रतिया में रामायन जमके
 दुअरा पर रस बरसे;
 सुनवइया रस - भीजे लागसु
 जइसे सावन बरिसे ।

जोर लगा रामायन बांचसु
 बड़का छुटका भइया;
 बाबू चउपाई अरयावसु
 जइसे सुरसति मइया ।

महतारी ममता कऽ मूरति

भाव - छाव निकहन देखा के
समझावसु श्रोतन के;
किछु परसंग बुझा जा साफे
हमन मतिन लइकन के ।

फुलवासी में सियाराम कऽ
होखे झांका - झांकी;
दूनो कऽ मनसा अँखुवाए
लाये हांका - हांकी ।

परसुरामजी गरजसु - तरजसु
लछुमन बोलसु बोली;
रामचन्द्रजी करसु चिरउरी
मेटसु बोली - ठोली ।

जब आवे बनबास राम कऽ
तब आ जा रोवाई;
दसरथ का संग श्रोता रोवसु
भरिजा आंखि - तलाई ।

होखे सीता - हरन राम जी
धूमसु बनिके सनकी;
पशु - पच्छिन बिरिखन से रोवसु
रहिजा किछु ना बाकी ।

हनूमान जी लंका गढ़ पर
उछड़सु मारसु धक्का;
ठाँकसु ताल जांघि मुसड़ी पर
छूटे राछछ - छक्का ।

घुड़ुकसु - तड़यसु बादरि जइसन
रावन लागसु भड़के;
राछछियन में चले धुकधुकी
दानव दिलवा दलके ।

"जे हमरा से भिड़ी समर में
के बा अइसन वेटा?"
कहि पटकसु राछछ दुहुटन के
पकड़ि - पकड़ि के घेंटा ।

अगद जी दहाड़ मारसु जब
झोरि बाहु कऽ सोटा;
दलकसु रावन मटुक गिरि परे
डगरे जइसे लोटा ।

'मारो काटो' खूब मचावसु
जब रावन खिनिसा के;
राछछ धांगसु बानर - दल के
हरका से जोसा के ।

बानर सभे पराए लागसु
बल ना कामे आवे;
त्राहि - त्राहि हे अंगद-हनुमत !'
सभ लागे गुहरावे ।

तब हुहकार बान्हि के दउरसु
अगद हनुमत जोधा;
भिड़कसु जोड़ हहास बान्हि के
जमके जम कऽ धग्धा ।

झापड़ - थापड़ लाता - लूती
होखे घुड़का - घड़की;
लोला - लोली हाथा - पाई
होखे पटका + पटकी ।

जोर लगा के खेलि जान पर
होखे बजना - बजनी;
हांफसु माल, न ऊ गति पवलसि
कबो लुहार घउंकीनी ।

महतारी समता कऽ मूरति

७७

जब मायावी रावन बान्हू
 मायाबल से मुरचा;
 बेगर लोह - लड़ाई लागे
 बानर - मति पर मुरचा ।

रामचन्द्र का तरकस ले जब
 बान चले फुफुकारे:
 माया कऽ चकरावत मुरचा
 खन में लागे हारे ।

भाव - ताव देखा के बाबू
 घोह बनावसु भारी;
 जिमे परि के सभ सुनवइया
 खो दे दुनियादारी ।

सभ पावन कऽ रूप उरेहसु
 हुवहू - हुवहू बाबू;
 जइसे बाल्मीक - तुलसी कऽ
 उनुकर साथे काबू ।

जब होखे बटोर दुधरा पर, हल ना होय सवलवा;
 राम बान परतोख जुटा के, बाबू देसु सलहवा ।"
 माई के न कबहूँ बिसरल, आपन प्रिय नइहरवा;
 ससुरे बइठलि देखे लागसु, बाबू जी कऽ घरवा ॥

'छुटका भइया घर कऽ हीरा
 गउवां भर कऽ नेता;
 ऊ पहिरेलन खढ़वा कऽ
 धोती - गंजी कुस्ता ।

गउवां जानेला ऊ हउवन
 गान्ही जी कऽ चेला;
 उनुका बदे पराया धन हऽ
 ए माटी कऽ ढंला ।

महतारी समता कऽ मूरति

सभे कहैला ए मउवां में
 हउवन ऊ सोराजी;
 उनुके कबो दबा ना पाई
 धूर्त फिरंगी पाजी ।

बाति करेलन अइसे जइसे
 मुहँ ले फूट झरेला;
 दुखियन में उनुका नउवां कऽ
 सिक्का खूब चलेला ।

साम बरन कऽ लमहर - चाकर
 देखनउक ऊ मरदा;
 पुरुष सिंह बनि के बिचरेलन
 मानुस हउवन उमदा ।

बरम बबा का बर का छाहां
 मेढ़ीदार अखाड़ा;
 ओंजा खुललि हवा में कबहूँ
 नाहीं फूँके डाढ़ा ।

संज्ञा में ओंजा बटुराइल
 हऽ नवहन का बखरा;
 बैठक - दण्ड लगावेलन जा
 भाजेलन जा मुंगरा ।

जब ले धूरि लगवलन भइया
 रहलन तरकस पट्ठा,
 केहू के ना निकले दिहलन
 आगे एगो कट्टा ।

ऊ सभ के वेरेप बजवलन
 रोजे पारा - पारी;
 चकइठ चक्का पट्ठा राखसु
 बहुते पेंच - तयारी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

भइया सचमुच दिग्गज रहलन
गों सर्वहर कऽ राजा;
दंगल में मलगज ना परलन
बजबवलन ऊ बाजा ।

एक एक ले बजबइया से
नाहीं खइलन गच्चा;
नाहीं कइलन ऊ केहू से
कबो किचाइन - रिन्चा ।

मउर पकड़ि वरधन के ढाहसु
बिलमावसु भईसन के;
खेतन में खेदसु लम्मा ले
थउसावसु सांढ़न के ।

लमहरि करिया भारी गोजी
भइया रोज लगा के,
सकराहे चलि देसु सिबनवां
घर कऽ जोस बढ़ाके ।

बाबू भारी बोंग लगावसु
बड़का भइया लटठा,
कबो - कबो बुचिया पछियावे
लिहले ढेंगा - ढट्ठा ।

जाड़ा का खेतन - खेतन में
लछिमी जी बिचरेली,
जाड़ा का सरेहिका मध्ये
ऊ भरपूर बसेली ।

कबिली लतरी - रहरि मसूरही
फुलि - फरि के गदराली,
छेमिन का झोंपन का मारे
लोट - पोट हो जाली ।

महतारी ममता कऽ मूरति

सरसइया कऽ फूल - पतङ्क
जब हावा फहरावे,
'सभ कर रंगऽ बसन्ती चोला'
इहे कोइलरि गावे ।

गभुआइल गभुआइल रहिला
नोनालन कहियो तऽ;
ऊ पूरा थनाइ चकवड़ि के
फूलालन कहियो तऽ

जी - गोहूँ रेंडे का बेरी
काटेलन जा मुसुकी;
इनिका मोछितरे लेली सऽ
लमहरि बलिया झँपकी ।

लमहर - चाकर ए सिवान का
मध्ये दंगल गउवां;
महमूलो अदिमिन कऽ जेमे
हउवे बूड़ल नउवां;

हमनी खातिर लेले आवसु भइया आल्हर गदवा;
बहुत होरहा - कचरी ढोवसु बाबू बाम्हि पगरवा ।"
माई का ना कबहूँ बिसरल आपन प्रिउ नइहरवा;
ससुरे बइठलि देखे लागसु बाबूजी कऽ घरवा ॥

गउवां का गोइँड में गाजे
राजे गहिर पुखरवा;
मृगडाहो में ओकर हियरा
झलकावे जल - जलवा ।

बड़ फेड़नि कऽ भारीं पलटनि
भौटा पर मिड़कलि हऽ;
चउवा-चिरइनित्तरजनि -चहकनि
ओही में सुहटलि हऽ ।

महतारी ममता कऽ मूरति

८१

महुआ - जामुनि पीपर-पाकड़ि
 कटहर आम गुलरिया;
 उनुका तम्भूतर ताथेई
 बोसे ले गउरइया ।

वरवा कऽ हऽ फेड़ सरगना
 सभ केहू जानेला;
 वरम बबा कऽ एपर डेरा
 जानि - मानि पूजेला ।

निचलावाँ रतिया में ओजा
 भकसावन लागेला;
 बाबा कऽ गन भूत-प्रेत कऽ
 जब बाजन बाजेला ।

जब असारह सावन कऽ वदरा
 उमड़ि - घुमेड़ि जल ढाहें;
 तब पुखरा कऽ उपराँछत जल
 खाली भइया पाहें ।

लइका पंवरसु हाँका - हाँकी
 होखे हो - हो हल्ला;
 कूदसु - बूड़सु होंड़सु पानी
 हलकोरसु जल गल्ला ।

मिहरारू माटी से मलि - मलि
 मीजसु मथवा - बरवा;
 नहा - घोड़ के पूजे घावसु
 बरम बबा कऽ बरवा ।

बाबू अपने हाथे मलि - मलि
 नहवावसु हमनी के;
 ऊ तऽ कबो परसु ना पलखत
 पवरावसु हमनी के ।

महतारी ममता कऽ मूरति

अदिमिन का तरइन से मह - गह गहके गहिर पुखरवा;
 बरम बबा का जय जय जय से गुंजे गजब गुईड़ा।”
 माई का ना कबहू बिसरल जान प्रिउ नइहरवा;
 ससुरे बइठलि देखे लागसु बाबूजी कऽ घरवा ॥

हमरा से कहली - 'ए बचवा !
 देव रूप ऊ बाबू;
 हमनी के पाले - पोसे में
 मन पर पबलन काबू ।

देके जनम घरा ले झटपट
 चलि दिहली महतारी;
 बाबू बचवन खातिर भइलन
 बाबू ले महतारी ।

केहू के कान्हा में सटलन
 केहू के कोरा में;
 केहू के पोल्हवलन बाबू
 बातिन का घेरा में ।

कबहू नाहीं अनकसाइ के
 कतरइलन बचवन ले;
 भलहिन दुनिया का देखे में
 बड़ि गइलन मउगन ले ।

कबहू नाहीं कतो निहरलन
 आपने कुकता - घोती;
 रोंघट - कुचइल-मइल पहिरि के
 हो गइलन अलवांती ।

साफ - साफ बहतर पहिरे में
 रहलन ऊ सरनामी;
 कहियो तन पर बहतर सोहे
 एक - एक ले दामी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

८३

अंगा मइलइला का डरनी
छूवसु तेल न बावू;
लुग्गा - फाटा साफ करे में
परसु न मछिम दब्बू।

आत्मा का कुसता ले बड़ि के
समझसु तन कऽ कुसता;
बावू का आत्मा कऽ नाहीं
खाली तन कऽ सुसता।

धोवस मलि-मलि काया-कपड़ा
ऊ सोडा - साबुन से;
समझतु ना तन कऽ सुघरीटा
बा आत्मा का धन से।

माई का तन कऽ गति देखत
उनुकरि मति फिरि आइलि,
बहरा बहरा बवँड़ियाति मति
भीतर बहुत समाइलि।

तन का सउख-सिगार-साज के
अब ललचसु रचिको ना,
ई दुनिया का कही, सोचि के
ऊ हिचिकसु तनिको ना।

आत्मा कऽ धुनि सुनि-सुनि लगलन
सेवा - मेवा चाखे,
अपना संतति का सेवा मे
लगलन तन मन राखे।

ऊ ना भइलन चिउंटा-माटा
ना घनघोर उदासी,
दुनिया उनके नाहीं लागे
फुल सेज्जा भा फाँसी।

महतारी ममता कऽ मूरति

जात्मा में परमात्मा देखसु
परमात्मा मय जग के;
एक भाव से देखे लगलन
ऊ पूरा जग - जग के ।

माया का सपना के बूझसु
अजा लेसु सपनों में;
जिउ - सेवा कऽ रपटा डालसु
मन - करमों बचनों में ।

बेटा - बेटा में ना अन्तर
बाबूजी के लउके;
जइसे जइयन के ऊ मानसु
ओइसे जानसु हमके ।

हमनी का घुरिया बइठा जा
बाबू जी कऽ धरिया;
साथ - साथ खाए लागीं जा
दालि - भात - तरकरिया ।

बुचिया का ना खाए आवे
उहे खियावसु ओके;
खइला - पियला पर हमनी के
रोज उँघइया झोंके ।

कबो - कबो दहिया खाए में
होखे छोना - झपटी;
सारही का टिसुना में परि के
होखे डपटा - डपटी ।

हँसि - हँसि के समझा के बाबू
गोरस देसु उमेरे;
थानेतर कऽ गरम दूध आ
चोंका साँझि - सबेरे ।

महतारी समता कऽ मूरति

रतिया में खाते हमनी का
 लागीं जा जम्हूआए;
 चरिपे जसा उँघाई कऽ जब
 लागीं जा अन्हूआए ।

बाबू गुदगर हासन डांससु
 डरकावसु हमनी के;
 सुहरा सुहरा के सुख-निनियां
 दिहल करसु हमनी के ।

बटूरा के उनुकां खटिया पर
 कबो करीं जा अँडसा;
 कहल करीं जा, 'फजिरे चाही
 मुहकी अउर अनरसा ।'

वेहू करे अनोढ़ डरावसु—
 'काटी काटी मउवां;
 नेवर काम करऽ मति सूतऽ
 हबकी बच्चू, भकउवां ।'

हम ना कइलीं कबो सराही
 हरतुज धक्कम - धुक्का;
 एसे ना कबहूँ हमरा पर
 तनलन थपरा - मुक्का ।

हम ना कबो लहास लगवलीं
 फुसिलवलन ना हमके;
 ना दउरी कऽ गूर उझिललीं
 अहुअइलन ना हमके ।

हमके गऊ समझि सभकां ले
 डुलरवलन ऊ अधिका;
 खूब सरहलन हमके चाहे
 अनकस लागे सभका ।

बड़ठावसु जहवें हमरा के
तहवें बड़ठल खेलीं,
नाहों रोई ना छरियाई
ना खुझि के किछु ठेलीं।

हमके खेले खातिर दिहलन
खानि - खानि कऽ पुतरी;
हमके सगझत रहलन बाबू
निज अँखिया कऽ पुतरी।

लइकइयाँ ऊ घघुवा - मन्न
खेलवलन हमरा के;
'उठे भीति नइ गिरे पुरनकी'
बतलवलन हमरा के।

ऊ बतलवलन, 'पटरी पुस्तक
हउई विद्वा माई;
एसे कबहूँ केहू इनिके
ताहीं लात छुवाई।'

पटरी - पुस्तक कलम-बोरिका
दिहलन सीसी दुधिया;
जेके लेके भइल हई जा
हमनी का पढ़वइया।

दुधवा कऽ कुल्ला उनुका घर
हम करते रहि गइलीं;
उनुकर ले आइलि उखियन के
हम चीभत रहि गइलीं।

जब सयान भइलीं बाबू का
आइलि भीरि कपारे;
बढ़ियाइलि नदिया ऊ पर्वरसु
रतिया का मन्हारे।

महतारी ममता कऽ मूरति

८७

चाहत रहलन बाबू हमके
 ढालल सुखिया घर में;
 जहवाँ दुखिया राति न आवे
 जीवन - दूर सफर में ।

बाबू चाहत रहलन हमके
 कुलवा - सेज सजावल;
 जितिगी भर हमरा तनवाँ के
 दुधवा में नहवावल ।

बाबू नाहीं चाहसु हमके
 ढालल कबो असक्का;
 चाहे उनुके लागो कतनो
 ताप - तमाचा - धक्का ।

बर - बर जोहत-जाहत भट्कसु
 बाबू अवगुड़ रहिया;
 ओ धावाँठी में टूटलि हऽ
 बारह जोड़ पनहिया ।

कइके लाख जुगाड़ तिलक कऽ
 हो गइलन ऊ पइया;
 तबहूँ नाहीं उनुका भाइलि
 कबहूँ चाहत - झइयाँ ।

जेके ऊ दुलराइ घुमवुलेन
 लइकइयाँ करघइयाँ;
 ओही कऽ कइसे घरववलन
 अनगइयाँ के बहिया ?

कइसे बाबू निठुर बनवले
 बाड़न आपन हियवा;
 कइसे अनबह गउवाँ भेजत
 बाड़न आपन धियवा ?

उनुकरि नेह - चरनियाँ धइके
हपसि - हपसि हम भेंटी;
उनुकर नेह - समुंदर उमगल
- मीजीं बुड़ीं सपटीं ।

हमरा भइयन का अँखियन ले
टप - टप टपके पानी;
बहिनिन का मुहवाँ ले बहरा
नाहीं निकसे बानी ।

सुसुकति रहली सखी-सहेली
कहुकति काकी भउजी;
भरुआइल सभ टोल मुहलवा
उदसल नाऊ दरजी ।

भइलि बिदाई निकसलि डोली
परल लाल ओहरवा;
करे निछावर कऽ ठकठेनी
गोइँड़ ठाढ़ कहैरवा ।

भागलि डोली दुलुके लगलन
हुंमकत जात कहैरवा;
छने छने पाछे फेंकाइल
छूटत गइल नइहरवा ।

बाबू कऽ ले नेह - कमइया
हम ए घरवाँ अइली;
भइया का बहियाँ का बल से
हम बहुते बल पवलीं ।”

माई के ना कबहूँ बिसरल बाबू कऽ करतबवा;
ओही से दुनियाँ में जानसु ऊआपन रहतबवा ।
माई के ना कबहूँ बिसरल आयन प्रिय नइहरवा,
ससुरे बइठाल देसे लागसु बाबूजी कऽ घरबा ।



महतारी ममता कऽ मूरति

सतवीं उसाँसि

जोहत रहली माई जेकर रहिया

बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकर रहिया,
कले कले ऊ आवे लागलि पजरौ प्रिउ पतोहिया ।

हम भइलीं किशोर तब उभरे लागलि हमरा पाम्ही,
माई का मन आसमान ले घस के लागलि आम्ही ।
समे पाइके आशा-लतिका, जब लागलि कुँडियाइ,
गमकउवा हावा में बखरी तब लागलि हुलसाए ।

तिलकहसन कऽ आवाजाही बड़ मनसायन लागे,
छेहर-छली-चबायन दिल के गोली बनि के दागे ।
हड़बड़ि भइलि ब्याह कटुवन का भोजन ठीक पचे ना,
नाकि कटा के सगुन विगारसु ई कल से बइठसुना ।

काम विगारे खातिर ई सम बावन बीर कहाला,
सँगवा नाइ पार ना लागे भोजन बिख बनि जाला ।
राम-काज में कालनेमि ई घात लगावसु भारी,
अन्हे-अन्हे दुका-दुका बकि कइ डालसु गइभारी ।

माई कजँचसि चबुरी बान्हसु मन में हुदबुद पइठे,
बुद-बुद करसु नीनि ना आवे बीते रतिया बइठे ।
देव-पितर के बहुत मनावसु कइ-कइ मान-मनवती,
आपन पुन्न-सुफल सहेजि के बिनवसु इष्ट भगवती—

“गारूह परेला जब भगतन पर काटेलू तू माबा !
संकठ - ताप हरेलू माई ! कइके दाया - छाता ।
जब-जब भीरि परलि ए कुल पर सम्हरलू महारानी !
कइसे राखछ-गन कइ पइहन ए कुलवा कऽ हानी ?

महतारी ममता कऽ मूरति

ब्राहि-ब्राहि है देवी माई ! कुल-खम्दान बढ़ावऽ;
 पूज्य पुरनियन का पगरी कऽ माई ! लाजि बचावऽ ।
 बचवा के बिदवान बनावऽ माँ ! जी-जांगर देके;
 फूलसु फरसु बनसु सरनामी गुन कऽ आगर होके ।

रहनि-चालि निम्मनि दीहऽ माँ ! बांगर-मति मति दीहऽ;
 मानव बनि दुनियाँ में जीत्रसु बानर-मति मति दीहऽ ।
 हमके धीर घरावऽ माता ! हमके बाहि घरावऽ;
 बचवा का हाथे-माथे तूँ कक्कन-मउर दिखावऽ ।

रंगरेजी बाजा बजवा के तुहके झूल चढ़ाइबि;
 बैइलिया कऽ गमकत गजरा गरवा में पहिराइबि ।
 गइया का सच्चा घिउवा में हम परसदवा छानबि;
 माँ ! नवरातर भर मन्दिर में घी कऽ दियवा बारबि ।

माता ! तुहरा कृपा-दृष्टि हऽ लमहरि हउवे बहियाँ;
 माई ! तुहके केहू नाहीं हो पावल अनगइयाँ ।”
 देवी जी कऽ बहुत बेर ले माई कइली बिनती;
 आपनि मनसा पूजे खातिर कइली मान-मनवती ।

होइ बरच्छा हरदी लागी मउर बम्हाई जहिया;
 हमके देखि-देखि माँ जी कऽ मनसा पूजी तहिया ।
 बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकरि रहिया;
 कत्ते-कत्ते ऊ आवे लागलि पजराँ प्रिउ पतोहिया ।

रहे लइकपन हम ना जानीं माँ जी कऽ दुचिताही;
 खाईं-पीहीं मउज उड़ाईं नाहीं रहे तवाही ।
 आवे ना आम्ही-बतास हम कबो न गच्चा खाईं;
 माई का बाड़ा-छाहाँ हम छुट्टा माकत धाईं ।

माया रानी कऽ ना देखीं लुकि-छिपि चोटी-एड़ी,
 मनचलाई पहिरल ना घाहीं कबो हथकड़ी-बेड़ी ।
 जब बियाह कऽ चर्चा होखे लागी मुहँ चोरावे;
 उठि के हम अन्ते चलि जाईं केहू अन्त न पावे ।

बहतारी ममता कऽ मूरति

६६

जब दुवरी तिलकहरू आबसु देखे खातिर लइका;
इन्तहान कऽ घरी जानि हम बहुते परी असक्का ।
हम सकुचाई कबो लुकाई नाहीं जाई सोझा;
सिधवा माई हमरा आगे झटपट होखसु ओझा ।

ऊ खेलवली, उहे बझवली दुनियाँ का रंगति में;
हमके घाँचि-घाँचि डललि ऊ माया का संघति में ।
गुनि के सीलि सोझ माई कऽ हम सूरति देखाई;
सनुका हरतुज कइला से हम मुरचा पर चढ़ि जाई ।

माताजी का हँसी-खुसी कऽ तब ना रहे ठिकाना;
जइसे कवनो भुक्कड़-हाथे लागल हो रस-दाना ।
तिलक हसन कऽ छउकि-छउकि के करसु गजब तइयारी;
अतिथि देव कऽ जोर लगा के होखे खातिरदारी ।

लुचुई घी में रहे चभोरलि बालि-भात तरकारी;
खरवल घी से गमगम गमके पुरहरि फुलही थारी ।
आदी निबुकी मिठकी चटनी जइसे बोली गमिया,
रहे चटकार अचार आम कऽ पजवे खातिर जिभिया ।

गाइ-भईसि का खरवल घिउ से होखे भोजन-सुद्धी
मान न माने मन कऽ हरिना चाहे कतनो बुद्धी ।
मीठि सजाव दही - चीनी कऽ होखे ठेलम-ठेला,
खइनहसन का हँफरी छूटे खतम होइ तब खेला ।

नावे दियइला पर दूनो दल लागे पता लगावे,
एक-एक ले गढ़लि-बनावलि बतिया उघरति आवे ।
गनना-मनना आ कटुवन से आवे बीघिन-बाधा,
तब बियाह खँडमंडल होखे माइ कऽ जिउ आधा ।

गरई गतिन छटपटा के ऊ लागसु जरि-मरि कुद्दिखे,
ऊ बूड़े, उतिराये लागसु पइठि अथाहाँ पहिले ।
एके मिले सहारा सभ के सोचत-समझत साथे,
सगरो दोस-रोस सभ उत्तरे भाभी का सिर-माथे ।

महतारी ममता कऽ मूरति

आइलि निम्मत्रि^{नी} घरी-मुहरति आ चरीइलि भाभी,
 गनना-मनना माफिक बइठल मिललि भागि क चाभी ।
 भइल बरच्छा तिलक चढ़ल अब लागल नेग बँटाए,
 अदरा-भदरा दिन बराइ के काम लगल नवधाए ।

सोघलि खाँटी लगनि घराइलि बँटल दान आ दछिना,
 नाऊ - बारी - धोबी - कमकर पवलन पाड़े-बँभना ।
 चलल पान कऽ बीरा सभके मंगल-सगुन सुनावे,
 बकिऔता पनहेरी - पइसा चुकता तुरत करावे ।

सोसती स्त्री मुहम में लिखि के नेवत लगल बँटाए,
 देवी-देव हीत-मीतन के अगते लगल दियाए ।
 उठल सगुन ढोलकवा बाजल गूँजलि बखरी सज्जे,
 कबहूँ नाहीं लगनि उदासलि जमकल गावल रोजे ।

माई चाहसु उज्जर-उज्जर चमकसु हरदम दिनवाँ,
 मति भदराह कहावे पावे कबहूँ मोर ललनवाँ ।
 ऐसे खाली दिन बरका के उत्सो-करमट कइली,
 छिकिया सुनते तुरत ठमकली नाहीं आगे बढ़ली ।

जब बाजल मटकोर डगा तब माई जी अइघइली,
 जहिया हमरा हरदी लागलि महतारी अगरइली ।
 गावसु उमगि-उमगि मिहरारू ए भोका कऽ गितिया,
 उत्सो में दुनियाइलि पुरहरि माता जी कऽ छतिया ।
 बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकरि रहिया,
 कले-कले ऊ आवे लागलि वजरां प्रिउ पतोहिया ॥

आपन डाल लगाके माई बनववली सभ गहना,
 खूब सजाइल डाल वहू कऽ देखत लागे सपना ।
 आइ गइल विवाह कऽ दिनवा भरलि रहे ओसारी,
 सजि-धजि के बराति जाए कऽ होति रहे तइयारी ।

हीत - मीत नेवत पर अइलन लेके रुपया सारी,
 बटुरइलन दुबरा पर खुबहिन बान्हि मुरेठा भारी ।
 कुस्ता घोती साफि अँगोछी खूब चमाचम चमके,
 बकुला कऽ पँखिया ना उनुका पजरां पावे फटके ।

सहतारी समता कऽ मूरति

६३

कलमि कटलि वनलि रहे दारही अइँठलि रहे मोंछिया,
जइन कवँल खिलल फुलवा पर भवँर-पाँति मनबसिया ।
इतर-फुलेल लगावल गमकें झलकें लाल मुखारी,
जइसे गेना का फुलवन कऽ गहकलि ह फुलवारी ।

कादो ई देवता लोग कऽ बोड़ बटोर भइल बा;
जहवाँ हँसी-खुसी का रस के पीके सभे छकल बा ।
नटखट आ अवूझ लइकन कऽ ऊटक-नाटक चालू;
जइसे महाखुशी सउदा कऽ हुउवे रसगर घालू ।

पवनी-पँजहर-नेग-निछावर लेके लगलन छउके;
उनुके ए उछाह-मोका कऽ करमट आगे लउके ।
उपरोहितजी पहिरि मिरिजई दमकसु पगरी बन्हले;
लिलरा चन्दन कान्हा चदँरा हुँमचसु पतरा लिहले ।

बाजि उठल रँगरेजी बाजा गउवाँ लागल गूँजे;
तब बराति जाए कऽ बेरा तुरते लागलि पूजे ।
भाई-भयवद झपटल अइलन बहतर पहिरि धराऊँ;
मुहँ पर बा गुलाब फुलवा कऽ बिहँसत रंग जमाऊँ ।

बनि अदान देखावे लगलन किछु नवजुवक बतीसी;
रहे सवार कपारे उनुका जमिके गदह-पचीसी ।
निफिकिर होके हँसि-हँसि लोटसु कइके धक्का-धुक्की;
बोलसु गभिया बोली लागू मारसु माख मटकी ।

केहू छनगे कूदे - फाने पगहा - छान तुरावे;
लाल होइके नाकि फुला के सम्मे कऽ गरियावे ।
महँकत रहे तमाखू - धुवाँ चालू रहे गड़गड़ा;
केहू बाँटे सुखती खइनी जइसे होखे पेड़ा ।

अँगना में चउका पूराइल ओपर बइठल बचवा;
कोरा में माई समेटली लगल नेह कऽ छतवा ।
माँ माथा के छूइ मउरवा बनल पूत कऽ कुलहा;
माँ-आसीसि-गटुक से बेटा बनि आइल बर दुल्हा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

झमिली घोंटि जुड़इली माई हियवा से हरसइली;
 पाइ मदति पनिगर भइया कऽ ना तिरसित रहि गइली ।
 डोली चढ़िके दुल्हा निकलल ओ गउवाँ का गुइड़ा;
 रंगरेजी बाजा चढ़ि धमकल ओ गउवाँ का मुइड़ा ।

दधि - अच्छत - मूसर के लेके नाउनि ताकति रहली;
 गज-गामिनी-कामिनी मंगल-गितिया गावति रहली—

“परिछन करे चलेली बर-कामिनि,
 अरसी सिन्होरा हाथ ।
 पहिले परिछेली माथ क मऊर
 ता पाछे तिलक लिलार ।”

सभ ले पहिले परिछन कइली आगे बढ़ि महतारी;
 काकी भउजी बहिनी कऽ तब आवे लागलि पारी ।

सजल-धजल मिहरारू गावसु सुभ विवाह कऽ गितिया,
 चलल गियाह करे बर दुलहा, झपटलि तुरत बरतिया ।
 बहुत दिनन ले जोहत रहली, माई जेकरि रहिया,
 कले-कले ऊ आवे लागलि, पजरां प्रिय पतोहिया ।

रहे राति भर अंगनइया में मिहरारू कऽ मेला,
 रहि के उजग कइल मिलि के सभ बहुत बखेड़ा खेला ।
 ददरा पीटल गइल राति में जमकल मजिगर जलुवा,
 मिहरारू रतिया भर जगली बनि के सजग पहरवा ।

माई देयादिन पवनित कऽ जुगवत रहली मनवां,
 जे जेवन चाहल ऊ गावल फूहर-पातर गनवां ।
 नखड़ा-नाज-खरबन कइ चुकली किछु बातूनी जानी,
 कादों कतना नाच नचवली गबर चाँख महरानी ।

माई नवली मान-मनउवलि कइली रखली पानी,
 एके गोड़े ठाढ़ रहसु ऊ ले के पीढ़ा - पानी ।
 रखली रावा - रोह सभ कऽ रहली बड़ा फहीमा,
 कुफुति-वान सहियो के नाहीं माई परली धीमा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

६५

कहूँ कऽ ना टूटे दिहली रचिको रोवाँ माई;
 चाहे आजी काकी भउजी चाहे होखसु दाई ।
 सोचसु, जहवाँ रोवाँ टूटी कलपल बावँ न जाई;
 भोर दुलहा ललना-भागी दुख-लेखा लिखजाई ।

जकरा मन में जेवन आइल गावल ढोल बजाके;
 अपना हिय कऽ फाँट निकालल खेड़ा बना-बना के ।
 कहूँ नाहीं विठ्ठा डालल गभुवाइल भागल ना;
 घोघा मतिन फुला मुंह केहूँ कबो खलल डाललना ।

भचल रहल गहगड्ड रातिभर जमकल धूम-घड़ाका;
 चुल्ली लरिका मानसु नाहीं छोड़सु कबो पड़ाका ।
 भइल भोर तब चूल्हा दमकल दालि लगलि ईसिनाए;
 कले-कले दलपूरी कऽ बा लागल साज तजाए ।

आलू कुहँड़ा कऽ तरकारी खूब सोन्ह छौंकाइलि;
 गुरम्हा बदे गूर क ढेली गवें-गवें फोराइलि ।
 माई तिकवत हउवे अवते बोलति बाटे कनियाँ;
 भरि के मांगि उतारल जाई डोली ले दुलहिनियाँ ।

बर-कनियाँ कऽ चहुँपलि-चहुँपलि दरवजवाँ असवारी;
 बहिनी-भउजी-फुआ-काकी झट घबली महतारी ।
 सुभ सेनुर से मांगि बहोरलि गइलि तुरत कनियाँ कऽ,
 कुहबरवाँ ऊ सेवा पवलसि दुलहा का बहिनिन कऽ ।

आपन संसव-सफर बिताके ऊ पहुँचलि ए ठउवाँ;
 ओ जीवन कऽ चरन दुसरका परल ससुर का गउवाँ ।
 मुहँ जुठरावे बदे दियाइलि तुरत गुर आ दहिया;
 मुहँ में ना डललसि बेचारी छुटलन बाबू-बइया ।

गूर-दही के फेटि-फाटि के बहिनि लगवलसि ओठे;
 जइसे उड़हुल का फुलवा पर सगुन पसरि के बइठे ।
 माई समुझवली अगवाँ घइ प्रेम परोसलि परिया;
 आने मने कवर किछु लिइलसि उदसलि नई बहुरिया ।

बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकरि रहिया;
कले-कले ऊ आवे लागलि पजरां प्रियपतोहिया ।

भइल भोज कनियाँ भइला पर मजिगरि दलपूरी कऽ;
नाहीं फिकिरि भोजनहरन का कवनो भोज-कभी कऽ ।
हीत-परीतन कऽ मिलमिलके निम्मनि भइलि बिदाई,
गउवाँ में बायन बँटववली ठकुराइनि से माई ।

ककन छूटे चलल नियत दिन भइलि रहेतइयारी;
अइघाइलि माई अगुअइली पहिरि पियरकी सारी ।
लइकी-फइकी सखी-सहेली बहिनी-ननदी सँगवाँ;
बजे नगारा पिहिकि-पिहिकि के संगिनी गावसु गनवाँ ।

नेम-टेम से गइल मउरवा सिरवावल गंगा में;
एह जगत के जैन न बाटे मतलब का दंगा में ।
जबले तन में सर-सकतीं वा तबले सभ वा सगी;
थाकी तन केहू त्रा लागी वे मतलबा कऽ लगौं ।

नहीं-घोइ के गंगाजी के पियरी सुघरि चढ़वली;
सेहरा सतरल बार-पार क, माई बहुत बिनवली ।
देवी जी का मन्दिर में जा दामी झूल चढ़वली;
देवी-देवन का धामन में जाके माथ नववली ।

भुखल-पियासल माई घुमली सभदेवन का धामें;
असरा रहे कि ई सभ आई बचवा जी का कामें ।
आके अँनइया में कइली कुँवर बावा कऽ पूजा;

बाँतल सोंह परसाद खुसमवाँ सुच्चा घिउकऽ ताजा ।

थाकलि-खेदलि अइली माई खटिया पर भरइली;
देवी-देव पूजि महतारी जुड़भइली सुहुतइली ।
सिउ के गइल खियावल संज्ञाबेराडगा बजाके;
घरे-घरे देयादिनि गइली हमरा घरवाँ खाके ।

बितलि राति उजियार भइल दिन गइलि दिखाबलि कनियाँ;
दिहली माई जोड़ा—चूरी जेकर सोना बढ़ियाँ ।
मुँह देखाई में आलागलि रुपयन कऽ बड़ देरी;
माई कऽ बाँटल धन बहुरल नाहीं लागलि देरी ।

बहसारी ममता कऽ मूरति

१७

माई ताकसु ओ दुलहिनि कऽ दग-दग ललित गुराई;
जइसे कमल-ललाई-जल मैं धुललि चान उजराई ।
भवन भइल मनसायन बाटे धिउ कऽ टेम बरति बा;
कोना-अंतरा-भँड़सारीना भकसावन लागति बा ।

घान-पान ले हाँफत अइलन बड़-बड़ियार कहेंरवा;
लरि-जरिना टूटे बहैगिन कऽ पूरा भरल दुवरवा ।
हकसल-प्यासल आइ पहुंचलन छोहन बड़का भइया;
इनिका के अगुतबले रहली रोदति-कलपति मइया—

“अनगइयां लोगन में कइसे हैसिहन गइहन बछिया;
कइमे मँगिहन भोजन-छाजन ओढ़न-डासन-तकिया ।
सखी मुहँ-बोलारि ना होई सटि काम्हाँ से लटकलि;
कलपति कुहुकति बिलखति रहिहन अकसखे ऊ बइठलि ।

लजिगर-सिलगर-सिवँगर-मयगर-धीर-पूर ऊ हउई;
गऊ सुभावन हउई बछिया पयगर नाहीं हउई ।
नाहीं तनिक सान मटकी हऽ नाहीं असकति हउवे;
कबो बहँटियावे ना जनलसि सचमुच बेकति हउवे ।

ऊ ना कबो झटकली किछुवो जइसे नेता चालू;
ऊ खोवा के खोवा कहली आलू के ऊ आलू ।
ऊ साँवो कऽ गिहयिन हउई हउई घर कऽ लछिमी;
ऊ ना चुहेड़ चाइनि चुरइलि हउई सचमुच अदिमी ।

ऊ थेरारि छूछूनरि नाहीं रिच्छाहिनि ना हउई;
घरवा खूब सँभारेत्रे में ऊ सुन्नरिबेकति हउई ।
ऊ उवाक बोका ना हउई हई सयान परानी;
पानी मतिन बोलि हऽ उनुकरि चान मतिन मुंह-पानी ।

हमरा अँखिया कड़ पुतरी ऊ मयगरि हई गियानी;
उनुका जइसन नइखे केहू एको जाना—जानी ।
जँगर इतिनि बड़ भागिनि हउई निम्नन आँगल पवरा;
उनुका जनमत बढ़लि बयदवां घटल घान ना पुवरा ।

जबले चेत सँभरली बछिया बहुते सेवा कइली,
हमके खिया-पिया के पहिले अपने पाछे खइली ।
मीजसु-मांडसु तेल लगावसु मथवा द्वारसु रचिके,
बरतन-बहतर गहना-गोठो घर में राखसु सँचिके ।

जब हम अनमनाह हो जाई होखतु ऊ अपसुइया,
हमरा ना रहला पर होखसु बे गुसयां कऽ गइया ।
हमरा कोखीं सूरति कऽ ऊ मूरति बनि के अइली,
अहा ! सरग कऽ सुघरि परी ऊ भुइयां धावे लगली ।

जे देखल ते बहुत बखानल उनुका मुहँ कऽ पानी,
टोला भर में रहली बनि के ऊ रुपवा कऽ रानी ।
ऊ कइली ना सहकि-बहकि के केहू से रोराही,
घुड़कत ओ सिघवा का आवे अधिक आठ-रोवाई ।

ऊ केहू से कहा-सुनी ना कइली कबहूँ हँ-टूँ,
चाहे होखे घर-वाहर कऽ चाहे जेठू - छोटू ।
ए टोला में उनुका खातिर हउवे 'आछो-आछो',
चाहे गुन-सहूर कऽ केहू कतनो काछा-काछो ।

जब उनुकर गुन याद परत बा फाटति बाटे छतिया,
कबहूँ नइखे बिसरति दिलले हँखमुख गिहथिनि बचिया ।
जा ताड़े तऽ अइहे बचवा तीहा खूब कराके,
किछु दिन में आवे खातिर दिन बचिया कऽ धरवा के ।"

मइया कऽ इ भाव सहेजत भइया गइलन उहवां,
ससुरां-नइहर अन्तर बहिनी सोचसु-समझसु जहवां—
"नइहरवा हम कथ्या रहलीं ससुरां भइली कनियां,
नइहरवां कऽ हईं लरिकती ससुरां कऽ दुलहिनियां ।

नइहरवां में मइया बोलसु-‘दुधवा घुट-घुट पीलऽ
ससुरा सासु खूब समुझावें—‘लमहर घूँघुट ढीलऽ ।’
नइहर में हम घुमलीं--फिरलीं खइलीं-पियलीं छुट्टा,
ससुरां अइसन करते लागी कुल-इज्जति पर बट्टा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

६६

जेके जेवन मन में भावे ऊ बढ़ि-बढ़ि बकि देता,
बकुला भगत मंच पर चढ़ि के बनि बइठत बा नेता ।
लेब-देव का धुवाँधार में सइ निकललि घरती कऽ
बिना नेह कऽ दीया बरत बा अब विजुली बत्ती कऽ ।

याजिन से कहात नइहरवा हितहा-ससुरा-साला,
हमरा मुहँ पर ससुरां कसि के लागल बाटे ताला ।
किछु अधिका जन ताना मारसु बोलसु बढ़ि के बोली,
सुनते हमके अइसन लागे जइसे दागसु गोली ।

जो सुनि कबो पराई नइहर होई हानि-हँसाई,
सुनि के कइसे जीयत रहिहनु बाबू-भइया-माई ।
ढेर सराहल धिया चलेली डोम-खोम का घरवां,
ई बोलल आसान बहुत बा का लागत बा दमवाँ ?

केहू का दिल-दुख-दरद के ई दुनियां का जानी,
मन में जेवन आई तेवन बोली गभिया बानी ।
बाकी जे तप का चउरा पर दियवा बारत बाटे,
ऊ जानी ए तपला में ऊ का दुख आइत बाटे ।

तबहूँ लइका बुद्धी पर बा डहुरल महामुखई,
बे सोचल-समझल अनजाने करसु भलाई-बँगई ।
हमरा खोंखत ए घरवा कऽ घावति बेकति केहू,
एक-एक ले चीझ जुटा के आनत बाटे केहू ।

बाबू भइया घर-घर जोहत फिरलन लम्मा-नियरां,
कइके खोद-विनोद समुजवा अइलन एही दुवरां ।
हमरा के पहुँचवलसि एजां हमरे दाना-बानी,
संग दिहलसि बाबू कऽ दउलति-मेहनति-इज्जति-पानी ।

का कम बाटे ए घरवा में जवना खातिर हहरीं ?
घन इउलति-असबाब गँजल बा आके हमरा कगरीं ।
जेवन टांकल बा भगिया में ओके भोगल जाई,
केहू के बेकार कहल बा खल हतियार-कसाई ।

ए घरवां कऽ अनचिन्ह सांचा हमरा के अनकस बा,
तब बउराइ बहुत रगाइ के कूदत मन सरकस बा ।
अनबह लागत ए ढांचा में हम ढारव अपना के,
चाहे मन-माफिक कइ गालव गवें-गवें एकरा के ।

सात समुन्दर पार जाइजन आपन ग्रीही बनावे,
बीहड़ बन-पहाड़ में ई जन बसि के मांगुर गावे ।
हकनहाक घर इहे रही जब रोबल-धोबल तब का ?
जब अब कान गड़ाइल एँजां माथा टोबल तब का ?

अपना भागीं-भुत्ते जगके निहचे भोगल जाई,
आपनि भागि बनावे खातिर जग से जूझल जाई ।”
परल सोच-सागर में पर्वरत बहिनी रहली जहवां,
नेह-नाइ पर आके लगलन बड़ना भइया तहवां ।

उनुकरि मया छछाइलि देखत-देखत आपन भइया,
बाबू भइया भउजी कऽ बढ़ि आइलि बा तब सुधिया ।
नइहरवा का नेह-मेह में धीरज मिहिलाइल बा,
जल में वूड़ल रोवां-रोवां ठाढ़े सिहिराइल बा ।

घइके गोड़ बोड़ भइया कऽ लगली दिल से भेंटे,
जइसे गाइ-भईसि कऽ लोचर उनुका से सटि बइठे—
“का हो, भइया, अन्ते कइके काहें कइलऽ देरी ?
तुहरें बले होब रानी हम नाहीं होइव चेरी ।

बाबू का करते ब्रिटिया कऽ आगम मजिगर होला,
भइया का बाहें बहिनी कऽ इज्जति आदर होला ।
तुहने लोगन का बल से हम जीयत-जागत बानी,
तुहने लोगन का करतन हम दुनियां धांगत बानी ।

हमरा बदे भइल ना कबहूँ कतहीं काटो-काटो,
अबले हमके कहल कबो ना केहूँ ‘पीयर काटो’ ।
निलज निघरघट नटिनि निखुरखी नीच निगोड़ी बांडी,
मरकी लवनी सूअरि कुतिया नागिनि उल्लू पाड़ी ।

‘होखो झट उड़ास’ ई केहू मुहवां ले भाखल ना,
 दुहथा फेंकि-फेंकि गरिया के हमरा से बाजल ना।
 भइया ! हमरा के तूं मनलऽ सहि-सहि के हयरानी,
 इनरा ले ढोवे ना दिहलऽ एको लोटा पानी।

जवन कहलीं तेवन कइलऽ नाकर-नूकुर न कइलऽ,
 धिउ कऽ भरलि गगरियो खातिर नाहीं कबो अरुहवल।
 भइया ! तुहरा छोह-मोह हऽ तूं हउवऽ मरदाना;
 हम बेचारी ए परदा में परबस परलि जनाना।

मति विसरइहऽ आवत रहिहऽ तूं जनि दीहऽ ढबुवा,
 ना आइवऽ हमरा के मिहना मरिहन बबुई-बबुवा।
 सभ जानी नइहरवा में ई माहुर रहली हउई,
 चर्वरियाहि अमदिखनी हउई बाउर रहली हउई।

कबहू भइया भउजी से ना बइठलि इनिकरि पटरी,
 ईनिका खातिर संचलि नइखे माया-ममता गठरी।
 ई दुधवा कऽ माँछी हउ ई राखे ला एक नाहीं,
 लग्गीं सटि के बिरवे बोइहन जीए दीहन नाहीं।

नोक-जबून जवन बानी हम हउई भइया। तुहरे,
 मति भुलवइहऽ आवत रहिहऽ हरदम हमरा बुवरे।
 हमरा से हँकारि के मँगलन बाबू-दाना पानी,
 ठहर देइ के पीढ़ा घइ के दिहलीं खायक-पानी।

माताजी के मँडलीं-मिसलीं अबटन-तेल लगवली,
 खाभरि देहि ढहें जनि कतहीं खटत देखि अफनइलीं।
 माई-बाबू हमरा खातिर कइलन-धइलन का ना?
 अपना सरि-सकती ले अधिका मनलन दूनो जाना।

जब-जब उनुका छोह-मोह कऽ आवति बाटे सुधिया,
 तब-तब छतिया दरकति बाटे चूवति बाटे अँखिया।
 ए घरवा के छाड़ि-छाड़ी के भागत बाटे मनवां,
 तन गोताइल ससुरा में बा चहुँपल मन नइहरवां।

माई-बाबू जनि विसरइहन कबहूँ ए बचिया के,
 भेजि नियार तुरंते हाली बुलबइहन बछिया के ।
 बहिनी कऽ कलपल सुनि-सुनि के आल्हरमन भइया कऽ
 थाहे लागल थाह न पावे ऊ गंगा भइया कऽ ।

बहिनी के समुझवलन भइया रोकि-थाहि के सुसुकी,
 रीति-नीति-बेवहार बुझवलन छोड़ि-छाड़ि के हिचिकी ।
 बचिया, अउँजा अउँजा के जनि तन खयकार करऽ तूँ,
 सोना का सजीव मूरति के जनि इनकार करऽ तूँ ।

तनवें ले सभ घरम-करम बा बाटे सब व्यवहरवा,
 ए तनवें ले चालू बाटे दुनियाँ कऽ पयकरवा ।
 ए तनवें ले भइया-बहिनी पति-पत्नी आ माता,
 जब तन छुटिहन छन में मिटिहन जग कऽ नतुहा-नाता ।

मानुस तनवाँ नाहीं हउवे किछु माटी कऽ लोना,
 छ मन्तर से बना रहल वा ई लोहा के सोवा ।
 धरती माता का कोरा में कइ लाखन गो खेला,
 आन लोक में इहे रचाई एक-एक ले भेठा ।

बचिया ई अपने घर हउवे बेगाना जनि जानऽ,
 सभ के माई - भयवद आपन हीते-मीते मानऽ ।
 सासु-ससुर के माई-बाबू बुझि के करिहऽ सेवा,
 बे सेवा कऽ ए दुनिया में नइखे साबित भेवा ।

आपन-आन न हउवे केहू आपन हऽ व्यवहरवा,
 आपन काम बिचार करेला दुनियाँ भर के घरवा ।
 कइके नीकि कमाई बहिनी कुल उजियार करऽ तूँ,
 अपना रहमि-चालि से ससुरा के खुसहाल करऽ तूँ ।

माई-बाबू का सेवा कऽ तूँ मति करिहऽ चिन्ता,
 भीखम-सरवन कऽ करनी बा हमरा खातिर गीता ।
 तुरत बिदाई बदे विआकुल बानऽ माई बाबू,
 दिन घरवावे में जरूर हम पाइब सभ पर काबू ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१०३

कवनो कोर-कसरि ना होई ए कमवां में बचिया,
करव उधापन लाखन गो हम नाहीं सूतव खटिया।
तुहरा कबो हांक परला पर घावत आइव तुरते,
तुहरा कमवां खातिर आके जान लड़ाइव तुरते।”

बोध करवलन खूब बहिनी के दिहलन पुरहर तोहा,
जइसे प्रेम निबाहे में ऊ होखसु पोढ़ पयोहा।
ओह बहिनीअउरा ले भइया-चललन अपना गावें,
बहिनि का नेहिया कऽ बुनियां-चूवलि ठावें-ठावें।

दुलहिनि बइठलि नईहरवा कऽ इक सुरता बा सुस्ता,
आंसुन का धारा से धरती बूझलि बा दुई बिता।
आग-पाछ समझवली माई “जनि होखऽ तूं दुखिया,
जहिये चहवू तहिये भेजव नईहरवां हम, बचिया।
बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकरि-रहिया,
कले-कले ऊ आवे लागलि पजरां प्रिउ पतोहिया।

दिन बीतत बीतत दुलहिनि कऽ बीतल कई महीना,
समुरां कऽ सुर भावे लागल बाजे जइसे बीना।
बबुवा बबुई मुसुकी काटत रहि-रहि करसु टिसाई,
हंसी-खुशी से घराघरी में रंग वान्हें वरियाई।

बबुवा मुहें बिराइ के कबहूँ जव ठानसु जोकरई,
बइरहिया दुइयां में पानी पीयसु कइ-कइ नंगई।
कानाफूँपी कइ आपस में होखे गूढ़ बतकही,
तबलँ भउजी कऽ ना लउके कुसती-कोसी-ककही।

भउजी जी के छेँकि-छका के होखे हाहा-हीही,
खोदा-खोदी घींचा-घींची होखे हां-हां दी-दी।
छिउँकी कटते छन छनऽ के केहू छन भर छनगे,
जइसे पनछिउँकी का बीन्हत केहू छन भर झनके।

बबुना-बबुई फरहर रहलन बड़हँसलोर गवइया,
जान परे अँगना में चहकति बाड़ी सऽ गवरइया।
भेस बना के बबुवा कहलन—“भउजी चाही भिच्छा,
आइल तुहरा दुवरा जोगी साधू लिहले इच्छा।

“बाह, बाह रे ! साधू बाबा बाह-बाह रे जोगी !

मन ना रंगल रंगल बा कपड़ा भागु सियरबा रंगी !”

“छूँछे हाथ कबोना लवटी ई नंगेड़ भिखमंगा,
दे दऽ मोतीचूर लड़ववा ना त होइहन दंगा ।”

भउजी अँठि अँगिरा के दिहली दुइगो वड़का लड़वा,

“लऽ लऽ खूब निहाल रहऽ तूं हे लम्बोइर बबुवा ।”

ऊ गनेश जी चक्कर कटलन कतने तोर अँगनवाँ,

अपना भउजाई कऽ कइ-कइ छउकि-छउकि गुन-गनवां ।

“भउजी ! तूं वड़ सखरज वाड़ू वाड़ू अवढरदानो,
सिवि दधीच रिसि करन वीर ले वढ़ि के वाड़ू मानो ।”

बबुई भउजी से सटि-सटि के बनली उनुकर अंगे,
ऊ सचमुच सवांग बनि रहली हर मोका पर संगे ।

गर में गर मिलाई के गावसु दूना जानी कजरी,
जन-मन गउवाँ मोर बगइचां नाचें घेरे बदरी —

“हरि, हरि, अइलन जल बरसावन मास सुहावन सावन री ।

उमड़त घुमड़त आवें घुहसल आवें बदरा,

परत बा अकसवा तन करिया-करिया चदरा,

हरि, हरि, हुलसे हुलरे धरती कऽ हरियर का आंगन री ।

मोर-मोरनियां नाचि गाके मारें मटकौ,

मधवा से वाति करें मेजुका आ मेजुकी,

हरि, हरि, बाग-बगइचा ताल-तलइया सभ मनसायन री ।

खेतें-खेतें लहलहाति गावें कऽ किसनियां,

कतहीं बोवनियां बाटे कतहीं रोपनिया,

हरि, हरि, लोग मनावें नाग-पचइयां रक्षाबन्धन री ।

हरि, हरि, अइलन जल बरसावन मास सुहावन सावन री ।”

“हरि, हरि, पिया बसे परदेस ना मेजे पाती, ए हरी !

घेरति आवति, रामा, करिया बदरिया,

चमकति, लहकति, रामा, सांपिनि-बिजुरिया,

हरि, हरि, हावा बहे चउआई साले छाती, ए हरी !

सह्तारी ममता कऽ मूरति

१०५

पिउ विन नाहीं सोहे बड़की वखरिया,
पिउ विन काटे मोरि सून सेजरिया,

हरि, हरि, भइलीं हम अधजिउवा होइ बेयाती, ए हरी ।
हरि, हरि, पिषा वसे परदेश ना भेजे पाती, ए हरी ।”

दुई कंठन केऽ मिलल मीठ सुर अजगुत रस बरसावे,
गंगा-जमुना कऽ जल मिलि के तीनू ताप नसावे ।
घर-बाहर के सेंट-मेंत में मिले सुने के गाना,
मन-मन भर आनन्द मिले, ना लागे एको दाना ।

घर कऽ टहल करसु मिलि-जुलि के दूनो जानी संगे,
केहू के केहू ना अरहवे केहू नाहीं बिलगे ।
खाइल-पीयल उट्ठल-बइठल सूतल-जागल सँगहीं,
कल ना मिले कबो केहूके जाके अलगें कतहीं ।

दुइ मनवां कऽ मेल रहल ई दुधवा-मिसिरी लेखा,
दुइ कुल कऽ ई सीता रहली ना रहली सुपनेखा ।
माई का अँखिया कऽ रहली दूनोजानी पुतरी,
हरदम सुघर मंच पर फुदकतु नाचे जइसे पुतरी ।

माई बिटिया दुलहिनियाँ के देखसु एके आँखीं,
दूनों के निज जामल जानसु ना देखसु दुइ आँखीं ।
बड़ा भागि से मिलल हितू गुरु रहे सँजोग बढ़े के,
बड़ा सुतार रहे दूनो के गृह-विज्ञान पढ़े के ।

माई लूरि-सहूर सिखावसु ना सिखलावसु नँगई,
सभ्य सुसील बनावसु लायक ना बतलावसु वँगई ।
माई देसु बराबर गुरु बनि काम-धाम कऽ शिक्षा,
चेलन के गिरहत्त बनवली लेके, सही परीक्षा ।
उनुका हिय में उपजवली ऊ सुमति-जोति कऽ इच्छा,
अन्हरिया में बिचरे कऽ ना कबहू दिहली दीक्षा—

“नंगा लुच्चा भइला से ना कुल-मरजाद बढेला,
डकुहाई - सीना जोरी से ना सम्मान बढेला ।
तस्कर-चोर - घोर अपराधी ठग लुटेरा पाजी,
ई जनता के ना दे पइहन कबहू सुख समराजी ।

ई आपन घर भरिहन हरदम नाचि नचइहन सभ के,
भोग-बिलास बदे कइ दीहन छहो-छहो जग भर के ।
ना जाई दिन ढेर अमागी ऊकुरि परिहन ठाढ़े,
इहे कसाई भर मुह माटी खाके मुइहन गाढ़े ।

बाची लोग ! कुमति बड़ पापिनि ई ना जाले बिरिया,
जेके मुइलसि तेके खइलसि जिनिगी गइलि इमिरिया ।
मन लगाइ के गुन सौखड जा मति जी चोर बनऽ जा,
कुल-पलिवार समाज साजि के देस अँजोर करऽ जा ।

केहू का संगवां केहू ना ए दुनियां ले जाई,
खाली आपन कइल-करावल सभ संग ले ले जाई ।
धन-दउलति सभ कमा-धमा के कतनो राखल जाई,
मुबला पर ई कवन काम कऽ ? छूँछे जाइल जाई ।

जब करतब खराब बा आई देहि-धुना के आन्ही,
बाची लोग ! जीउ ना बाँची होई जी कऽ गान्ही ।
मारी काल महावेदरदी गर पर देके ढाठी,
थूँकी दुनियां तन कऽ सोना गलि-पचि होई माटी ।

काम करऽ जा जवना से सभ पावे रोटि - पानी,
आपन कइ कइ राढ़ बेसहिह जा जनि गृह-विज्ञानी ।”
माता जी हरतरे दिखवली ओ चेलन के दीया,
उनुका मति-धरती में बुवलीं ठोस ज्ञान कऽ बीया ।

एक-एक दिन बीते लागल बीते लागलि रतिया,
धंसति जाति दुलहिनि का दिल में माताजी क बतिया ।
बहुत दिनन ले जोहत रहली माई जेकरि रहिया,
कले-कले ऊ आवे लागलि पजरं प्रिय पतोहिया ॥



प्रह्तारी ममता कऽ मूरति

१०७

अठवीं उसाँसि

फरलि तपेसा माई जी कऽ

फरलि तपेसा माई पवली मनलाएक दुलहिनियाँ:

दुलिहिनियो सभतरे संभारसु सास-ससुर कऽ घरवा;
घाटा-नाफा कऽ ऊ लगली हरदम करे विचरवा।
राखसु पइसा कऽ हिसाब ऊ रहे तउल काँटा कऽ;
जाँगर ठेठावसु राखसु ना ऊ सउदा घाटा कऽ।

अपना काम-काज में नाहीं उनुके भइलि हिनाई;
काम करे में असकति नाहीं भइलि न रेप-ढिलाई।
ऊ बाति वेवहार करे में रहली बनि के एकता;
पालगनी चीरंजी में ना लागल उनुका भवता।

सखी सहेली जे ही आइल पीढ़ा आसन दिहली;
हुक्का-पानी देवे में ऊ उजग सदाई रहली।
आजी-काकी बूढ़-पुरनियाँ कऽ मनली बड़वरगी;
बार-बार अँचरा पसारि के ऊ कइली पालगनी।

उनुका खातिर सासु ससुर कऽ रहे बड़ा तनदेही;
उनुका रहनि चालि पर मोहल जानल देखल जेही।
जेवन आदर नइहर पवली ऊ पा गइली ससुरा;
कादों दुलहिनि कवन मोहनी लिहले अइली अचराँ।

उनुका बदे नियामति संचलि घर-घर कोना-अंतराँ;
जान परे नइहरवा उठि के आइल बाटे ससुराँ।
ससुराँ कऽ रहतबवा लागे नाहीं नेवर उनुके;
कबहूँ आवे लुगा फाटा कबहूँ जेवर उनुके।

सासु-ससुरजी लागे लगलन उनुके माई-बाबू;
कनहीं कबो सटकि ना बइठसु जइसे खब्बू-दब्बू।

महतारी ममता कऽ मूरति

ससुरी कऽ घर लागे आपन जिनिगी-गुजर-बसेरा;
 नइहर दिल-दिमाग में बइठल बनिके रैन-बसेरा ।
 बूझे लगली ए जिनिगी कऽ एजहीं गुजर-बसरवा;
 नइहरवा हमरा भइया कऽ सचमुच खाली घर बा ।

तबहूँ नइहरवा कऽ बखरी बाउरि नाहीं लागे,
 नइहर-सुख-सुतार कऽ मनवाँ जाउरि खाए लागे ।
 जब आइल नियार बइहर ले माई दिन घरववली,
 झाँपी-मोनी-बकस-मिठाई देइ बिदा कइ दिहली ।

दुलहिनि जी नइहर में अइली बनि ससुरइतिनि बेटी,
 माई - भउजी - काकी - आजी कइली भेंटा-भेंटी ।
 तिहवारन पर भेजत गइली माँ पाहुर अगरा के,
 लिखली—“तुहरा बिनु तिहवरवा माहुर लागल हमके ।

दुलहिनी ना ओंजें कऽ हउऊ हउऊ हमरो बेटी,
 हम कबहूँ ना जनलीं हउई हउऊ मेटा-मेटी ।

जब ले रहलू पान मतिन हम तुहके सेवत रहलीं,
 तुहरा जी-जाँगर खातिर हम नाहीं पलखत परलीं ।
 नइहरवा का छोह-मोह में हमके जनि बिसरइ हऽ,
 हमनी कऽ तूँ खोज-खबरिया हरदम लेते रहि हऽ ।

खभराइलि ए देहि-घजा कऽ नइखे तनिक ठिकाना,
 कादों कब ले ई आपनि बा कब होई वेगाना ।
 चाहतवानी हमरा रहते मलकाइनि तूँ हो जा,
 ठकुराइनि बरइनि सहुआइनि कऽ चिन्हार तूँ हो जा ।

भाई-भयवद दर-दमाद कऽ पूरा भेव समुझि लऽ,
 हीत-मीत अपना कुलवा कऽ देवी-देव समुझि लऽ ।
 जो दुलिहिन जी अहोभागि से हो जइतू लरकोरी,
 तऽ हमारि सभ सधिये पूजिति का तुहरा से चोरी ?

महतारी ममता कऽ मूरति

१०६

जब दिन जाई तवे धराई तू भिंगा जनि डलि हऽ,
माई-बाबू के समुझइ हऽ तू तिकड़म जनि करिहऽ ।
ए घरवा के खेवराइ के कवहूँ कल ना पड़बू,
ई कुवेर भंडार तुहें हऽ एसे फुलबू-फरबू ।

दुलहिनि, जरि तुझारि एजहीं बा सीवति रहिहऽ एके,
झूठे जनि जहँड़इहऽ जाँगर पुलुई पुलुई चढ़ि के ।
जब नियार जाई एंजाँ ले तुरत जतन करि अइहऽ,
हमरा हाँक पारि बिहला पर दुलुकत धावल अइहऽ ।

अदरावन जनि तनिक करइहऽ जिउ हमार अउँजाई,
ई मन होई थोर बहुरिया । कादों ई वउराई ।
जब ई तनवां जर-जर होई हाथ-गोड़ तू बनथू,
धुंधुआइलि अँखियन कऽ जोती टेक आड़ तू बनबू ।

ई नइहर कऽ आवाजाही नइखे नेवर हमके,
तिहवारन पर भेजत बानी कांवरि-घेवर तुहके ।
चाउर-चउरा कऽ चेसइया माद करइहन बिचड़ी,
तिजिया पर सोना कऽ भेजलि हउवे भारी सिकड़ी ।

ई दुनियां सबमुच में का हऽ हउवे आवाजाही,
केहू आवत केहू जाता होके मोही-दाही ।
बस हम एतने-चाहत बानी एजहूँ नेहू लगावऽ,
मोर बहुरिया ए समुयाँ के आपन गिही बनावऽ ।

तूहीं घर कऽ आगम बाड़ू तूहीं सही पहचवा,
चाटे एके गुहथरि कइ दऽ चाहे सरग दुलरवा ।
चाहबू घर के सरग बनइबू चहबू करबू गारत,
दुलहिनि । घर के सोगहग रखि हऽ सोगहग रखिहऽ भारत ।

दुलहिनि हम ना रोकत बानी तुझारि आवाजाही,
इहे खियाल रहे घरवा पर कबो न लागे ढाही ।”
दिन भेजाइल उहे धराइल बहू चहुँपली समुराँ,
उनुका अवते बिजुली दउरलि घरवाँ अउर दुअरवाँ ।

सुभ दिन आइल ऊ गरहुअइली हो गइली लरकोरी ।
 माई बबुआ के दुलरावसु हुलससु गावसु लोरी !
 घरवां के ना घेरे कबहूँ आ घनघोर अम्हरिया,
 जहियाले बजववली गाई सगुन फुलहिया घरिया ।

जमल रंग बनलि फुलवारो उनुकरि आपनि दुनियाँ,
 फरलि तपेसा माई पवली मन-लाएक दुलहिनियाँ ।

ऊ दिन आइल जब दुलहिनिया मलकाइनि हो गइली;
 ठकुराइनि बनियाइनि उनुसे समझे बूझे लगली ।
 समझसु-बूझसु कारबार सभ घर-भीतर बाहर कऽ;
 किछु सकारि के किछु नकारि के काम-चलावसु घर क ।

सास-ससुर कऽ राइ मानि के करति रहसु मलिकाई;
 नाहीं अइसनि नउवति आवे की केहू गभुजाई ।
 माई मुहँ लटका जढ़िया के उनुके ना उबिअवली;
 उनुका पोठीं हाथ लगवली कबहूँ हाथ बँटवली ।

माई नाती के खेलावसु कइ-कइ के झकझोरी;
 एने-ओने घुमा फिरा के गावसु लसि-लसि लोरी—
 “खेलऽ बचवा खेलऽ बाबू खेलऽ हो मोर राजा ?
 छेँच अटारी वरजा तुहके दीहन आजी-आजा ।

तुहके दूध बदे ले अइहन बाबू सुरही गइया;
 घुरुर-घुरुर दुहवऽ घुरला में घट-घुट पियबऽ भइया !
 चमचम पनही घोती गमछी कुस्ता टोपी छाता;
 रंग-बिरंगा साज-सजी हो दीहन ई सभ माता ।”

“आजी ! जब हम राजा होइब लइका मंत्री-परजा;
 तब सुराज कऽ ए घरती पर बजवाइब हम बाजा ।
 खूब बँटाई चाउर-चिउरा तिलवा ढूँढ़ा-ढूँढ़ी;
 आजी नाहों रोई-कलपी केहू बूढ़ा-बूढ़ी ।

रिरियाई ना अन-बहतर के घर-दुवार के केहू;
 पढ़ी-लिखी सभ पंडित होई मुड्ड रहीना केहू ।”
 ‘सूतऽ हो अब सूतऽ भइया ! बा कुरई में ढबुवा;
 जब जगिहऽ तब कीनि-कानि के खइहऽ घिवहा लड़वा ।

अहतारी ममता कऽ मूरति

१११

सूतऽ सूतऽ हो भइया ! हम मिठइया देइबि नऽ ।

सूते गइली थाकल चिरई,

नभले तिकवत बाड़ी तरई,

भोले ! भोरें तुहके लयनू-मलइया देइबि नऽ ।

खेलिह देइबि बाछी-बछरू,

दुवरां फुदुकी आल्हर लैरू,

दूध पीए बदे तोहरा के गइया देइबि नऽ ।

गुदुगुर लेवा भइल बिछवना,

कलहियां कीनव खूब खिलवना,

तुहके कागद कऽ सुघरि-साघरि नइया देइबि नऽ ।”

भोंससु-मांडसु तेल समावसु बबुवा का चनियां में,

ढेंढुकी दावसु नाकि उँचावसु सुख मानसु दुनियां में ।

चूमसु चुचुकारसु चुमुकारसु गुदुरावसु बबुवा के,

चिटुकी बजा-बजा के माई क्षोरसु निज मथवा के ।

फुसिला भुलवा के नाती के राखसु अपने पजरां,

दुलहिनि कऽ दुधमुहां बचनवां ना जा पावे दुवरां ।

दुलहिनि ना जानसु लड्डुका कऽ का होले गुसवारी,

अलवांवी होऊ के पहिरतु ना मइलाइलि सारी ।

काहें की माई सेवा कऽ बोझा लिहली माथे,

तिलिभर भार परे ना दिहली अलवांती का माथे ।

लरिका परकल अस आजी से उनुकर दम ना छोड़े,

दुधवा पीए खातिर खाली मां से नाता जोड़े ।

आजी कबहूँ घुघुना दिहली कबहूँ दिहली पुतरी,

कबो धरवली राम किसुन के कबो धरवली बकरी ।

नाती खातिर ढेर जुटवली आजी अजब खिलवना,

तबहूँ जो किछु कसरि जनाइलि दिहली बेना-झरना ।

महतारी ममता कऽ मूरति

माई छनभर भर ना परली दुलहिन के सम्हरली,
 कुलवारी से खिया-पिया के दुलहिनि के चमकवली ।
 चाहे कोखीं लइका आइल चाहे जामलि लइकी,
 माई एक भाव से धवली छाती तानि चकरकी ।

दुलहिनियां के चिन्ता में ऊ ना गोताए दिहली,
 आइलि भारी भीरि कबो जब अपना माथे लिहली ।
 अपना रहते माई उनुके अफसोसां ना डलली,
 एक-एक ले भाकउ सहि के गद्दी पर बइठवली ।

अपना जाने में जिनिगी में उनुके ना डहुरवली,
 उनुका मुबजे पर दुलहिनि जी ढहि परली वउरइली ।
 दुलहिनि के सम गहना-गीठो दे-देके कुलवरिया,
 माई पलिवरबा कऽ पवली सुहृदलि खेती-बरिया ।

अपना सेवा खातिर पवली रहनिहारि पदमिनियां ।
 फरलि तपेसा माई पवली मनलाएक दुलहिनियां ॥



सह्तारी ममता कऽ मूरति

११३

जउवीं उझांसि

महतारी ममता कऽ मूरति

चान-सुरुज कऽ लागलि बाटे
नभ में आवाजाही;
रतिया-दिनवाँ होत जात बा
देके सही गवाही ।

साँझि-सबेरा होत जात बा
बीतत दिवस महीना;
बीते बरिस काल कऽ बाजति
युग बदले कऽ बीना ।

पीढ़ी-पीढ़ी बीति रहलि बा
बीतत बा सठसाला;
ये बिचवें लागे केहू के
बँचसाला सठसालो ।

तबहूँ केहू का मन में ना
तन त्यागे कऽ इच्छा;
ई मुवतो प्रानी माँगत बा
ए तनवाँ कऽ भिक्षा ।

ए तनवें ले घरम-नीति बा
आपुस क बेवहरवा;
सरग-नरक क सोच इहें ले
माया कऽ पयकरवा ।

एहीले हियरा कऽ रानी
वा हियरा कऽ राजा;
एही लें सिगार-साज सभ
सगरो गाजा - बाजा ।

एही ले बा बेटा - बेटो
 भयवद - मीत - सगाई;
 गाव-देस खातिर उमगति बा
 एही ले मनुसाई ।

एही में घुसिके बइसल बा
 जित कऽ हम-हम तू-तू;
 माया कऽ बड़बिकठ पवारा
 एही ले हऽ हूँ-टूँ ।

जब सरीर सरि गलि-पचि जाई
 केकर के रहि जाई;
 उड़ते सुगना गलते पिजरा
 खाली- रही कमाई ।

नीकि कमाई खातिर जीपति
 जग कऽ बेकति बाटे;
 एकरा ले आगे बढ़ि के ना
 अउरी प्रापति बाटे ।

मानुस-तन अनमोल नियामति
 ई हऽ पुत्र कमाई;
 भूके जीव लाख चौरासी
 तब ई घरवा पाई ।

सइ बरिसन कऽ साज सजा के
 जीयत बा ई प्रानी;
 सभ जितवन ले बढ़ि के हउवे
 ई ज्ञानी - विज्ञानी ।

विश्व - सभ्यता-संस्कृति हउवे
 ए मानुस कऽ माथा;
 सगरो विश्व-पटल पर आँकलि
 एकर कीरति - गाथा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

११५

ई ना अपना महतारी कऽ
 दुधवा कबो लखाई;
 ई ना अपना बाबू जी कऽ
 नउवा कबो हँसाई ।

महतारी कऽ एकरा सिर पर
 लादल बेहद रिनबाँ;
 ओसे कबो उरिन बा होई
 ए मानुस कऽ तनवाँ ।

जब ले रहे देह में तागति
 हमरा माँ का रचिको;
 तबले हमनी का सेवा में
 नाहीं थकली तनिको ।

बाकी उनुकरि अकिल भुलाइलि
 झोलरिआइल तनबाँ;
 जिउ-जांगर ओराये लागल
 आइल चउथा पनवाँ ।

बढ़ल बुढ़ापा तन झुरियाइल
 रंग लगल पियराए;
 माई का जीवन-खेला कऽ
 अन्त लगल नियराए ।

जइसे - जइसे दिनवाँ बीते
 माई लगली थाके;
 उनुका तन बिजरा कऽ पछी
 अते लगलन झाँके ।

जे इन्द्रिन से भोगल जाला
 दुनियाँ कऽ रस गुल्ला;
 ऊ सभ भगली माई भइली
 सभ खेला में उल्ला ।

चटक-मटक खाए कऽ टिसुना
 कनमनाई जा मन में;
 घोर मसक्कति सहि सबाव कऽ
 सपना भेटसु छन में ।

पउवाँ लरखराइ जा कबहूँ
 कबहूँ आवे धुमरी;
 कबो बुझा जा अब ना बाँबी
 धोवल लुगना बिगरी ।

ठेंगुर लिहले टेकसु दुख सहि
 आपनि कांपति काया;
 तबहूँ ढोवसु निहछल दिल में
 पूत-बहूँ कऽ माया ।

नयनन से निरजस ना सुझसु
 नटखट नातिन-नाती;
 तबहूँ ढील परलि ना कबहूँ
 कसलि मोह कऽ गाँती ।

तकतिहान से तकली कहियो
 जब पलिवार - परानी,
 तब अँखिया में छलके लागल
 छल् - छल् छल् - छल् पानी ।

परल अयाहाँ सोच-सिन्धु में
 ऊ बुड़ली उतरइली,
 पुतरी मतिन बहूँ के देखत
 हियरा से गर्हुअइली ।

कहली—“दुलहिनी ए जितिगी कऽ
 नाहीं बाटे असरा,
 तबहूँ नइखे दिल ले भागत
 माया कऽ सभ नखरा ।

महतारी ममता कऽ मूरति

११७

ई तन छूटी नाता टूटी
हो जईवू अकसबआ,
कादों कहवां चलि जाई तब
तुहार सजग पहचबा ?

अब काँकरी ? बिबस हम बानी
टसकी ना ई गवना,
जाए के बा, लेके नेकी—
बदी संग में अपना ।

जहवां ले हो सकल बहुरिया !
आइ - छाहें हम कइलीं,
तुहरे कारन ए घरवा कऽ
रूप सँवारत रहलीं ।

तूँ हउऊ घरवा कऽ लछिमी
हउऊ एकर रानी,
तुहरा से बा दीया-वाती
चूल्हा - चाकी - पानी ।

तुहरे कारन डेरा - डंडा
चउचक लागल बाटे,
तुहरे करतन केहू से ना
एँजां रक - झक बाटे ।

दूनो-जूना बे झंझट कऽ
चउका बरतन होला,
घर हऽ साफ बुहारल अईसन
हँस देखि खुस होला ।

मथवा झरलू अपना हथवां
कइलू अबटन हमरा,
एतना दिन ले जीयत रहलीं
दुलहिनि, करतन तुहरा ।

जुग-जुग जीयऽ जागऽ दुलहिनि !
 रहिके तूं अहिवाती,
 दूध-पूत से भरऽ, बढ़ो ए
 कुल कऽ जन - जस थाती ।

अइसे साधि हमारि पुत्रवलू
 अइसे तुहरो पूजी,
 भउजी काकी आजी कहिके
 गउवां तुहके पूजी ।

सभ तुहार गुन सुमिरि-समुझि के
 हुलसति बाटे छाती,
 सरग सिघरतो तुहरे मारे
 दरकति बाटे छाती ।

ना हउऊ तूं मेम बिलइती
 हऊ सुदेशी धियवा,
 कइसे छोड़ीं मति बउराइलि
 बिहरत बाटे हियवा ।

सपनों में तुहरा से बिछुरल
 नइखे चाहत मनवां,
 तबहूँ मउवति कऽ फँसरी अब
 लागी हमरा गरवां ।

बाकी ना सवाद जीवन कऽ
 खटिया पर परला में,
 कवन मजा जिनिगी कऽ आई
 ए जीयते मुवला में ।

सरि-सक्ती नइखे सरोर में
 बछिया ! ई ना आंटी,
 का होई दुनियां में ढोके
 सरलि लासि कऽ माटी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

११६

जे आइल बा ते सभ जाई
छोड़ी घरबा मउजा;
केहू नाहीं कबहू पाई
तन - माटी पर कबुजा ।

जेवनि देहि पहलवानी से
कतने भीम पछारे;
तवने कहियो अपना अंग के
टसकावे में हारे ।

रोग बुढ़ापा जब ढाहेला
मउवति देले ढाठी;
परल असक्का काम न आवे
ए तनवाँ कऽ काठी ।

राजा-परजा बाभन-हरिजन
कतनो पोथी बाँची;
कतनो दावा बीरो होई
ना कलवा से बाँची ।

हमरा खातिर रोइ कलपि के
मति होइ ह बाउरि तूँ;
का पइवू जिनिगी के कइ के
अबआइलि जाउरि तूँ ।

ए तनवाँ कऽ ई गति हउवे
मुवला पर हऽ माटी;
कलवा-कुक्कुर एके खइहन
नाहीं केहू आँटो ।

साबुन-तेल लगावऽ कतनो
लसिया नाहीं गमकी;
फूली, फूटो सरिके महकी
नाकि मूँदि सभ सरकी ।

देखत कऽ भकसावन लागी
जियरा लागी भागे;
फुराइन बसात लुयड़ा, के
राखल चाही भागे ?

खाली नाम काम कऽ होले
ए दुनियाँ में चरचा;
नाहीं चाम, काम प्रिउ हउवे
ई अनुभव ना कच्चा ।

दुलहिनि बुढ़िया का सरीर में
खाली सँसिए चालू,
लुइयो उकसा ना पाई अब
ई जिनिगी कऽ घालू ।

बिघिना का निहचित बिधान के
केहू नाहीं मेंटी;
ओ कुंदार का हथवा कऽ ई
हउवे मेटा - मेटी ।

बछिया ! तुहरा वारी कऽ ई
बूढ़ि बवोरि कुम्हलाई;
का करिहत खदिया आ पानी
जब जरिया नरमाई ?"

माई का अब आन लोक कऽ
सूझे लागलि रहिया;
पूजलि अरदुमाइ बतलावे
जइसे ब्रम्हा - बहिया ।

सीति गोति दिहलसि माई के
ऊ खटिया पर परली;
धुरा - धुकुस भइल देर ले
पलकि उठलि ऊ तकली ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१२१

जान गइल सभ बाइलि बाटे
महा खफर कऽ बेला,
कवनो छन पवान कह जइहूँ
जिउ कऽ पथिक बकेला ।

घोती बाछी तुरत दियाइलि
गुच जी पवलन दछिना,
बैतरनी लाँघ कऽ बाटे
सभे जीव का टिसुना ।

माया का ए बिकठ नदी के
पार करे के बाटे,
जहुवाँ ढेर दिनन ले घरना
जीव जमबले बाटे ।

घीया - पूता - बहू - मरद - पिउ
भाई - भयवद - नाती,
देखसु माई का हियवा में
बरे नेह कऽ बाती ।

दरसन करे वदे माई कऽ
जुठलन ढेर सँघाती,
देखत अँखिया भरि-भरि आवे
निहरे लागे छाती ।

कहली—“जानें में ना कइलीं
हम केहू से मलती,
पंचो ! भूलि भइलि जो हमसे
माफ करी ई बसती ।

हम ना अनदेखाई कइलीं
हम अनभल कइलीं ना,
हम कइलीं ना बोला-बोली
हम छल-बल कइलीं ना ।

महतारी समता कऽ मूरति

पंचन का परताप पुन से
गहकलि ई फुलबारी,
रजर्वे सभ कऽ छोह-मोह हऽ
ई हमारी कुलबारी ।

हथजोरी बा ए घरवा पर
राखल जाई दाया,
पंचन में भगवान बसेलन
ई जग उनुकरि माया ।

उड़ल चहत बाटे दुनियां ले
ई तन प्रान - पखेरु,
का रोकी माया वंतरनी
का रोकी अब केहू ?

हाथ-पाव ठन्ढाए लागल
ले लिहलसि घरठा,
माई के भू सेज दिवाइलि
खटिया ले कइ हेठा ।

सभले पहिले आइलि रहली
बस्ती माँ का कोरां,
उनुका के तन देके जइहन
माई कबनो ओरां ।

पूत-पतोह कऽ मुहँ देखसु
लागे उनुके मोहर,
बंटकल रहलन प्रान घन्ट में
निकलसु नाही बाहर ।

गंगा-जल तुलसी दल लेके
छोड़े लगली चोला,
निकललि जोति आखि पथराइलि
मुनते घावल टोला ।

सहसारी ममता कऽ मूरति

१२३

रोवल-धोवल चिह्नकल मुनिके
सभकर हियवा फाटे,
धीया-पूता प्रिय दुलहिनिवा
छाती बीटे - पाटे ।

गइलि डबढबा सभकर अँखिया
जे आइल घर - दुआरी,
अँगना ओसारा में केहू
केहू रोवे कबरा ।

बूढ़ा - बूढ़ी टोला भर कऽ
बटुरइलन बखरी में,
बोध करवलन—“ऊ सभ जाई
आइल ले सउरी में ।

का करबऽ जा ए सरीर कऽ
हकनहाक ई गतिवा,
जे आइल बा ते सभ जाई
किछु दिन कऽ संगति बा ।

ई जिनगी छनभंगुर हुअवे
एकर कवन ठिकाना,
ए पानी का बुल्ला कऽ बा
कबले पानी - दाना ?

एक - एक ले आवत बाटे
एपर हावा - पानी,
तबहूँ कइते जीयत बाटे
ई छन भगुर प्रानी !

एही पर बा हुंमचा-हुंमची
मार - पीट सइतानी,
एही पर बा लूट-पाट सभ
ठगहारी - बईमानी ।

जब ले तन में तामस होला
तब ले ना किछु लउके,
ओखाढ़त मद - मातल संढ़वा.
जहवां चाहे दमके ।

जब तन खटिया पर भहराला
गलि के मांड बनेला,
केहू ना छव घुइकि कान में
भजरां बाति करेला ।

परल असक्कां मन पछताला
हिय में हूकि उठेले,
कइल करावल अधम करम कऽ
डाइनि डहकावे ले ।

जब तनवां से नाहीं होला
किछु अधरम करदानी,
उठे टीसि ना तब हियवा में
कबहू मुबता खानी ।

मन ना गले गलानि-अग्निनि में
मा मुहें तेज झवांला,
करतब का सन्तोष-सुधा से
दुख कऽ रोस बुताला ।

अइसन जिउ के याद करे सभ
नाहीं देला गारी,
अइसन जिउवन से फूलेले
दुनियां कऽ फुलवारी ।

अइसन रहली हऽ बड़लायक
ई तुहारि महतारी,
कबहू छिहू मानुस ना भइली
कइके दुनियादारी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१२५

ना रहली हऽ ईटा-पत्थल
लोहा - लकड़ - कौरा,
रहली हऽ मानुष-समाज में
गऊ हंस जा हीरा ।

खाली हाथ द्वार ले लवटल
ना कबहूँ भिखमंगा,
दाना - दूनी, ढबुआ - आना
दिहली झुंला-अंगा ।

जो छइका जवान के पबली
कबो करत भिखमंगिया,
देखत इतिकर मन मरमाइल
भीजे लागलि अँखिया ।

कहली—“बचवा, नईखे सोहति
ते सोहन के भिखमंगई,
जनि जहँड़ावऽ सऽ टुकड़न पर
ई अनमोल मरदई ।

भइया, बा अकूत बल उछलसँत
ए तुहनी का बहियां,
टुकड़ा खोरी पर ना जीए—
जागेले सिधनियां ।

डटि के षडऽ लिखऽ जा, भइया ?
खटि के करऽ कमाई,
एह गरीबी का गड़हा कऽ
भरि दऽ जा गहिराई ।”

ई ना बहली हऽ केहूँ के
देखल भूखल - नंगा,
ई सपनों में कइली नाहीं
कबहूँ गारी - गंगा ।

पानी नियर सुभाष रहल हऽ
मिसिरी मधुरी बानी,
मिहरारून में रहनि-चाल में
रहली हऽ ई रानी ।

किरिया-करम करत गइली हऽ
~~हट्टाई~~ तन लहजल हऽ नाही,
तन पर माछी बिछिलइली हऽ
कबो परल ना छाहीं ।

सरग-नरक सभ किछु एजें बा
भोगत बा ई प्राणी,
करतबवे से सभ भोगा हटि
खुसहाली — हयरानी ।

अपना करतब से पवली ई
संत मतिन मउवतिया,
इनिका जीवन में ना आइलि
रकटे कऽ मउवतिया ।

का पछतावा बा दिन पूजल
दुनियां ले जब गइली ?
कइके काम कमा के नउवां
अजर अमर हो गइली ।

कबले परल रही ई माटी
दाह - प्रवाह करऽ जा,
जीवन जग-व्यवहार बनल बा
आगे करऽ घरऽ जा ।

कहियो सभका ए तनवां कऽ
ई माटी भिहलाई,
जीवन एमे जोति छिपलि बा
ऊ तऽ कतो पराई ।

बहतारी ममता कऽ मूरति

१३७

लखिया से ना कबो भइलि हऽ
हरिखां बाहे यारी,
अंगा - लाभ करावे खातिर
कइ हऽ जा तइयारी।”

मृतक-देहि में किछु जानी मिलि
बिउवा तुरत लगवली,
दुलहिनि जी माई कऽ तनवां
छुइ-छुइके सुसुकइली।

नहवा के तन पोंछि-पाँछि के
बिहिटी बान्हलि गइली,
हरियर हरियर बाँस कटा के
टिकठी साललि गइली।

टिकठी पर ऊ लासि घराइति
कइ - कइ करमट हाली,
हाथ लगावत रहलन ओमे
भाई - भयबद खाली।

कफन ओढ़ि के माई सुतली
महानीनि का कोरा,
बचवा दुलहिनि धूबां होके
तिकवसु उनुका ओरां।

जब अंगना ने भरथी उठि के
आइलि बाहर दुमरा,
छतिया पीटसु फूटि-फूटि के
रोवसु दुलहिनि कवरा।

सगरो घरवा सुसुके बिलखे
सुनि-सुनि छतिया फाटे,
हमरा के ऊ हमरे घरवा
दउरि हबकि के काटे।

बारि जना भिळि तुरत सठकलन
 कांहा लिहलन भरथी,
 पछिया लिहलन भाई-भयवद
 बांहन - नाऊ - साधी—

“बाली साननाम सत हुउवे
 बाकी जपत इमिरिबा,
 भजु मन राम इहे गति समकर
 गोरख - धन्वा निरिबा।”

भरथी जंग दुनियाँ ले उदसल
 भरथी के सज ठोवे,
 रहि-रहि बोले—“राम नाम सत
 समकर ई नति हुउवे।”

पहिजे सेवा में हम रहलीं
 भरथी के कम्बुअवने,
 सरघा कऽ ऊ मूरति नाहीं
 मन ले उतरलि जब से।

हम कतनो मन के समुझाई
 मनवां नाहीं माने,
 करिबा के ई विलखे लागे
 छतिया लागे खाने।

पिण्डा दिहल गइल सब-याने
 पिण्ड दिवाइल द्वारे,
 पिण्डा दिहल गइल रहिया में
 जम हुतन का मारे।

चकत-चलावत भरथी चहुंपलि
 माँ गंगाँ का तीरे,
 माता कऽ जपजोष नसावन
 जलवा लागे लहरे।

महतारी ममता कऽ मूरति

१२६

जेकर दरस-परस-मंजन कइ
उधरेलन सभ प्राणी,
भाव - भगति का ओ गंगा के
याहसु किछु-किछु ज्ञानी ।

पंडीजी पिम्हा दिमाइके
करमट कइलन पूरा,
पीपर-आम-चनन-कठियन से
बनल चिता कऽ चउरा ।

चितवा मध्ये लासि धराइलि
मुहें दियाइल लुक्का;
बरलि चिता तन-रूपन सहलखि
बिकठ लवरि कऽ झोंका ।

सभका देखत-देखत ऊ तन
जरि के भइलन राखी;
अइसन के बा आइल जग में
जे सरीर के राखी ।

ए तनवें ले काबम बानऽ
बाबू - भाई - चाची;
ए तनवें ले भाई - बहिनी
दुलहिनि बचवा - बाची ।

^{रघु}
सिखवलीं जा बहववलीं जा
राखी गंगा जल में;
देत तिलांजलि नाता टूटल
ओ सरीर से पल में ।

जग-प्रवाह में बहल जा रहल
बानऽ सगरो प्राणी;
कबले जइहन कहाँ जइहन
ई अनजान कहानी ।

बाबू दिहलन दागि स्राघ कऽ
 कइलन पुरहरि किरिया;
 भागि बनावे वाली माई
 रहली भगिगर तिरिया ।

घन्ट बम्हवलन पानी-पिन्डा
 रोज दिअवलन पांडे;
 हमके नाहीं कबी लउकली
 माइ परगट आहें ।

गसल पुरान बैवाइल जमिके
 बटुरल टोल-मुहला;
 मन का खूँटे का गँठिअवलसि
 जानसु एके अल्ला ।

दस गातर बिरखोद कराके
 भइल एकादस पूरा;
 पीके त्याग महा ब्राह्मनजी
 टरलन दुख कऽ घूरा;

बारहवाँ के स्राघ भोज में
 खइलन बम्हन-हितवा;
 भाई - भयवद सभे समंगर
 पवनी - पँजहर - मितवा ।

खइलन सुपच भइल परिपूरन
 जेवन काम अधूरा;
 बिखराइल समाज बटुराइल
 एक जगहि पर पूरा ।

एक पाति में सभ मानुस के
 राखे कऽ करदानी,
 करत-घरत आवत जुग-जुग ले
 पडित - रिसि - मुनि जानी ।

महंतारी ममता कऽ मूरति

१३१

जे तनबा ले ई तन जामल
 उहे बिलाइल कहवा,
 जे दीया ई दीया बरलसि
 ऊ हेराइल कहवा ?

जेकर स्नेह - सुधा - रस पीके
 बज्जर भइलन हड़वा,
 जेकर दया - मया का बल से
 ई त्रित भइल पहड़वा ।

सावन - मेह नेह कऽ माई
 संतति जिया जुड़वली,
 अपवे ताप उठवली, पलली
 हमके ना डहकवछी ।

महतारी ममता कऽ मूरति
 तप कऽ काथा - कहनी,
 जेकरा हियरा माथा होई
 बूझी इनिफरि करनी ।



दसवीं उसाँसि

अँखियाँ रखलू कतना पानी ?

हमना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ।

रहलू अपना माई बाबू का अँखिया कऽ पुतरी,
उनुकर छोह-मोह लेइ के तूँ अइलू हमरा बखरी;
कनिषा बनि के अइलू भइलू हमरा मन कऽ रानी ।
हमना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ॥

माँसिल कद सुकुबार गोर तन करे प्रकाश हिया कऽ,
घर-आंगन मनसायन लागे लहकति डेमि दिया कऽ;
तूँ सभ का अँखिया में बसलू बन रुपवा क रानी ।
हम ना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ॥

भइल सग तब रहे लइकई इक सँग चढ़लि जवानी,
दम्पति-जीवन जिम्मेवारी लिहलीं दूनो परानी;
आइलि भीरि कपारें हमरा हरि लिहलू हलकानी ।
हमना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ॥

अइलू घरम क पतिनी बनि के बनि गइलू महतारी,
कुलिह पलिवार सम्हरलू लिहले मथवाँ लज्जा-सारी;
दूनो कुल कऽ सान बढवलू गृह लछिमी महरानी ।
हमना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ॥

सासु-ससुर का सोझाँ ^नमाहीं तरले ऊपर भूँडीं,
कबहूँ नाहीं कइलू उनुकरि सुहगनि बतिया भूँडी;
सहि लऽ ताब क्षनकि ना बोलऽ कबहूँ करठि बानी ।
हम ना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ॥

हमरे तन के तनवाँ जनलू हमरे मन के मनवाँ,
हमरा के सोभाग्य बनललू जनलू हई परनवाँ;
आपन खून पसेना कइलू हमरा खातिर पानी ।
हम ना जनली अपना अँखियाँ रखलू कतना पानी ।

महतारी ममता कऽ मूरति

१३३

हमरा के तू सरबस जनलू मनलू जीवन-राजा,
 सहि-सहि लाख मसकति दिहलू भोजन टटका-ताजा;
 जवे थकल-खेदाइल अइलीं दिहलू मिट्ठा पानी ।
 हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

रतिया में सूते का बेरां तू गरमाहे दुधवां,
 दिहलू जिनिगी भर हमरा के सोचि-समझि के दावा;
 पलखत ना परलू हमरा के जनलू दइब-परानी ।
 हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

जाड़ा में तू सोंठि हरदिया कूँचऽ खानऽ भूँजऽ,
 चीनी-घीउ मिला के लडुवा बान्हे में तू जूझऽ;
 हमरा के दऽ इहे पुस्टई सांझि सबेरे खानी ।
 हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

अवैरा कऽ मिठकी चटनी ना चवन परास बनवलू,
 समे-समे पर हमरा के ओकर जलपान करवलू;
 खटि-मरि के देते गइलू हमरा के पोढ़ि जवानी ।
 हमना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

जब हम अनमनाह हो जाईं तू हो जा अधिजिउबा,
 कइ दावा-वीरो हमरा तू मेटऽ आपन घउवा;
 कतने मान-मनउती कइ दऽ पूजऽ सम्भु-भवानी ।
 हमना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

तन अलसा जा, मछिधम परिजा कर्म-यज्ञ क स्वाहा,
 तब हमरा के कबो बनावऽ फँकी चाहे कार्हा;
 कबहूँ नाहीं असकति अइलू सहि के पथल-पानी ।
 हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

जब हम गइलीं कासी पटना चाहे राजस्थनवां,
 तब हमरा के पछिअवले जा तुहार बाउर मनवां;
 छौंछियात तू घर में घुमऽ जस मछरी बे पानी ।
 हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

जिनिगी भर उपवास-तीज-व्रत तू करते रहि गइलू,
 अहिवाती जिनिगी खातिर बहुते उध्वापन कइलू;

हमरे जीवन-सुख बचाव में तुहके लउकलि चानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

तू अपना बचियन-बच्चा के जीवन कऽ फल जन लू,

उनुके पासे-पोसे-सेवे में तन सुघर गलबलू;

उनुका बदे गवावति गइलू तू अनमोल जवानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

लइकी गइली अपना ससुरा सुधि ना तुहें भुलाइलि,

उनुकरि सुरति-सुमिरते तोहरि सुरतिया मस आइलि;

उनुकरि फिकिरि करति गइलू भरि-भरि अँखियां में पानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

सोचऽ —कुल कऽ नाव चलिइहन हमार बचवा भइया,

सुतलन कछु ना खइलन पियलन ई हो जइहन पइया;

कोई टोई जगवलू कहलू-बचवा, ई नाशानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

दिहलू गरम-गरम रोटी तू दिहलू छोकलि दलिया,

आलू गोभी कऽ उमराहे तू दिहलू तरकरिया;

दिहलू अक्टल गरम दूध सिक्कमभर सोवत खानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

बचवा का रुचेला बोजा बारा बना खियवलू,

बचवा का भावेला पूवा पूवा पका खियवलू;

परे भार बिखकबो न बोऽ बोलऽ अमिरित बानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

पढ़े-लिखे खातिर जब बचवा अते जाके ठहरे,

तब टेंगाइ जा प्राण अघर में तुहार हियरा बिहरे;

राहि निहारत दिनवां बितवऽ बनलि रहे हयरानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

बचवा का नेवरतीं खर ले खऽर जिउतिया भुखलू,

भूखि-प्यासि का घोर अगिनि में बत्तीस घंटा तपलू;

चहलू बचवा जुग-जुग जीवसु होके बोड़ गियानी ।

हम ना जनली अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

अपना दिन-चर्या के नाहीं तूं दिहलू पूनहिहि,
जबले बचवा कऽ वैश्वानर नाहीं पवलन आहुति;
बचवा का जुठकी थरियां में पीयऽ तृप्ति क पानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

हमरा ले पहिले सपनों में कबो किछू ना खइलू,
भरि के पेट बचा-बचियन क बचल-खुचल तूं चखलू;
हमनी बदे स्वाद जिनिगी कऽ तूं कइलू कुरबानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

चाहे आधी राति अन्हरिया दुपहरिया तिजहरिया,
जब-जब पाहुन आइ बइठलन हमरो एहि दुहरिया,
तुरत बनवलू भोवन उमदा कबो न आनाकानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

पवनी-पँजहर पास-पड़ोसिनि से कइलू ना झगरा,
दर-देयादिन से कबहूँ ना अँकल तुहार बखरा,
तुहरा से ना सरबर कइलन एको जाना-जानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

गिरहत्ती सरजाम सभे किछू चूल्हा-सीलि जुठवलू,
अन्न-वस्त्र के सँचि-सहेजि के जुटा-जुहा के धयलू,
बिहुतुर होखे नाहीं दिहलू घर कऽ कउड़ी कानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

गोरस खूब खियवलू-खइलू कबहूँ परल न ठाला,
जोरन डाले, दही जमावे में तूं रहलू आला,
जब ना रहलीं गो माता के दिहलू लेहन-पानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

खुटुर-पुटुर करते रहि जा नियरा जा आधी रतिया,
जाड़ा-पाला-धुपकाला चाहे होखो बरसतिया,
तुहार तन-मन नाहीं दलकल थाकल हावा-पानी ।
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

भूत-प्रेत कऽ भय ना खइलू टरलू बीछी-फीरा,
काम परल ना हिम्मत हरलसि कबो तोहार हियरा,

साँचो कऽ तूँ गउरी रहलू मिहरारू मरदानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

लाजि-बीजि कऽ देवी रहलू तूँ सतवन्ती नारी,

जिनिगी भर पहिरति रहि गइलू मरजादा कऽ सारी,

तूँ तऽ रखलू बाप-ससुर-कुल का पगरी कऽ पानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

तूँ सदेह सुघराई रहलू दया-मया कऽ मूरति,

नावै-रूप से रामा रहलू तूँ सेवा कऽ सूरति,

मुबलो पर ना लउकल उतरल तुहरा मुहँ कऽ पानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

तूँ जनमवलू अजिता गीता छुटकी-बड़की मुनियां

अपना कोखीं बच्चा के देखवलू माया दुनियां,

काहँ सँझिया कऽ हमरा से कइ लिहलू तूँ कानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

का ले तुहँ मनाई ? बोलऽ, टूट गइलदिल-दरपन,

महतारी ममता कऽ मूरति भावे तुहँ समरपन,

हे देवी ! तूँ माफी दीहऽ जो कइली नादानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

हमरा सँगवें सँगवें ठनलू ई माया कऽ खेला,

कबहूँ नाहीं कतहीं भइलू तनिको-मनिको उल्ला,

काहँ भवँकियाइ के गइलू पहिले रामा रानी ।

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

ई नसहा संसार बराबर केहू नाहीं खेली,

सभकर कान पकड़ि के कलवा पारा-पारी ठेली,

इहे जग कऽ रीति बतावति चलि गइलू कल्यानी !

हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥

धर्म्य धर्म पत्नी तूँ रहलू परम पूज्य महतारी,

सती साध्वी सोता रहलू तूँ पतिबरता नारी,

पत्नी बनलू माता भइलू रहलू फुलवा रानी ।

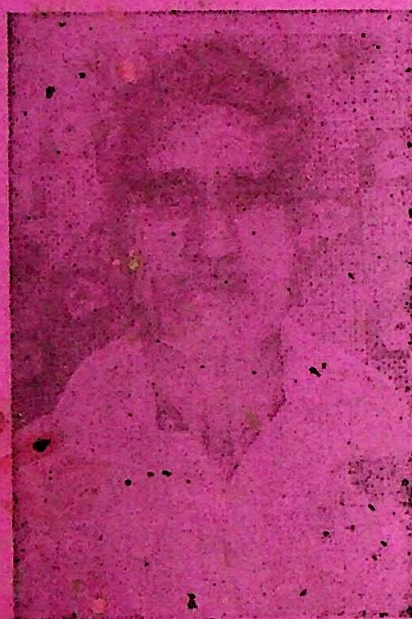
हम ना जनलीं अपना अँखियां रखलू कतना पानी ॥



महतारी ममता कऽ मूरति

१३७

प्राध्यापक अचल



जन्म १९२३ ई० रेवतीपुर, गाजीपुर । शिक्षा प्रारम्भिक अपने गाँव पर
एम० ए० (आगरा तथा गोरखपुर विश्व विद्यालय) साहित्य-रत्न (हिन्दी
साहित्य-सम्मेलन प्रभाग) तथा हिन्दी प्रभाकर (पंजाब) ।

सन् १९५० से सन् १९८५ तक इण्टर कॉलेज मुद्रम्पदाबाद में अध्यापन ।

रचनाएँ :—

बड़ी बोली—बुग-प्रदीप, सोमद्व, गणेश (काव्य), विधाता की मूर्तें
(कहानी संग्रह), क्रांतिकारी कबीर, प्रकृति-पुनर्लिंग,
नन्दन पन्त, तथा अप्रकाशित 'महाकवि हृदयेश और
उनकी काव्य-चेतना' (आलोचना) ।

गोखपुरी—माया मिललि न राम, को बड़ छोड़ कहन अपराध, मुग्ध
काका, तथा अप्रकाशित 'जिनिगी का जादू' (कथा-साहित्य
कारी लउरिया चितकान्ति की (कलित निबन्ध-संग्रह
बहुतारी समता का मूर्त) ।